॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

परम पवित्र श्रीफलोधीतीर्थपर ता. २५ और २६ सेप्टम्बर सन् १९०२ इस्वीको

भरीहुई

श्वेताम्बरीय प्रथम जैन कॉन्फरन्सकी

रिपोर्ट.

जिसको

जयपुरनिवासी गुलाबचंद ढढ्ढा जनरल सेक्रेटेरी

जैन श्वे. कॉन्फरन्सने तयार करके

बम्बईमें

"निर्णयसागर प्रेस" में छपाके प्रकट की

संवत् १९६२ इ. स. १९०६

प्रथमावृत्ति

मूल्य १० आने

अनुक्रमणिका

। रिपोर्ट प्रथम भाग ।

(प्रीलीमिनैरी)

(रिपोर्ट द्वितीय भाग)

कॉन्फरन्सकी काररवाई.

(कॉन्फरन्सकी पहली बैठक पृष्ठ २-२५)

(प्रथम भाग)

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
५	४	मी	भी
,,	६	मुर्शिनाद	मुर्शिदाबाद
९	१९	सभोके	सभाके
१६	२०	अज	अरज
१८	१०	उयदा	आयदा
२०	९	उस कि	उस के
२९	३	असामी	आसामी
,,	६	भडागतिया	भडगतिया
३०	१	असामी	आसामी
३६	१५	केसरीमनजी	केसरीमलजी
४९	१८	घोलकर	घोलका
५३	१०	परख	पारख
,,	१३	अमरचप	अमरचद
,,	१८	माणलाल	माणकलाल
५६	६	फी गर्ड	की गई
५७	१३	मिलेवे,	मिले, वे
६२	१५	कलकलकत्ता	कलकत्ता
६४	१९	काम	कोम
७१	३४	१० कि	१० के

(द्वितीय भाग)

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१	२९	सेक्रेरेटेरीके	सेक्रेटेरीके
३	१५	शफ	शह्र (श)
,,	,,	पडा	पड
१४	१९	काठियवाउ	काठियावाड
१५	१३	फल्न	कच्छ
२३	२६	ध्दष्टी	दृष्टी
२४	२७	अपनो	अपना
२७	२५	जगँहमें	जगँह मे
२८	१३	चूकिउ न	चूकि उन
३१	२१	र्गार	गार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
३२	१४	रजपुतानामां	राजपुतानामां
४२	५	जनमंदिरोनो	जैनमंदिरोनो
४५	१७	सुवसूरती	खूबसूरती
,,	१८	रक्का	रक्खा
,,	२९	दररकस्त	दरख्वास्त
४६	२५	करनेवालेका	करनेवालेको
४८	१३	शक्य	शक्या
५२	८	इन्नजाम	इन्तजाम
५३	२८	वह्नी	वमी
५४	१	देख्वा	देखी
५८	२०	सम्य क्त्व	सम्यक्त्व
,,	२२	मूर्ख कसा	मुर्ख का
५९	१	वराधक	विराधक
६०	१०	वैष्णावोंके	वैष्णवोंके
६१	९	मरणोके	मरणेके
६६	१३	वक्लि	वह्कि
७१	१४	दरख्वास	दरख्वास्त
		(उेसवाल वंशोत्पत्तिपत्रम्)	
४	२६	वेटेमेंसे	वेटोंमेंसे
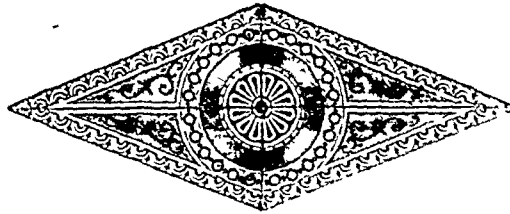
Correction Slip of the First Conference Report

Part	Page	Line	For	Read
I	42	20	Amgaou	Amgaon
"	43	25	Bndnoor	Budnoor
"	65	1	re-	re
"	"	7	Shrine	Shrines
"	69	9	Destort	Destroy
"	"	29	every	Very
"	73	6	Chatoorbedh	Chatoorbudh
"	"	27	Jolting	Jotting
"	74	5	kindness remembering	kindness in remembering
II	5	17 18	Hope &c	Hope deferred maketh the heart sick but when it cometh it is a tree of life
	12	7	Harf	Half
		8	Mercantl	Mercantil

॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री फलोधी तीर्थभूमीपर मिली हुई प्रथम जैन (श्वेताम्बर) कान्फरेन्सकी

रिपोर्ट.

प्रथम भाग.

प्रीलीमिनैरी

१ जनरल सेक्रेटरीके तालीमी खयालात.

महाराजाधिराज श्री सवाई रामसिंहजीने जयपुरकी प्रजाको विद्यादान देनेकी गरजसे "महाराजा कालेज" नामका एक अच्छा मदरसा कायम किया उसमें दो बातें मुख्य रक्खी गई थीं, एक तो यह कि, धर्मविरुद्ध कोई बात नहीं होने पावे। दूसरी यह कि विद्यार्थियोंको बोलनेका हौंसला ठीक हो जावे। और इसमें एक साप्ताहिक क्लब (सभा) भी होता था. इतनी एहतियातीपर भी जो बातें कि अंगरेजोंके खयालातके मुवाफिक पढनेकी किताबोंमें लिखी हुईथीं उनके पढनेसे उनका असर विद्यार्थियोंके कोमल दिमागपर जुरूर पड़ता था, और घरमें स्वधर्मशिक्षा न होनेसे बहुधा करके विद्यार्थियोंके खयालात बदलनेका मौका भी मिलता था परंतु इस कान्फरेन्सके जनरल सेक्रेटरीको अपनी मातुश्रीकी तरफसे हरवक्त स्वधर्मकी शिक्षा मिलती रहनेसे विद्याध्ययनके साथ अपने स्वधर्मसे अरुचि नहीं हुई, बल्कि दो प्रतिपक्षी बातोंके श्रवण करनेसे एक किस्मकी खयालाती लड़ाई चलतीथी, वह लड़ाई उस वक्ततक रही कि, जबतक ऊंचे दरजेकी शिक्षा प्राप्त नहीं हुई उसके पीछे स्वधर्मकी तरफ जैसीकि तवज्जह चाहिये जुहूरमें आई क्लबके जारी रहनेसे हफ्तेवार बात चीत करनेका, और परस्पर खयालातके प्रकट करनेका, और बहस करके मामलातकी असलियत पैदा करनेका मौका मिलता था उसी वक्तसे यह खयाल दिलमें पैदा हुआ कि जब जुदी जुदी कौम और मजहबके आदमी भ्रातृभावके साथ एक जगह इकठे होकर हरबातकी द-

लील तकरीर करके उन्नति करनेपर कमर बांधते हैं, तो क्या अपनी जाति और धर्मके मनुष्य इकठे होकर स्वधर्मकी तरक्की और जातिका प्रबन्ध नहीं कर सकते हैं? यह खयाल दिन बदिन पुष्टी पाता रहा; परंतु इस खयालका पार पड़ना सहज बात नहीं थी.

२ अपर और लोअर इंडियापर नजर.

उत्तरीय हिंदुस्थानकी तरफ नजर डाली गई तो जल्द चाहा हुआ मामला सिद्ध होनेका कोई मोका नहीं पाया, और जैसे दूरसे एक चीज प्यारी मालुम होती है, वैसे दक्षिण हिंदकी तरफ चाहा हुआ काम पार पड़नेका खयाल दोड़ा. परंतु जब श्रीसिद्धगिरीकी यात्रानिमित्त गुजरात काठियावाड़की तरफ प्रथम गमन हुआ, तो वहांभी प्रायःकरके वह ही रंग देखा, कि जिससे डरकर जिधर याने लोअर इन्डियामें ओट लेना चाहते थे. वहांपर भी खास तीर्थभूमीपर ऐसी बातें देखनेमें आई कि जिनका सुधारा निहायत जुरूरी समझा गया. परंतु बलका काम कलसे नहीं हो सकता था, और बलकी सहायता मिलना, यह एक असंभव काम मालुम होताथा; क्योंकि इस बलकी सहायता हर खास व आमको नहीं मिल सकती है. और यह बात कुदरती है कि, वृद्धको बालककी अक्ल पसंद नहीं आसकती है. धनाढ्यको गरीबकी अक्ल पसंद नहीं आ सकती है; इस लिये दिल ही दिलमें पश्चात्ताप रहने लगा.

३ श्री जैनधर्मप्रकाशमें जैनकांग्रेसपर लेख.

आखिरकार जिधरकी तरफसे सुधारेकी उम्मेद की जाती थी उधरसे खुशबोदार हवा आई, अर्थात् भावनगर (काठियावाड़) के श्री जैनधर्मप्रकाश पत्रके विख्यात संपादक शेठ कुंवरजी आणंदजीने अपने पत्रके पुस्तक ८ अंक ७ सन् १८९२ में उस विचारको प्रकट किया कि, जिसका खयाल बहुत दिनोंसे हमारे दिलमें चल रहा था. “जैनकांग्रेस भरवानी जुरूर” नामके आर्टिकलमें उन्होंने “जैनसमुदायकी एक मोटी सभा साल दरसाल इकठी होकर जात्युन्नति, और धर्मोन्नति करे” इस बातकी आवश्यकता भलीप्रकारसे दिखलाई. और पाठक वर्गको यह सूचना भी दी कि, इस विषयपर जो जो लेख आवेंगे, उनको इस पत्रमें प्रकट किये

जावेंगे परंतु उसके पीछे थोड़े दिनोतक इस पत्रमे इस मजमूनका लेख छपा हुआ देखनेमे नहीं आया उस वक्त जो अन्य जैनपत्र थे, उन्होंने इस विषयको हातमे लेकर चर्चा चलाई, परतु जिस उमंगके साथ कि चर्चा उठाई गई थी उस मुवाफिक जैनसमुदायकी जाग्रतदशा देखनेमें नहीं आई और हमभी इस कारवाईको वहुत फिकर और प्रीतिके साथ, नोट करते रहे. और अनुकूल समयपर इस कारवाईके नतीजेका आधार रक्खा.

४ कांग्रेस इकठी करनेका ठहराव.

आखिरकार कार्तिकसुदि १५ सम्वत् १९५० मुताविक सन् १८९३को भावनगरकी श्री जैनधर्मप्रसारक सभाकी तरफसे श्री पालीताणामे यात्रियोमे ५००० छपे हुए हेंडबिल तकसीम किये गये जिनमें पांच वातोंकी सूचना दी गईथी, उन पांचमे पांचवी सूचना जैन समुदायकी महासभा इकठी करनेकी थी इस सूचनापर दूसरे दिन यात्रियोंका मीटिंग होकर (चूकि श्री आणदजी कल्याणजीकी मुख्य पढ़ेडी अहमदावादमे है. और धर्मकार्यमें अग्रेसरी अहमदावादके सुप्रसिद्ध शेठलोग हैं) मार्गशीर्ष वदि १३ हिंदुस्थानीको कांग्रेसके भरनेके पहले प्रीलीमिनेरी सभाका भरना करार पाया, और देश परदेशके चद सद्गृहस्थोंने उस वक्त अहमदावादमे हाजर होनेका इकरार किया चुनाचे नगरशेठके वगलेपर मार्गशीर्ष वदि १४ अमावस्या और मार्गशीर्ष सुदि २ को सभा होकर वहुतसी वातोपर मसलन रखोया, टीप वगेरहपर विवेचन होकर यह ठहराव हुआ कि गुडफ्राइडे (Good Friday) के आसपास आणदजी कल्याणजीके ट्रस्टियोंको आमंत्रण करके बुलाना और मुख्य मुख्य सद्गृहस्थोंकोभी इस मोकेपर बुलाकर जैनसमुदायकी एक मोटी सभा इकठी करनी कि, जिसमें अलावा पेशहोने हिसाव आनंदजी कल्याणजीके और और सुधारेकी वातोंपरभी गोर किया जावे इस सभाकी कारवाईका वृत्तांत श्री जैनधर्मप्रकाशक पत्रके पुस्तक ९ अक ९ से मालुम होसकता है. इस समयपर शेठ वीरचदजी दीपचदजी मुबईनिवासीने वाहरसे आये

[१] आणदजी कल्याणजी उस कारखानेका नाम है कि, जिसकी देखरेखसे आमद खर्च वगेरह श्री सिद्धाचलजी तीर्थका होता है

हुये श्रावकोंको अपने अहमदावादके घरमें ठहराकर अपनी तरफसेही उनकी भोजनसेवा वगैरह बहुत भक्तिसे की थी.

५. कांग्रेसके समय अहमदाबादवालोंकी स्वामिभक्ति.

सभाके मिलनेका वक्त मुकर्रर करके आणंदजी कल्याणजी के ट्रष्टियों-के अलावा, करीब ९० गांव के ३५० गृहस्थोंको आमंत्रण भेजा गया था. और सभाके दिन नजदीक आनेपर बहुतसे तार भी भेजे गये थे. सभा फागण सुदि १२–१३–१४–१५ संवत् १९५०; मुताबिक तारीख १८–१९–२०–२१ मार्च सन् १८९३ ई० चार दिन तक नगर शेठ अहमदावाद के बंगलेपर भरी. उस समय बाहर गांव के २३ गावोंमें से ६२ गृहस्थ आये थे; बाकी सब गृहस्थ अहमदावादके मिलाकर रोजमर्रा सभा में करीब २००० मनुष्य इकठे होते थे. इस समय अपर इंडिया-मेंसे सिर्फ जयपुरसे लखमीचंदजी ढढा, और में गुलाबचंद ढढा गया था; बाकी सब गृहस्थ जो हाजर हुए,वे लोअर इंडियाके थे. अहमदावाद-के रईस जैनी श्रावकोंने अपने पाहुणों की आगत स्वागत बहुत अच्छी तरहपर करी. सब को एक जगह ठहराया, एक जगह खानेपीनेका इंतजाम किया, सब के लिये बग्गी वगैरह हरवक्त मोजूद रहती थी. स्टेशनपर बाहर गांव से आनेवाले गृहस्थों को लेने के लिये अहमदाबाद के आगेवान गृहस्थ स्टेनटाईमपर मोजूद रह कर किसी तरह की तकलीफ नहीं पाने देते थे, जिस तरह से कि समझदार जैनियोंमें विवाहके समय कन्याका पिता वरके पिता की कोथली का मुंह बांध कर, तोरण वगैरहके वक्त उस का एक पैसा भी नही खरचाते, वैसे ही अहमदावाद के श्रावकोंने अपने पाहुणोंके मनीबेग MONEYBAG का मुंह बंध कर के उन का एक पैसा खर्च नहीं होने दिया. स्वामीभक्ति बहुत ही अच्छी करी. यहांतक कि अपने नोंकरो तकको भी सख्त हिदायत करदी थी कि, पाहुणोंका कोई पैसा खर्च न होने पावै–

६ कांग्रेसके ठहराव.

उस वक्त की चार दिन की सभा में आणंदजी कल्याणजीका हिसाब पेश होने के अलावा नीचे मुजब मुख्य मुख्य ठहराव पास हुए थे–

१ ठापरीश्राली पांजरापोल में एक वैटेरीनरी सरजन (VETERENA-RY SURGEON) रखना चाहिये

२– ठापरीश्राली पांजरापोल संवधी जो पहले घर ठीठ रु १ से रु.५ तक लेना करार दिया गया है, उसको यह सन्ना मी मजूर करती हे.

३ रखोयाटीप उत्साहपूर्वक जराई जावे

४ मुर्शिवाद निवासी वावू लक्ष्मीपतिसिंहजी तथा वावू धनपतिसिंहजी में जो सिद्धाचलजीका रुपया वाकी है, उसके वसूल करनेके लिये कमीटी मुकर्रर की जाकर रुपया वसूल किया जावे

५ पालीताणाकी धर्मशालावालोने जो यात्रियोंसे अमुक रकम लेकर उतारनेका धारा चलाया है, वह वद किया जावे

६ जीर्णमंदिरोका उद्धार कराया जावे

७ तीर्थोका वहीवट ठीक तोरपर चलानेका इंतजाम किया जावे

८ गुरु हेमचंदजी खरतर गछवालोने जो खरतरवसीमे गरूबड़ मचा रक्खी है उसका प्रवंध किया जावे

९ पालीताणाके वारोटलोगोंने जो आसातना और अकृचल प्रचलित कर रक्खी है, उसका इंतजाम किया जावे

१० ज्ञानउद्धार किया जावे, और पुस्तकोद्धार किया जावे.

११ दूसरी जैनकांग्रेस मुंवईमें इकट्ठी होवे

इत्यादि वहुतसी वातोकी चर्चा चार दिनतक इस प्रथम जैनसमुदायकी महासन्नामे हुई कि जिससे इस सन्नाकी काररवाईको देखकर सव सज्जनोके दिल तृप्त होगये थे और यह ही आशा हो गई थी कि, अव जैनकोमका सुधारा वहुत नजदीक है

७ सन्नाके नामपर वहस और निर्णय.

इस सन्नाका नाम "जैनकांग्रेस" रक्खा जावे या नहीं, इस वातपर वहुत वहस हुई, और वादानुवाद होनेपर आखिरकार यह वात करार पाई कि, इस सन्नाका नाम "जैनसमुदायकी मोटी सन्ना" रक्खा जावे अगरचे सन्नाकी चोथे दिनकी वैठकमें यह विचार हुआ, परंतु शेठ लालनाई दलपतनाईने इस सन्नाकी काररवाईको रोजमर्रहतारके जरियेसे

मुंबईके प्रसिद्ध अखबारोंमें फर्स्ट जैनकांग्रेस के नामसे छपाया इसलिये उसवक्त हाजर हुए गृहस्थ इस सभाको किसी भी नामसे प्रकट करें. अन्य मनुष्योंमें तो यह सभा जैनकांग्रेस के नामसे ही प्रसिद्ध हुई.

इस महासभाका मुफस्सिल हाल श्री जैनधर्मप्रकाशके पुस्तक १० अंक १ में छपा हुआ है.

८ आगें कांग्रेस नहीं भरनेका कारण.

अपनी कोम और धर्मकी उन्नति चाहनेवालोंको जब यह प्रथम जैन-कांग्रेसका कल्पवृक्ष हाथ लग गया, तब उनके हृदय कितने प्रफुल्लित हुए? इसका खयाल ही अछीतरह किया जा सकता है. शब्दोंमें इतनी शक्ति नहीं है कि, उनसे ठीक तौरपर वर्णन किया जावे. उत्साहपूर्वक उस दूसरे वर्षकी महासभाका खयाल कर रहे थे कि इतने जल्दी बारह मास खतम होवें कि फिर अपने स्वामीभाइयोंके मुंबईमें दर्शन हों और जो जो अवनति इसवक्त हम देख रहे हैं उनके सुधारेकी सूचना की जावे लेकिन यह सच है कि अछी बातका पार पडना मुश्किल हैं. थोडे ही दिनोंके बाद यह बात सुननेमें आई कि अहमदाबादके वीसा श्रीमालियोंने यह ठहराव किया है कि, मुंबईकी कांग्रेसमें शामिल नहीं होना चाहिये. इस प्रतिपक्षीपनेका पूरा वृत्तांत श्री जैनधर्मप्रकाशके पुस्तक १० अंक ५ और ६ में छपा है. इसही प्रति-पक्षी पनेसे अथवा अन्य अन्य कारणोंसे फिर दूसरी कांग्रेसका मुंब-ईमें नाम निशान देखनेमें नहीं आया. अगरचे इसही पत्रके पुस्तक १० अंक ११ के मुवाफिक मुंबई शहरमें कांग्रेसके निमित्त वहांके रईसोंकी जनरल मीटिंग होकर रीसेप्शन कमीटी, तथा सबजेक्ट कमीटी, वगैरह मुकर्रर हुई. परंतु यह जनरल मीटिंग, आखरी मीटिंग मालुम देता है, इसके बाद स्वप्नमें भी उस कांग्रेसका कुछ अहवाल नहीं मालुम देता था. तथा जैसे बालक बरसातकी मोसममें भूरी मिट्टीके किल्ले बनाकर खुश होते हैं, और फिर उनके टूट जानेपर अफसोस होता है वैसेही इस कांग्रेसको देखकर खुशी हुई, और फिर इसके नेस्त नाबूद होजानेसे जो खुशी इसके होनेपर हुई थी, उससे ज्यादा रंज हुआ.

९ आयंदा कांग्रेस न भरनेसे खयालातों की उत्पत्ति.

कुदरतका फेरफार ऐसा देखने मे आया है कि, एक समय एक जगह आवादी है, तो दूसरे समय उस ही जगह वरवादी देखने में आती है एक समय एक मनुष्य धनाढ्य है, तो दूसरी समय उस की हालत वदली हुई मालुम देती है सूर्य सुवह के वक्त पूर्व दिशामें प्रकट होकर दोपहर तक जाहोजलाली दिखला कर सायकाल को पश्चिम दिशामे अस्त हो जाता है, और फिर समयानुकूल पूर्व दिशामें प्रकाशमान होता है जहां खुशी है, वहा रंज भी होता है और जहां रंज है, वहा खुशीका भी मोका आजाता है चुनाचे इस प्रथम कांग्रेसके भरनेसे जो खुशी हुई थी, उस के जारी न रहने से उस से ज्यादा रज हुआ परतु यह वात दिल मे दृढ जमी हुई थी कि, इस रंजके वदले कभी न कभी खुशीका मोकाभी जुरूर हांसिल होगा लेकिन इसहीके साथ दिल को कचाइयें भी आती थीं कि, जव जैनधर्म के आगेवानोने जिस कामको प्रचलित किया, वह जारी नही रहा ता, अव इस काम का दुवारा होना, या जारी रहना, एक हरक्यूलीयन टास्क (Herculean task) है होनहार वलवान होता है जिस वातको मुश्किल समझी जाती है, वह समय पाकर आसान मालुम होने लगती है, और जिसको आसान समझी जाती है, वह मुशकिल मालुम होने लग जाती है जैन समुदायकी वेहतरी जरूर होनेवाली थी इसलिये, वैसेही अदृश्यकारण मिलकर मनवाछित फल मिलनेका मोका मिला

१० राजपुतानामें २ मोटे तीर्थधाम.

राजपुतानामें दो मोटे तीर्थोंके धाम हैं एक श्री ऋषभदेवजीका, जो उदयपुर महाराणाजीके राज्यमें है उदयपुरतक रेल है, और उदयपुरके आगे १० या २० कोस वड़े वडे पहाडोमें होकर केसरयाजीको गाडियोंमें या इक्कोंमें जाना पडता है वहांके अधिष्ठायक हाजराहुजूर हैं और वहा धर्मकी महिमा खूब होरही है दूसरा तीर्थधाम मारवाड़में मेड़ताके नजदीक श्री फलोधीपार्श्वनाथजीका है इस गांवमें सो सवासो घरोंकी वस्ती है. और ज्यादातर सेवक लोग रहते हैं. इस जगह

मंदिर बड़ा आलीशान बना हुआ है. इस मंदिरके निकट ही मेरतारोड़ स्टेशन मोजूद है. यहांपर जोधपुर और बीकानेरकी रेल मिला करती है. रेलके निकट आजानेसे यात्रियोंको बहुतही आराम रहता है, और अपर इंडियाके यात्रियोंको फुलेरा स्टेशन होकर और लोअर इंडियाके यात्रियोंको मारवाड जंकशन होकर जानेमें सुगमता रहती है. यहांपर इस तीर्थको प्रकट हुये करीब ८०० वर्ष हुए हैं और इसका वृत्तांत यह है कि, एक गृहस्थकी गाय एक दरख्तके नीचे दूधसें झर जाती थी. जब दो चार रोज ऐसा मामला हुआ, तो उस गृहस्थनें गुवालसे पूछा, गुवालने कहा, यह गाय अपने आप वृक्षके नीचे जाकर झर जाती है, इस बातको वह गृहस्थ अपनी आंखोंसें देखकर चकित हुआ, परंतु कारण कुछ मालुम नहीं हुआ, रात्रिके समय अधिष्ठाता देवने उसको स्वप्न दिया कि नीचे देवाधिदेव श्रीपार्श्वप्रभुकी प्रतिमा बालूकी बनी हुई है. उसके ऊपर यह गाय झरती है. सो तुम उस प्रभुकी मूर्तिको निकाल कर, मंदिर बनाकर स्थापन करो? चुनांचे उस गृहस्थने उसहीके मुवाफिक पार्श्वप्रभुकी मूर्तिको उस जगह मंदिर बनाकर स्थापन की, प्रभुकी मूर्ति श्यामवर्णकी मनोहर है. दर्शन करके बहुतही आनंद आता है. मूलमंदिरके बाद चारों तरफ कोट वगैरह अजमेरनिवासी शेठ वृद्धीचंदजी सचेतीने बनाये हैं, और संवत् १९५७ की साल पीछे श्रीफलोधी तीर्थोन्नति सभाके प्रयाससे नागोरी दरवाजेके कोट नीचे यात्रियोंके रहनेके लिये नई कोटडियां बनी है.

श्रीफलोधी तीर्थपर कान्फरेन्स भरनेका विचार.

इस तीर्थपर वार्षिकोत्सव हिंदुस्थानी आसोज और गुजराती भाद्रवा वदि ९, १० का हुआ करता है, उस समय आम तोरपर हिंदुस्थानके और खास तोरपर राजपुताना और मारवाडके यात्री दस पंदरा हजार इकठे होते हैं. इस तीर्थकी हमने प्रथम यात्रा सन् १८९१ के आसोज मासमें वार्षिकोत्सवके वक्त कीथी, उसही वक्त इस तीर्थका चमत्कार इस कदर दिलपर असर कर गया कि हमेशा सालमें एक दफे आनेका विचार किया गया परंतु अंतराय कर्म बलवान् होनेसे विचारा हुआ काम थोड़े दिनतक पार नहीं पड़ा. आखिरकार संवत् १९५१ में मुंबईमें कांग्रेस नजर

ने से दिल में खयाल पैदा हुआ कि, अगर किसी मकान की छतपर च-
ढ़ना हो तो, जीने को छोड़ कर फलांग मारने से छत पर नहीं चढ़ा
जा सकता है सीधे रस्ते पडने से जायमकसदपर पहुंच जाते है
अगर सीधा मार्ग छोड़ दिया जाता है, तो, ठीक मुकाम पर नही प-
हुंचा जाता है इस खयाल के साथ यह विचार हुआ कि, श्री फलोधी
पार्श्वनाथस्वामीके वार्षिकोत्सव मे प्रायः करके राजपुताना के दस पंदरा
हजार यात्री इकठे होते हैं वे अपने वतन और मुल्कके हैं; उन का
अपना बोलचाल, राह रस्म, रिवाज, खानपीन वगैरह मिलता है. अजव
नहीं कि इन की मदद से रफ्ता रफ्ता फल प्राप्ति हो. यह खयाल कर के
यह हिम्मत होती थी कि. उस हाथ से खोए हुए हीरे को फिर प्राप्त
किया जावे और मरुधर देश के श्रावकोंकी सहायता से उस महल
की नीव डाली जावे कि, जिसमें कुल हिंदुस्थान के जैन समुदाय का
प्रदर्शन हो परंतु इस वात का खयाल होकर फिर तवियत रुक जाती
थी. और यह खयाल होता था कि, यह काम पार नहीं पड़ सकता है.
अक्सर यह खयाल होता था कि इस महासभा के फिर एकत्र करने
के लिये सब काम को छोड़कर, कटिवद्ध होके, कोशिश की जावे
परंतु फिर यह खयाल होता था कि, पानीके समुद्रमें एक बिंदुका
क्या पता ? जैन समुदाय में धर्मात्मा, श्रीमान्, शेठ का पद धारण क-
रनेवाले, अग्रेश्वर, समझदार कई श्रावक मोजूद हैं, उन के सामने एक
तुछ मनुष्य का प्रयास लश्कर के नक्कारे की आवाज के आगे एक पि-
द्दी नामक चिड़िया की चेंचाहट है थोडे दिन यह खयाल रहकर
फिर हिम्मत वधती थी, और अक्सर दिलमें यह वात जमती थी कि,
गृहस्थ धर्म को छोड़कर साधु होकर यथाशक्ति तपश्चरण करके इस
वातका निदान करूं कि, आयदा जैन समुदाय के हित का करने-
वाला होजाऊ, और जैनसमाज को फिर इकट्ठी देखकर कृतज्ञ होऊ,
परंतु फिर खयाल आता था कि, हिम्मत न हारकर कुछ न कुछ उ-
द्योग वहतरी के वास्ते किया जाना उचित है यह आपस में एक दू-
सरे के प्रतिपक्षी खयालात पैदा होते रहे इतने ही मे संवत् १९५१ के
आसोजमें वार्षिकोत्सवपर श्रीफलोधीतीर्थ की फिर यात्रा करने का

इत्तफाक हुआ; उस वक्त अजमेरनिवासी शेठ धनराजजी कांसटीया जी मोजूद थे. यात्रा करके उनसे विचार किया गया. और उन को प्रथम कांग्रेस का कुल हाल कहा गया. परंतु मारवाड़ में इस कामका शुरु होना असंजवित मालुम होता था; क्योंकि, अगरचे जैन श्वेताम्बर समुदाय की उत्पत्ति मारवाड़से ही है, और इस जूमि में अपूर्व तीर्थ जी मोजूद है; ताहम आज कल की शिक्षा की कमी की वजह से ऐसी बात का ऐसी जगहसे प्रचलित होना असंजव है. जब मंदिरजी में दर्शन किए, पूजा सेवा की विधि देखी, रहने, सोने, बैठने का आचार विचार देखा, परस्पर का मिलने जेटने का अजाव देखा, तो उसी वक्त निश्चय हो गया कि, यहां पर किसी तरहका प्रयास करना है सो महनत का फोकट गमाना है. इस लिये हमने अपने इरादे को किसी दूसरेपर प्रकट नहीं किया परंतु फिर जब रेल में बैठ कर वापिस लोटने लगे, तो रेल में इस बात को फिर थोड़ी देर चर्चे कर चुप होना पड़ा, एक वर्ष बात ही बात में निकल गया; जब फिर संवत् १९५३ के आसोज में यात्रा का मोका मिला, और यहां पर वह ही बरताव देखा, जो पिछले बरस में था; तो फिर इस बात को चर्ची, कि, अगर एक सजा इस तीर्थजूमि पर कायम की जावे, और उस सजा में साल दर साल यात्री मिल कर घंटे दो घंटे तक अपने खयालात एक दूसरे पर जाहिर किया करें, तो परस्पर प्रीति बढे. परंतु फिर इस खयाल को थोड़ी देर तक छोड़ कर वापिस लोटे तब फिर उक्त महाशय से सलाह हुई तो उन्होंने कमर बांधी, और कहा कि, साल आयंदा में एक सजा जुरूर कायम कर देनी चाहिये परंतु संवत् १९५४ के आसोज में धनराजजी का आना फलोधी नहीं हो सका; और संवत् १९५५ के आसोज में हमारा जाना नहीं हो सका; इस लिये बात ही बात में दो बर्ष और व्यतीत होगये, परंतु इस अरसे में यह खयाल पुख्ता तोर पर जमता रहा, और अन्य मनुष्यों पर जी प्रकट होता रहा. आखिरकार संवत् १९५६ के आसोज में फिर यात्रा का मोका मिला, और उस वक्त मनोबांछित फल की प्राप्ति हुई.

१७. "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" कायम हुई.

संवत् १९५६ में घोरानघोर दुर्भिक्ष (दुष्काल) "कि जिसको हिंदुस्थान ने कभी नहीं देखा होगा" प्रकट हुआ इस दुर्भिक्ष के डर से बहुत कम यात्री आये या तो इस तीर्थ पर दस पदरह हजार यात्रियों की धूम धाम देखने में आती थी, या आसोज वदि ९ को मुश्किल से १०० आदमी मालुम देते थे उस ही दिन जोधपुर, नागोर, बीकानेरको तारद्वारा समाचार दिये गए कि,. यहां पर कोई भय नहीं है, यात्रा के लिये जुरूर आवें इस पर आसोज वदि १० को सातसो आठसो यात्री इकठे होगए आसोज वदि ९ को श्री नवपदजीकी पूजा के समय जब ज्ञानपूजा शुरू हुई, उस वक्त कई सज्जनोसे कहा गया कि, अपन लोगां मे ज्ञान की बहुत कमी है, परस्पर प्रीति का अभाव है, अगर एक सभा यहां कायम की जावे तो भ्रातृभाव को तरकी मिल सकती है. जिस पर बहुत से महाशयोंने अपनी सम्मति प्रकट की, परंतु नवमी के दिन समुदाय कम होने की वजह से, दसमी के दिनपर सभा का कायम करना मुलतवी किया गया. आसोज वदि १० की रात्रिको २५० या ३०० गृहस्थों की मोजूदी में ज्ञान और विद्यापर भाषण दिया जाकर सब सज्जनो की सम्मत्यनुसार एक सभा कायम की गई, जिस का नाम "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" रक्खा गया. इस सभा में जुदे जुदे गावों के मेंबर चुने गए, और जनरल सेक्रेटरी का काम मुझ गुलाबचद ढढा के सिपुर्द किया गया, उस वक्त सभा में यह ठहराव हुआ था कि, इस तीर्थ के प्रकट होने का हाल अखबारोंमें छपवा कर जैन समुदाय को इस तीर्थ की यात्रा करने की सूचना दी जावे, चुनाचे इस तीर्थ के प्रकट होने का वृत्तांत श्री आत्मानंद पत्रिका के पुस्तक १ अंक ३ और श्रीजैन धर्मप्रकाश के पुस्तक १६ अक ५ में छपाया गया और संवत् १९५७ के आसोज के उत्सव की छपी हुई कुकुमपत्रिया करीब ५०० के ड़ेढ़सो गावों में हिंदुस्थान के कुल हिस्सोंमे भेजी गई, जब से इस तीर्थ की यात्रा करने को हिंदुस्थान के जुदे जुदे प्रात से यात्री आने लगे हैं

१३. संवत् १९५७ की काररवाई.

संवत् १९५७ की साल में आसोज मास में वर्षा अधिक होने से यात्री लोग मंदिर में ठहरने लगे, इस लिये इस आसादनाको टालने के लिये चंदा किया जाकर कोटडियां बनाई गई. और इस वर्ष में और कोई काररवाई जैनसमुदाय के एकत्र होने की नहीं हो सकी.

१४ संवत् १९५८ की काररवाई.

संवत् १९५७ के आसोज के उत्सव की बमुजिब उत्सव आसोज संवत् १९५७ कुंकुमपत्रियां तकसीम की गई, परंतु इस वर्ष बीमारी के ज्यादा फैलने से आसोज मास में विचारी हुई बात को पार पटकना कठिन समझा गया.

१५. संवत् १९५९ के चैत्रमें सिद्धाचल के प्रति यात्रार्थ गमन, और गुजरात काठियावाड़ में कान्फरेन्स का उपदेश.

चूंकि कान्फरेन्स के एकत्र करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी, और "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" के तीन जल्से हो चुके थे, मारवाड़ के गृहस्थ सभा के फ़ायदों को और एकता के नतीजों को बखूबी पहचान गए थे, हजारों रुपया लगाकर फलोधीमंदिर में यात्रियों के उतरनेके लिये कोटड़ियां बना चुके थे, इन की तरफ से गुजरात काठियावाड़ में फिर इस बातकी चर्चा उठा कर वहां के रंग ढंग देखने की इच्छा हुई.

१६. वडनगर में भाषण और हमारी रायके साथ सम्मति.

नया संवत् १९५९ के चैत्रसुदि १ को लगते ही हम जयपुर से रवाना होकर प्रथम वड़नगर पहुंचे, जहां पर मुनि श्री वीरविजयजी विराजते थे. वड़नगरमें श्रावक श्राविकाओं के समुदाय के सन्मुख अनुमान करीब एक घंटे तक कान्फरेन्स के फायदोंपर भाषण देकर, उन की इस विषय में सम्मति मांगी तो, उन्होंने हमारे मत के साथ इत्तफाक कर के विदित किया कि, जब कभी कान्फरेन्स होगी, तब हम लोग उस में शामिल हैं. कान्फरेन्स के हेतु प्रकट करने में सबसे विशेष बात यही दिखलाई गई कि कान्फरेन्स में शामिल होनेसे परस्पर हित, प्रीति, एकता और संप बढ़ता है. और इस संप की इस वक्त और हर वक्त

बड़ी भारी जुरूरत रहती है जब इत्तफाक से बेजान चीज जानदार चीज को बस मे कर लेती है, तो, फिर जानदार चीज मे इत्तफाक हो तो वह तो बहुत कुछ काम कर सकती हैं मसलन एक पत्नी किसी काम की नहीं, जब कई पत्नियां मिल जाती है और उन की मूज कूट कर रस्सा बनाया जाता है, तो उस रस्से से मदोन्मत्त हाथी को बांध देते हैं– एक पानी के बिंदु में कुछ ताकत नही है जब ऐसे ऐसे असंख्य बिंदु मिलकर नदी के तोर पर बहते हैं, तो जो कुछ उन के मुकाबले मे आता है उस को बहा ले जाते है इस ही तरह पर अगर हम लोगोंमें आपस मे संप होजावे, तो जो जो अवनतियें इस वक्त हम लोगोंमें देखी जाती है, उन सब का सुधारा बहुत आसानी से हो सकता है वडनगर के गृहस्थोंनें पहलीवार ही मे जो हम को अपना इत्तफाक प्रकट कर के हमारी हिम्मत बढाई है, उस के लिये वे गृहस्थ स्तुति के पात्र है

१७ पाटन में भाषण और सम्मति.

वडनगर से रवाना हो कर पाटन गये, वहां मुनि श्री कांतिविजयजी विराजते थे पाटन के गृहस्थो को भी व्याख्यान के समय कान्फरेंस के हेतओ के विषयमे सूचना दी तो उन लोगोने भी इस बात को पसंद कर के हमारीहिम्मत को और भी बढ़ाई

१८ अहमदाबाद में पहुंचे

पाटन से रवाना होकर अहमदाबाद पहुंचे, वहां पर मुनि श्री नेमिविजयजी केदर्शन कर के उन के साथ कान्फरेन्स संबधी बात चीत की तो उन को इस रंग मे बहुत अधिक रंगे हुए पाए उन्होंने अपनी सम्मति देकर इस के लिये खूब कोशिश करने के लिये हुक्म दिया, और यह भी प्रतिज्ञा की कि इस काम के लिये मे शेठ मनसुखभाई भगुभाई और शेठ लालभाई दलपतभाई को जुरूर कह कर उनकी राय शामिल कराऊंगा, इस इकरार से हमारी हिम्मत और भी बढ़ी, परंतु उस दिन कई कारणो से सभा न हो सकी और हम को वहांसे उसी दिन आगे को रवाना होना पड़ा, परंतु हम को यह वचन दिया गया था कि, मारवाड़ी वैसाख वदि २ को तुम्हारे अहमदाबाद मे पा-

लीताणे से वापिस आने पर उस ही दिन तीसरे पहर के वक्त सजा की जावेगी.

१ए नावनगर में सना और हमारी राय के साथ इत्तफाक.

इस इकरार से प्रफुल्लित होकर हम नावनगर जिल्ला काठियावाड़ में पहुंचे, और वहां पर शेठ कुंवरजी आणंदजी, तथा वहोरा अमरचंदजी जसराजजी तथा वकील मूलचंदजी नत्थुनाई से हमारा अनिप्राय जाहर किया, तो उन्होंने अपनी सम्मति देकर के दोप्रहर के वक्त हेंम्बिल छपवा कर दो घंटे के अंदर अंदर तमाम शहर में सायंकाल के वक्त सजा जरने की इतला दिलादी, चुनाचे इस का यह नतीजा हुआ कि शाम के वक्त करीब हजार आठसो सद्गृहस्थ सजा में मोजूद हुए, उन साहवों ने वहुत उत्कंठा के साथ हमारे नापण को सुना, और फिर हमारे नाषण की पुष्टी शेठ कुंवरजी आणंदजी, शेठ अमरचंदजी जसराजजी, वकील मूलचंदजी नत्थुनाई, मिस्टर मोतीचंदजी गिरधरजी वगैरहने नली प्रकार से की. और कुल सनाने कानूफरेंस के शुरू होने की आवश्यकता जाहर की; और अखीर में एक ठहराव इस वात का किया कि नावनगर के गृहस्थों की तरफ से अहमदावाद के शेठों को सूचना दी जावे कि वे आगे होकर इस काम को शुरु करें. यह काररवाई नावनगर के गृहस्थों की वहुत ही संतोषदायक हुई और हम को निश्चय हो गया कि"श्रीदेवगुरुकी कृपा से विचारा हुआ काम पार पड़ेगा.

२० पालीताणामें प्रथम सना.

नावनगर से रवाना होकर श्रीपालीताणा पहुंचे, वहां पर मुनिश्री दानविजयजी मुनिश्रीमणिविजयजी, मुनिश्रीकर्पूरविजयजी वगैरह वहुत साधुमुनिराज मोजूद थे, और कई जगह के यात्री नी मोजूद थे. यहां पर चैतसुदि १३ की रात को मोतीसुखया की धर्मशाला में शेठ जमनादासजी नगुनाई की प्रमुखता नीचे करीब २००० श्रावकश्राविकाओं की उपस्थिति में हमने नाषण दिया, और हमारे मतलव की पुष्टी मिस्टर फतेचंदजी कर्पूरचंदलालनने " कि जो उस वक्त वहां मोजूद थे " नली

प्रकार से की यात्रियोंनें हमारी बात को पसंद कर के प्रमुखसे प्रार्थनाकी कि एक यह प्रस्ताव पास किया जावे कि जैनियों की कान्फरेन्स होने की आवश्यकता है और अहमदाबाद के शेठोको इस ठहराव के मुवाफिक सूचना दी जावे कि वे आगे होकर इस काम को शुरु करे इस लेख-पर प्रमुख के तथा अन्य सद्गृहस्थो के हस्ताक्षर हुए

२१ पालीताणा में दूसरी श्रीचतुर्विधसंघ की सभा.

इस ही पालीताणाशहर में दूसरी सभा हिंदुस्थानी वैसाख वदि १ को उस ही धर्मशाला मे चतुर्विध श्रीसंघ की १२ बजे दोपहर से ४ बजे तक हुई, कि जिस मे ७० या ८० साधु इतनी ही साधवियां और हजार बारहसो श्रावक श्राविका मोजूद थे प्रमुख का पद मुनिश्री दानविजयजी ने धारण किया, और इस ही कान्फरेन्स के हेतुओपर विद्वत्ता भरे हुए भाषण हुए मिस्टर लालन का भाषण, और मुनि कर्पूरविजयजी तथा मुनि केसरविजयजी की सूचना, इस कान्फरेन्स के फायदो की तरफ हुई, आखिर कार प्रमुख की तरफ से, (क्यों कि मुनि श्री दानविजयजी उस वक्त बीमारथे, इस लिये) मुनि श्रीमणिविजयजीने धाराप्रभावके साथ एक घंटे से कुछ ज्यादा देर तक इस विषय की भली प्रकार से पुष्टी की जो गृहस्थ मोजूद थे उन्होने कान्फरेन्स की आवश्यकता को मंजूर की

२२ अहमदाबाद में दुबारा जाना और नगर सेठ के बंगले में सभा का होना

श्रीपालीताणा की दोनो सभा की काररवाई बहुत संतोषकारी रही, और हम को निश्चय हो गया कि अब हमारा विचारा हुआ काम शीघ्र ही फलदाई होगा और इस ही जगह हम को यह भी उम्मेद हो गई कि अहमदाबाद के शेठ भी हमारी प्रार्थना जरूर स्वीकार करेंगे, श्रीपालीताणे से पांच बजे शाम को रवाना होकर सोनगढ़ स्टेशन पर रात को ८ बजे पहुचे, और भावनगर से जो गाड़ी अहमदाबाद को जाती है, उस मे रवाना होकर वीरमगांव से हमारी मातुश्री को तो परभारी रवाना की, और हम अहमदाबाद करीब १२

वजे दोपहर के पहुंचे. स्टेशन पर मास्टर हीराचंद कक्कलभाई मोजूद थे, उन्होंने अहमदावाद के शेठों की आज्ञानुसार छपाए हुए हेंडविल हमारे भाषण के सारे शहर में तकसीम करदिये थे. उनके साथ उनके मकान पर पहुंच कर वहां से तीन वजे नगरशेठ के वंगले पर पहुंचे, वहां पर शेठ लालभाई दलपतभाई, शेठ मनसुखभाई भगुभाई आदि गृहस्थ करीब आठसो के मोजूद थे. हमारे सभामें पहुंचते ही हम को बड़ी खुशी के साथ आदर दिया और हमने जो लेक्चर दिया, उस को आनंदपूर्वक सुनते रहे. चूंकि हम को और स्थलों से कामयावी होगई थी, अव सिर्फ अहमदावाद में कामयाबी हांसिल करना था, इसलिये हमनें अपनी शक्ति के अनुसार जहां तक हमसे होसका, अहमदावाद के सरदारों पर कान्फरेन्स की आवश्यकता जमाई. हमने सच्चे दिलसे उन साहवों से प्रार्थना की कि, जिस वात की सूचना हम इस वक्त आप साहबों के सामने कर रहे हैं, यह वात आप लोगों के लिये नई नहीं है. वल्कि जो खयालात हमारे विद्यार्थी की हालतमें थे, उन को आप साहवोंने सम्वत् १९५० की फर्स्टजैनकॉंग्रैस भर कर पुष्टी दी थी. और उस कान्फरेन्स के असल मतलव को आपने उस प्रथम सभा से हमारे दिमाग में भली प्रकार जमा दिया था, हम उम्मेद करते थे कि इस सभा की काररवाई जारी रहेगी. परंतु कई कारणों से वह काररवाई बंद रही. इतने अरसे तक विचार करते हुए अव हम को ठीक मोका मिला है कि फिर उन्ही साहवों की सेवा में वह वात अज करें कि जिस का शुभ फल वे पा चुके हैं, चूंकि हमारे धर्म कार्य में अग्रेश्वर अहमदाबाद के शेठिया हैं, और हमारे स्वामी भाइयों का अच्छा जूथ यहां पर है, इस लिये इस कार्य में भी हम चाहते हैं कि अहमदाबाद के शेठिया इस को अपने मस्तकपर धारण कर हमारी जाति और धर्म की तरक्की इस ही शहर से शुरु करें. यह जीत का नक्कारा इस ही शहर से बजना शुरु होवे, यह फतेहयावी का झंडा यहां ही से फरके, यह इज्जत का ताज हमारे अहमदावाद के शेठियाओं के शिरपर रक्खा जावे. हम लोग मारवाड़ वगैरहके आप के साथ रह कर आपकी काररवाई में शामिल रहैंगे, परंतु इस काररवाई

का प्रारंभ अहमदावाद से होना मुनासिव है हमारा इरादा पक्का है कि अब वहुत जल्द काररवाई कान्फरेन्स की शुरु किई जावे, और अब वक्त भी आ गया है कि जिसमे हम को जाग कर सुधारा वधारा करने की जुरूरत है देश काल के अनुकूल कान्फरेन्स किसी न किसी जगह जुरूर शुरु होगा, तो फिर वहतर यह ही है कि यह मान का मुकुट अहमदावाद के शिर पर रक्खा जावे

२३ असंतोषकारी नतीजा

हमारी इस प्रार्थना को हाजरीन जलसाने एक चित्त हो कर सुना, परंतु हां या नां का जवाव साफ नहीं मिला, वल्कि एक ऐसा मुजवजव जवाव मिला कि, जिस से हमारी चाल वद होती थी, वह यह था कि आज के रोज सभा की इत्तला वहुत थोडे वक्त पहले मिलने से ठहों-न्यात के कुल आगेवान गृहस्थ नहीं जमा हुए हैं, और विनाकुल आगे वानो की सलाह के इस वात मे हामल नहीं भरी जा सकती, पंदरा दिन के वाद हमारे यहां नवकारसी का जीमण होगा, उस मे सब लोग आवेगे, वहां यह वात पक्की हो सकती है.

२४ दूसरी जगह कान्फरेन्स किई जावे उस की काररवाई में अहमदावाद की सम्मति.

इस जवाव के सुनने से हम सोच के समुद्र में गोता खाने लगे, क्योंकि पदरा दिन पीछे हमारा फिर अहमदावाद आना कठिनही नहीं, किन्तु असंभव था और जवतक अहमदावाद का हां या नां का जवाव नहीं मिले, उस वक्ततक आगेकोई काररवाई करना वद हो गया. इस लिये हाजरीन जल्सा से फिर प्रार्थना की कि अगर किसी कारण से अहमदावाद मे यह जल्सा इस वक्त न हो सके, और मारवाड़ मे इस की नीव डाली जावे तो आपलोगो की सम्मति है या नहीं, और आपलोग उस को पसंद करते हैं या नहीं, तो इस का जवाव संतोप कारक मिला कि अगर हमारे यहां इस जल्से का शुरु होना इस वक्त असंभवित मालुम हो, तो तुम जहां इस को शुरु करोगे उस में हमारी राय शामिल है

२५ अहमदाबाद के साथ पत्रव्यवहार.

अहमदाबाद से दूसरे दिन वैसाख वदि ३ को डाक गाड़ी से रवाना होकर जयपुर पहुंचे, परंतु चित्त की वृत्ति ठीक नहीं रही तोभी जिन जिन आगेवान गृहस्थों का नाम हम को मालुम हुआ था, उन को तथा खास कर के शेठ लालभाई दलपतभाई और शेठ मनसुखभाई भगुभाई को हमने पत्रद्वारा सचेत किये पर फल प्राप्ति न हुई.

२६ हिंदुस्थान के आगेवान सद्गृहस्थों के नाम चिठ्ठी.

जयपुर वापस आने के बाद महिना डेढ़ महिना विचार ही विचारमें खोया, आखिरकार यह बात दिल में पुख्ता तोर पर जमा ली कि जो कुछ हो सो हो आयंदा आसोज मास में फलोधी के उत्सव पर कान्फरेन्स की काररवाई को जुरूर शुरू करना चाहिये. लेकिन फिर यह खयाल आया कि, जबतक कुल हिंदुस्थान के आगेवानों की इस मामले में सम्मति नहीं हो, यह काम नहीं चल सकता है, और कुल हिंदुस्थान में फिरकर अपने अभिप्राय को जाहर करना नामुमकिन है; इस लिये श्रीपार्श्वप्रभु का स्मरण करके नीचे लिखे हुये मजमून की चिठ्ठियां उन साहबों के नाम भेजीं, कि जिन का नाम मजमून चिठ्ठी के बाद दर्ज किया जावेगा.
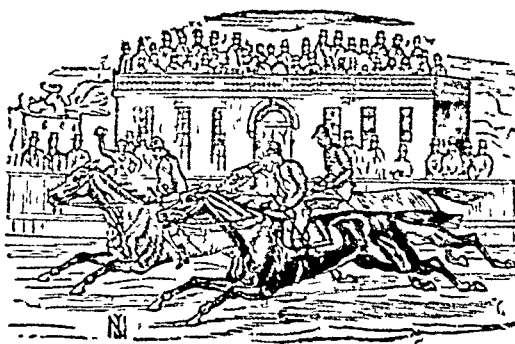
(अंग्रेजी चिट्ठीका नकल)

"SRI PHALODI TIRTHONATI SABHA OFFICE,'

Jaipur, 27th July 1902

FROM

THE GENERAL SECRETARY,

"SRI PHALODI TIRTHONATI SABHA"

To

Seth

MY DEAR BROTHER —

Be it known to your religious piety that the world renowned and time old Jain faith and the social condition of its followers require the most careful attention of every true Jain in order to maintain the dignity and high position upheld hitherto Ignorance, want of knowledge, absence of fellow feeling, sympathy and co-operation and allied circumstances, have all combined to reduce us to our present situation which is Jain in name only and not in substance *We see hundreds of our famine stricken brothers in religion dying of starvation* while ourselves enjoying full meals We see irreligious practices committed in temples situated on the most sacred hills and the plains We see our true cause marred for want of co operation and for the greatest want of one influential and all governing body of the Jains of India To serve the cause and to gain the purpose, time requires us to join together at some place in a representative body and to come to a conclusion which may guide us in our future actions

I may be allowed to draw your attention to the fact that Phalodi or Merta Road, situated as it is, on the Jodhpur Bikanir Railway and where an annual religious gathering already takes place, would form the best centre at present for us to assemble in a Jain Conference, and as the fair would be held on the 25th and 26th September next, it would be advisable to have our sittings on these dates I therefore beg to solicit your favor to enlighten me on the subject as to the views you hold and to let me know of your intention to take part in its proceedings I shall have invitation letters printed on hearing from you and so I hope you will kindly communicate to me your designs as soon as possible

Cordially yours,

G C DHADDA.

१७ अंगरेजी चिठी का भावार्थ--

" दफ्तर श्री फलोधीतीर्थोन्नति सभा "

मुकाम जयपुर तारीख २७ जोलाई सन् १९०२

अजतरफ जनरल सेक्रेटेरी. " श्री फलोधीतीर्थोन्नतिसभा "

व खिदमत शेठसाहब..

मेरे प्यारे भाईसाहब

आप की धर्म में रुचि होने से आप की पवित्र सेवा में विदित किया जाता है कि, इस जगत्विख्यात और अत्यंत पुरातन जैनधर्म और उस कि अनुयायियों की जातीयदशा की अबतक जो उच्चस्थिति और गोरव चला आया है, उस को अब बदस्तूर कायम रखने के प्रयत्नों पर हर सच्चे जैनी को बहुत हुशयारी के साथ ध्यान देना निहायत ही जुरूरी है- नावाकफियत, विद्या की कमी, हम दरदी व दिलसोजी का अभाव, एक दिल होकर आपसमें सहायता का न देना, वगैरहवगैरह हालतों ने मिल कर हम को हमारी आधुनिक दशा में ला डाला है कि, जो वास्तव में नहीं, सिर्फ नाममात्र में जैन हैं. हम हमारे कहतजदा सैंकडों जैनी भाइयों को भूख के मारे हुये दुर्दशा से मरते हुए देखते हैं, और हम खुद पेट भरकर रोटी खाते हैं. अत्यंत पवित्र पहाड़ों और मैदानों पर जो हमारे मंदिर बने हुए हैं, उन में धर्मविरुद्ध आचरण हम अपनी नजरों से देखते हैं. एक दिल हो कर आपस में मदद न देनेकी वजहसे, और ज्यादातर इस कारणसे कि हिंदुस्थान के कुल जैनी भाइयोंका एक बहुत जोरदार और सर्वाधिकारी समूह नहीं है; हम अपने सच्चे मतका नुकसान पहुंचता हुआ देख रहेहैं. धर्म की उन्नति करने और अपना इच्छित मतलब हांसिल करने के लिये समयानुकूल हम को किसी जगह पर रीप्रेजेन्टेटिव बॉडी (Representative Body) में इकठा होकर किसी परिणाम को पहुंचना चाहिये, कि जिस की सहायता से हमारी भविष्यत् कारखाइयां चलती रहें.

में आप को यह बात जाहर करने की इजाजत लेता हूं कि जोधपुर बीकानेर रेलवे में मेरतारोड स्टेशन पर श्रीफलोधीपार्श्वनाथस्वामीका सालाना धर्मोत्सव हुआ करता है, वह जगह इस वक्त जैन कान्फरेंस के एकत्र होने के लिये उम्दा मालुम होती है, और चूकि यह उत्सव २५ व २६ सप्टेम्बर को होगा, इस लिये अगर इन तारीखों पर कान्फरेंस का जलसा हो तो बेहतर है इस लिये प्रार्थना है कि कृपाकरके इस मामले मे जो आप की राय हो, उस से मुझे वाकिफ करें, और आप के इस जलसे मे शामिल होने के इरादे की इत्तला दें, ताकि में कुंकुमपत्रिया छपवा कर भेजू मे उम्मीद करता हूं कि आप महेरवानी कर के अपना अभिप्राय बहुत जल्दी प्रकट करेंगे–

सरलतापूर्वक आपका

गुलाबचंद ढढ्ढा–
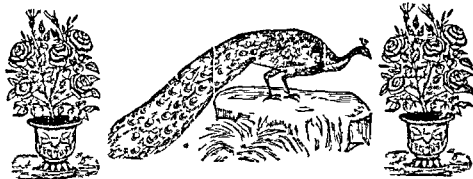
नंवर	जिला.	शहर.	नाम.
५५	गुजरात	अहमदावाद	शेठ जैसिंघभाई हटीसिंघ
५६	"	"	माष्टर हीराचंद ककलभाई
५७	"	"	मिष्टर मोतीलाल कुशलचंद शा
५८	"	"	" भगुभाई फतेचंद कारभारी
५९	"	पाटन	वकील लहरूडाया
६०	"	महसाणा	जैनपाठशाला
६१	"	भडोंच	शेठ अनूपचंद मलूकचंद
६२	"	खंभात	शेठ पोपटभाई अमरचंद
६३	"	वड़ोदा	जोंहरी लीलाभाई रायचंद
६४	"	"	रायवहादुर वालाभाई
६५	"	"	अमीचंद मानकचंद
६६	"	पालनपुर	महता मंगलजी ईश्वरदास
६७	मुंवई	मुंवई	मुनि श्रीमोहनलालजी
६८	"	"	शेठ वीरचंद दीपचंद सी. आई. ई.
६९	"	"	शेठ फकीरचंद प्रेमचंद जे. पी.
७०	"	"	रायवहादुर शेठ मानकचंद कपूरचंद
७१	"	"	जोंहरी माणकलाल घेलाभाई
७२	"	"	मिष्टर मोहनलाल पूंजाभाई
७३	"	"	भांपणा हजारीमलजी
७४	"	"	माष्टर अमरचंद पी. परमार
७५	"	"	मिष्टर फतेचंद कपूरचंद लालन
७६	"	"	" मोतीचंद गिरधर कापडीया वी.ए.
७७	"	"	जोंहरी मोहनलाल मगनभाई
७८	"	"	वाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जोंहरी
७९	"	"	"जीवनलाल भगवानलाल पन्नालाल.
८०	"	"	" फूलचंद कसतूरचंद
८१	"	"	शेठ हीराचंद मोतीचंद
८२	"	"	" गुलावचंद मोतीचंद

नंबर	जिला	शहर	नाम
७३	मुंबई	मुंबई	„ धर्मचंद उदयचंद
७४	„	„	मिष्टर लखमसी हीरजी म्हेसरी बी ए एल् एल् बी
७५	„	„	शेठ वसनजी त्रीकमजी
७६	„	„	„ जेठाभाई दामजी
७७	„	„	„ खेमचंद मोतीचंद
७८	„	„	„ मोतीचंद देवचंद
७९	„	„	„ अमरचंद तिलकचंद
८०	„	„	„ जगजीवण कल्याणजी
८१	„	„	„ देवकरण मूलजी
८२	„	„	„ मोहनलाल हेमचंद
८३	„	„	„ नेमचंद भीमजी
८४	„	„	„ वसनजी नाथू
८५	„	„	„ डुलभ कल्याण
८६	„	„	मिष्टर खीमजी हीरजी कायानी
८७	„	„	„ टोकरसी नैणसी
८८	काठियावा.	भावनगर	शेठ कुंवरजी आणदजी
८९	दक्षिण	धुलिया	शेठ सखारामभाई डुलभजी
१००	„	हैदराबाद	शेठ थानमलजी लूणिया

२ए प्रत्युत्तर में बहुत से सद्गृहस्थों ने कान्फरेन्स होने की राय दी.

इन चिट्ठियों के प्रत्युत्तर में कलकत्ता, अहमदाबाद, मुंबई, बडोदा, इंदोर, प्रांतीज, महसाणा, भावनगर वगैरह शहरोंसे बहुतसे सद्गृहस्थोंने कान्फरैंस के साथ सम्मति जाहर की, और कान्फरैंस के शुरु करने की आवश्यकता बतलाई, इस लिये इन रायों की प्रबलता देख कर "श्रीफलोधी तीर्थोन्नति सभा" के मुख्य मेम्बरों की याने शेठ पूनमचंदजी सावणसूखा प्रेसीडेंट व महता बखतावरमलजी पेटरन व शेठ हीराचंदजी सचेती वगैरह की राय ली गई, कि अगर आसोज मास में श्रीपार्श्वप्रभु के वार्षिकोत्सव पर अपनी सभा के जल्से में प्रथम कान्फरैन्स की नीव डाली जावै, तो अच्छा होगा. इस पर उन साहबोंने इजाजतदी, और खुशी के साथ प्रकट किया कि यह काम अवश्य होना चाहिये. इसलिये " श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा " की तरफ से नीचे लिखे हुए मजमून की कुंकुमपत्रियां छपवाईः—

३० "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा की तरफ से प्रथम कान्फरैंस की छपी हुई कुंकुमपत्रिका जारी की गई.

॥ श्री पार्श्वनाथजी ॥

बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च, देहस्य सारं व्रतधारणं च ॥
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं, वाचः फलं प्रीतिकरं नराणाम् ॥ १ ॥

॥ स्वस्ति श्री पार्श्वजिनं प्रणम्य.......................................

नग्रे महाशुभस्थाने पूज्याराध्ये दृढधर्मवान् सुश्रावक पुन्यप्रभावक श्रीदेवगुरुभक्तिकारक परमप्रीतिपात्रादि सर्वेशुभोपमालायक धर्मस्नेही साधर्मी भाई साहब श्री~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

तथा समस्त श्री संघ योग्य फलोधी (मेड़तारोड़) से लिखी "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" का अतिप्रेमपूर्वक प्रणाम कबूल करावशोजी. अत्रे श्रीदेवगुरुप्रसादे कुशल मंगल है आपकी सदा कुशल चाहते हैं. विशेष समाचार यह है कि, श्रीफलोधीपार्श्वनाथस्वामी की यात्रा का वार्षिकोत्सव श्रीफलोधी में मिती आसोजवदि ७ गुरुवार और १० शुक्र-

वार मुताविक तारीख २५ और २६ सप्टेम्वर (गुजराती जाद्रवा वदि० और १०) को होगा, कि जिस की सूचना तीनवर्ष से वरावर आप की सेवा में जाती है हजारो यात्री दर्शन करने को नाना देशों से आवेंगे इस समय यात्रा करने से तीर्थयात्रा का फल और श्रीसंघके दर्शन का लाज होगा इस तीर्थ की महिमा विशेष कर के आपको पहिले की कुंकुमपत्रियों से मालुम हो सकती है—

"श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसजा" का सालाना जल्सा जी इन ही दिनों में होगा, जिस मे मामूली काररवाई के अलावा इस पंचमकाल में डुर्जिक्ष के पीडे हुए स्वामी जाइयो की दुर्दशा के सुधारे का तथा लौकिक पारलौकिक अनेक वातों का जली प्रकार से प्रवध करने का और केलवणी विद्योन्नति वगैरह कार्यों मे सहायता देने का विचार किया जावेगा और इत्तफाक के साथ हमारे सुधारे की तरफ कोशिश की जावेगी इस सजा मे आप जैसे समजदार दयालु सद्गृहस्थों के शामिल होने से इस सजा की काररवाई वतोर "जैनकानूफरेन्स' के होसकती हैं; और ऐसे कानूफरंस का इस समय में होना वहुत ही जुरूरी है इस का दारमदार विदेशी सद्गृहस्थो के अधिक पधारने पर है. इस लिये आशा की जाती है कि इस जात्युन्नति के काम मे उत्कंठा के साथ आप सर्व साहव मित्रमंडलीसहित उक्तसमय पर पधारकर श्रीजैन धर्म को जली प्रकार दिपावेंगे.

श्री फलोधीतीर्थ पर पानी की कमी नहीं है, और जोधपुर वीकानेर रेलवे में मेरतारोड नाम का स्टेशन है

कृपा कर के इस पत्रीको श्रावक समुदाय में तथा मंदिरजी व उपासरे मेंपढ कर सकल श्री सघ को यात्रा की सूचना देकर लाज उगनाजी—

श्री उक्तसजा के आज्ञानुसार

मु. जयपुर तारीख ६ सप्टेम्वर सन् १९०२ ई	गुलावचद ढढा एम् ए नाजिम निजामत सवाई जयपुर. जनरल सेक्रेटेरी "श्री फलोधीतीर्थोन्नतिसजा"

३१ जैनमासिकपत्रों द्वारा ७००० कुंकुमपत्रियां तकसीम की गई.

इस मजमून की १२०० कुकुमपत्री गुजराती अक्षरों में छपी हुई

हिन्दीजाषा की जावनगर वाले शेठ कुंवरजी आणंदजीने अपने विख्यात मासिकपत्र में मुफ्त में तकसीम की कि जिस की वजह से उन गुजरात काठियावाड़ वगैरह के सद्गृहस्थों और उन की मित्रमंरुली को कि जिन के पास यह पत्र जाता है, हमारा हेतु अछी तरह मालुम हो गया; और ६०० कुंकुमपत्रियां गुजराती जाषा और गुजराती अक्षरों में छपी हुई मिष्टर गोकुलचंद्र अमथाशा अहमदावाद वालोंने अपने नवीन पत्र के जरये से मुफ्त में तकसीम कीं, जिस से उन के ग्राहकों को और उन ग्राहकों की मित्रमंरुली को हमारा कार्य मालुम हुआ और २०० कुंकुमपत्री हिंडुस्थानी जाषा और नागरी अक्षरों में छपाकर लाला जसवंतराय जैनी लाहोर वालोंने श्रीआत्मानंद पत्रिका के जरये से मुफ्त में तकसीम कीं, कि जिस की वजह से पंजाब वगैरह मुल्कों के उन के ग्राहकों को कान्फरेंस जरने का हाल अच्छी तरह मालुम हो गया. इन कुंकुमपत्रियों के अलावा इन पत्रों में वकतन फवकतन आर्टीकिल्स छपवा कर के जी वाचकवर्ग को सूचना दी गई.

३७ करीब ८०० कुंकुमपत्रियां डाक मारफत जेजी गई

इन पत्रों के अलावा उपरि लिखे हुए मजमून की करीब ८०० कुंकुमपत्रियां हिंडुस्थानी जाषा और अक्षरों में छपाकर डाक के मारफत हिंडुस्थान के मुख्तलिफ जिलों में जेजीं, कि जिस का मुफस्सिल गोशवारा इस रिपोर्ट में इस गरज से दर्ज किया जाता है कि, अव्वल तो प्रथम कान्फरेंस की जिन जिन महाशयों को इत्तला दी गई उस की एक याददाश्ती आयंदा के लिये हरवक्त मोजूद पावे, और आयंदा जी काम पड़े जब आसानी के साथ इतने गावों का पता चल सके. दूसरा फायदा इस गोशवारे के दर्ज करने से यह विचारा गया है कि अगरचे यह गोशवारा पूरी डाइरेक्टरी का काम नहीं दे सकता है, ताहम एक किस्म की डाइरेक्टरी जी समजी जासकती है. तीसरा फायदा यह है कि हम को इस गोशवारे से मालुम हो सकता है कि, किस शहर में कौन २ जाई ऐसे हैं कि जिन के साथ पत्रव्यवहार करनेसे हम को हमारे सवाल का जबाब मिल सकता है, इन कारणों से वह फहरिस्त यहां पर आगे दर्ज की जाती है—

३३. याददाश्त व कैद नाम गाव व ज़िला जहां कुंकुमपत्रियां डाकमारफत भेजी गईं.

नम्बर शुमार	नाम असामी	शहर	जिला
	राजपुताना		
१	श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर	मेरता रोड	राजपुताना
२	सैंसमलजी भड़गतिया	मेड़ता	”
३	रिखबदासजी भांभावत	”	”
४	साह भगवानदासजी	”	”
५	रिखबदासजी तातेड़	”	”
६	महता समीरमलजी	”	”
७	पीरचंदजी भंडारी	”	”
८	शिवदानमलजी कोठियारी	”	”
९	भगवानदासजी सांढ	”	”
१०	सरदारमलजी धाडीवाल	”	”
११	श्रीजैनमंदिर	”	”
१२	दीपचंदजी प्रेमचंदजी खजानची	नागोर	”
१३	बछराजजी चोरडीया	”	”
१४	मुकन्दचन्दजी अमरचन्दजी खजानची	”	”
१५	गुलाबचन्दजी तोलावट	”	”
१६	ठगनमलजी डागा	”	”
१७	फूलचंदजी चोरडीया	”	”
१८	जीतमलजी महता	”	”
१९	गुलाबचंदजी चोधरी	”	”
२०	ठगनमलजी सुराणा	”	”
२१	अबीरचंदजी लोढा	”	”
२२	बखतावरमलजी भंडारी	”	”
२३	केवलचंदजी भंडारी	”	”
२४	किशनचंदजी महता	”	”
२५	मोहनलालजी	”	”
२६	जगरूपमलजी कोठियारी	”	”

नम्बर शुमार	नाम असामी	शहर	जिला
२७	कजोडीमलजी सुरट	नागोर	राजपुताना
२८	बखतावरमलजी चोधरी	,,	,,
२९	मगनराजजी गोरीवाल	,,	,,
३०	कुशलराजजी कोठियारी	,,	,,
३१	शिवदानमलजी वैंगानी	,,	,,
३२	साह सुपारसमलजी	,,	,,
३३	रनगरू बगनमलजी	,,	,,
३४	पूनमचंदजी सावणसूखा	बीकानेर	,,
३५	चांदमलजी ढढ्ढा	,,	,,
३६	मिलापचंदजी नेमीचंदजी धाड़ीवाल	,,	,,
३७	गुमानमलजी वरड़ीया	,,	,,
३८	शिवचंदजी सुराणा	,,	,,
३९	जेठमलजी बोथरा	,,	,,
४०	मोहनलालजी दफ्तरी	,,	,,
४१	लक्ष्मीचंदजी महता	,,	,,
४२	जेठमलजी रतनलालजी ढढ्ढा	,,	,,
४३	सिरीचंदजी कोचर	,,	,,
४४	लक्ष्मीचंदजी कोचर	,,	,,
४५	श्रीजैनमंदिर	,,	,,
४६	श्रीमहता कोचरां का मंदिर	,,	,,
४७	बखतावरमलजी महता	जोधपुर	,,
४८	खुशालराजजी महता	,,	,,
४९	शिवराजजी महता	,,	,,
५०	जुगराजजी महता	,,	,,
५१	फोजराजजी महता	,,	,,
५२	रतनराजजी महता	,,	,,
५३	चांदमलजी महता	,,	,,
५४	सरदारसिंहजी किशनसिंहजी महता	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम श्रासामी	शहर	जिला
५५	रामराजजी महता	जोधपुर	राजपुताना
५६	तेजराजजी टांटीया महता	”	”
५७	वदरीनाथजी महता	”	”
५८	सिरैमलजी ढढ्ढा	”	”
५९	मनोहरमलजी ढढ्ढा	”	”
६०	हनवंतचदजी भंडारी	”	”
६१	लालचदजी भंडारी	”	”
६२	सुगनचदजी भंडारी	”	”
६३	जीतचदजी भंडारी	”	”
६४	गिरधारीमलजी भंडारी	”	”
६५	श्रानदराजजी भडारी	”	”
६६	सरूपचंदजी भडारी	”	”
६७	सूरचंदजी भंडारी	”	”
६८	साह केसरीमलजी जैतारणवाला	”	”
६९	केवलचदजी भडारी	”	”
७०	कानमलजी पटवा	”	”
७१	शिवराजजी दफ्तरी	”	”
७२	रामराजजी चोधरी	”	”
७३	मालुमचदजी सुरट	”	”
७४	पेमराजजी कुमट	”	”
७५	नोरतनमलजी भाडावत बी ए एल्. एल् बी	”	”
७६	शिवराजजी तेजराजजी रावत भडारी	”	”
७७	पारसमलजी लोढा	”	”
७८	साह सुजाणमलजी मुकदमलजी	”	”
७९	लक्ष्मीनाथजी	”	”
८०	कांसटीया सूरजमलजी	”	”
८१	लक्ष्मीचदजी वच्छावत	”	”
८२	दीपचंदजी पारख	”	”

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
८३	सूरजमलजी पारख	जोधपुर	राजपुताना
८४	तेजमलजी पोरवाल	पाली	„
८५	चांदमलजी बजेड़	„	„
८६	साह निहालचंदजी सर्राफ	„	„
८७	साह सूरजमलजी जसराजजी	„	„
८८	साह पन्नालालजी गोलेछा	„	„
८९	साह भैरूदासजी कोचर	„	„
९०	साह कुन्दणमलजी महता	„	„
९१	शिवराजजी संघवी	„	„
९२	महता बखतावरमलजी	„	„
९३	श्रीनवलक्खा पार्श्वनाथजी का मंदिर	„	„
९४	नेमीचंदजी ढढ्ढा	फलोधी पोकरण	„
९५	फूलचंदजी गोलेछा	„	„
९६	भोगमलजी मावक	„	„
९७	सूरचंदजी भंडारी	बाली	„
९८	हीराचंदजी चोपड़ा	लोहाट	„
९९	करणीदानजी खूबचंदजी	„	„
१००	सरूपचंदजी भंडारी	मारोठ	„
१०१	परतापमलजी चोपडा	बालोतरा	„
१०२	श्रीसंघ	खजवाणा	„
१०३	साहबचंदजी कोठयारी	डेगाना	„
१०४	महता जीवणराजजी पिरथीराजजी	जालोर	„
१०५	श्रीसंघ	„	„
१०६	श्रीसंघ	सोजत	„
१०७	महता शिवदानमलजी	चाणोद	„
१०८	बगनचंदजी भंडारी	भीलाडा	„
१०९	जुगराजजी महता	„	„
११०	रायचंदजी नथमलजी	कुचेरा	„

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
१११	महता धनराजजी रूपचदजी	पीपाड	राजपुताना
११२	वागमलजी परतावमलजी	आहोर	,,
११३	रामजी किशनाजी	,,	,,
११४	जीवणचदजी गधी	जैतारण	,,
११५	वस्तूरामजी अगरचंदजी	,,	,,
११६	सरदारमलजी फूलचदजी	पोकरण	,,
११७	कामदार महता जसराजजी	,,	,,
११८	महता साहिबचदजी	खीमेल	,,
११९	सोभाचदजी माणकचदजी	सादड़ी	,,
१२०	दलीचदजी धीरजमलजी	,,	,,
१२१	महता नवलराजजी	कुचेरा	,,
१२२	जेठमलजी चोथमलजी कोचर	लाड़नु	,,
१२३	सुलतानमलजी संघवी	,,	,,
१२४	हुकमचंदजी चिमनरामजी वैद	,,	,,
१२५	नेमीचंदजी संघवी	वीदासर	,,
१२६	शोभाचदजी हणवतमलजी वेगाणी	,,	,,
१२७	इन्दरचदजी गुलावचंदजी	सुजानगढ़	,,
१२८	चन्दणमलजी कोचर	,,	,,
१२९	गम्भीरचदजी सुराणा	,,	,,
१३०	वालचंदजी वनवारीलालजी वैंगाणी	,,	,,
१३१	आनदमलजी दोलतमलजी लोढ़ा	,,	,,
१३२	श्रीपचायती मंदिर	जयपुर	,,
१३३	श्रीनया मंदिर	,,	,,
१३४	श्रीतपां का मंदिर	,,	,,
१३५	श्रीमालों का मदिर	,,	,,
१३६	श्रीधर्मशाला	,,	,,
१३७	उपासरा श्रीपुज्यजी	,,	,,
१३८	उपासरा यती ज्ञानचंदजी	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
१३९	नथमलजी गोलेछा	जयपुर	राजपुताना
१४०	कन्हैयालालजी ढढ्ढा	„	„
१४१	कन्हैयालालजी डागा	„	„
१४२	भैरूंलालजी कन्हैयालालजी पूंगल्या	„	„
१४३	गोकलचंदजी पूंगल्या	„	„
१४४	रतनलालजी फोफल्या	„	„
१४५	भूरामलजी सुगनचंदजी चोरडीया	„	„
१४६	लछमणलालजी केसरीमलजी चोरडीया	„	„
१४७	कुंदणमलजी पूनमचंदजी भंडारी	„	„
१४८	गुलाबचंदजी ढोर	„	„
१४९	छगनलालजी हीरालालजी टांक	„	„
१५०	नथमलजी बांठिया	„	„
१५१	चंदनमलजी पूनमचंदजी कोठयारी	„	„
१५२	गंगारामजी श्रीमाल	„	„
१५३	मिलापचंदजी लक्ष्मीचंदजी महता	„	„
१५४	पेमचंदजी कोठयारी	„	„
१५५	अमरचंदजी कोठयारी	„	„
१५६	कालूरामजी जूनीवाल	„	„
१५७	शिवशंकरजी मुकीम	„	„
१५८	गोपीनाथजी लोढा	„	„
१५९	चन्दणमलजी सागरमलजी कांकरीया	„	„
१६०	महादेवजी खारेड़	„	„
१६१	महरचंदजी जरगर	„	„
१६२	डुलीचंदजी गोलेछा	„	„
१६३	धनरूपमलजी गोलेछा	„	„
१६४	सुजानमलजी ललवानी	„	„
१६५	चांदमलजी कवाड़	„	„
१६६	भूरामलजी बैराठी	„	„

नम्बर शुमार	नाम श्रासामी	शहर	जिला
१६७	माणकलालजी जिन्नाणी	टोंक	राजपुताना
१६८	नथमलजी दसोत	,,	,,
१६९	जेठी अम्बालालजी	,,	,,
१७०	नथमलजी गोलेछा	,,	,,
१७१	केसरीमलजी महता	,,	,
१७२	सोभालालजी श्रीमाल	खेतडी	,,
१७३	श्रीजैनमंदिर	फूफणु	,,
१७४	अमोलकचदजी श्रीमाल	,,	,,
१७५	तनसुखजी रामचंदरजी संघवी	जोवनेर	,,
१७६	तेजकरणजी रतनलालजी घरडीया	,,	,,
१७७	गोरीलालजी हजारीलालजी वरड़ीया	,,	,,
१७८	वहादुरमलजी ठाजेड	किशनगढ़	,,
१७९	रायवहादुर सोभागमलजी ढढ्ढा	अजमेर	,,
१८०	रायवहादुर उम्मेदमलजी लोढा	,,	,,
१८१	हीराचदजी सचेती	,,	,,
१८२	किस्तूरचदजी भडगतीया	,,	,,
१८३	धनराजजी कांसटीया	,,	,,
१८४	कानमलजी भांडावत	,,	,,
१८५	किसतूरमलजी भांडावत	,,	,,
१८६	वुधकरणजी महता	,,	,,
१८७	केसरीमलजी लूणिया	,,	,,
१८८	कुन्दनमलजी सोभागमलजी हरखावत	,,	,,
१८९	किशनचदजी महोणोत	,,	,,
१९०	मदनचंदजी धाड़ीवाल	,,	,,
१९१	मिलापचदजी कांसटीया	,,	,,
१९२	श्रीजैनमंदिर	,,	साभर
१९३	सघवी जसवतमलजी	,,	उदयपुर
१९४	कोठयारी वलवतसिघजी	,,	,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
१९५	मगनमलजी पूंजावत	उदयपुर	राजपुताना
१९६	नेमीचंदजी गोड़वाड़या	"	"
१९७	विरधीचंदजी कोठयारी	"	"
१९८	जवाहरमलजी सरदारमलजी पटवा	"	"
१९९	श्रीपालजी चतुर	"	"
२००	इंदरजी सुराना	"	"
२०१	जेठी देवीचंदजी	"	"
२०२	बछराजजी संघवी	"	"
२०३	धर्मचंदजी उदयचंदजी	चीतोड़	"
२०४	विरधीचंदजी सुराणा	"	"
२०५	शेरमलजी मगनमलजी	कपासण	"
२०६	महता अमृतसिंहजी	नाथद्वारा	"
२०७	जैतमलजी जिन्नाणी	नीम्बाहेडा	"
२०८	केसरीमनजी चुनीलालजी सांखला	नीमच	"
२०९	हीरालालजी मोतीलालजी	"	"
२१०	पूनमचंदजी दीपचंदजी	"	"
२११	केसरीमलजी लालाणी	"	"
२१२	गिरधारीलालजी सुराणा	ब्यावर	"
२१३	इंदरचंदजी धनराजजी जैसलमेरी	"	"
२१४	साह कुनणलालजी	"	"
२१५	श्रीजैनमंदिर	"	"
२१६	कसतूरचंदजी संघवी	छपरा (टोंक)	"
२१७	लालचंदजी छाजेड़	झालरापाटन	"
२१८	हमीरलमजी केसरीमलजी पटवा	कोटा	"
२१९	जोरावरमलजी दानमलजी पटवा	"	"
२२०	मानमलजी तेजमलजी	बूंदी	"
२२१	मनालालजी कन्हैयालालजी	"	"
२२२	कुनणमलजी कपूरचंदजी संघवी	परतापगढ़	"

नम्बर शुमार	नाम असामी	शहर	जिला
२२३	रायबहादुर संघवी जवेरचंदजी	सिरोही	राजपुताना
२२४	साह मिलापचदजी दीवान	,,	,,
२२५	पूनमचंदजी चुन्नीलालजी	,,	,,
२२६	समरथमलजी संघवी	,,	,,
२२७	चोधरी हुकमीचंदजी	,,	,,
२२८	संघवी हुकमीचंदजी	,,	,,
२२९	संघवी जीवणमलजी	,,	,
२३०	संघवी रूपचदजी	,,	,,
२३१	कोठयारी केसरीचंदजी	,,	,,
२३२	महता ठगनसिघजी	अलवर	,,
२३३	चोधरी हरखचदजी	,,	,,
२३४	भूमकलालजी जोंहरी	मंदसोर	,,
२३५	हिम्मतमलजी परतावमलजी	घाणीराव	,,
२३६	सागरमलजी निहालचंदजी	,,	,,
२३७	जसराजजी राजमलजी	,	,,
२३८	उदयचंदजी कुन्दणमलजी	,,	,,
२३९	सहाजी फतेराजजी नवलराजजी	,,	,,
	(२) मालवा		
२४०	चांदमलजी पटवा	रतलाम	मालवा
२४१	वोहरा जवेरचंदजी	,,	,,
२४२	खेताजी विरधाजी	,,	,,
२४३	जवाहरमलजी पारख	जावरा	,,
२४४	चोथमलजी वहादरमलजी	,,	,,
२४५	पूनमचदजी भसाली	सीतामउ	,,
२४६	माणकलालजी लालाणी	,,	,,
२४७	पदमसीजी नेणसीजी	इन्दोर	,,
२४८	घमरूसीजी जुहारमलजी	,,	,,
२४९	करमचदजी कोठयारी	उज्जैन	,,
२५०	अनूपचदजी	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
३०५	सुजाणमलजी भंडारी	हींगनघाट	मध्यप्रदेश
३०६	सहसकरणजी	,,	,,
३०७	रायमलजीमगनमलजी कोचर	,,	,,
३०८	हस्तुमलजी सत्तुमलजी	,,	,,
३०९	लालचंदजी हीरालालजी	,,	,,
३१०	हीरालालजी जोंहरी	नागपुर	,,
३११	साहबचंदजी हरखचंदजी	,,	,,
३१२	नथमलजी बखतावरमलजी	,,	,,
३१३	परताबचंदजी ढोगमलजी	,,	,,
३१४	संभीरमलजी खजानची	,,	,,
३१५	मयाचंदजी शंभूरामजी	,,	,,
३१६	मेघराजजी पूंगल्या	,,	,,
३१७	गुलाबचंदजी हरखचंदजी	,,	,,
३१८	जेठमलजी रामकरणजी गोलेछा	,,	,,
३१९	शेरमलजी रामचंदजी	,,	,,
३२०	हीरालालजी नानुलालजी	,,	,,
३२१	जसकरणजी सरदारमलजी	,,	,,
३२२	मूलचंदजी जेठमलजी चोरड़ीया	कामठी	,,
३२३	सनीदानजी बीकमचंदजी	पारसिउनी (Parseoni)	,,
३२४	करणीदानजी कोचर	,,	,,
३२५	तेजमालजी चोपड़ा	रायपुर	,,
३२६	मूलचंदजी सेठीया	,,	,,
३२७	मूलचंदजी बोथरा	,,	,,
३२८	उत्तमचंदजी गंभीरचंदजी	,,	,,
३२९	भीखमचंदजी करमचंदजी	,,	,,
३३०	चन्दनमलजी तेजमलजी	,,	,,
३३१	इन्दरचंदजी ढाग	,,	,,
३३२	भोजराजजी हीरालालजी	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
३३३	वालचदजी रामलालजी	रायपुर	मध्यप्रदेश
३३४	मुलतानचंदजी हीरालालजी	"	"
३३५	रघुनाथदासजी भीखमचंदजी	"	"
३३६	रिधकरणजी रावतमलजी	राजनादगांव	"
३३७	ठोगमलजी नवलचंदजी	"	"
३३८	सरदारमलजी हीरालालजी	"	"
३३९	आसकरणजी लक्ष्मीचंदजी	"	"
३४०	रुघनाथदासजी कवरलालजी	"	"
३४१	विनयचदजी सुखलालजी	"	"
३४२	साहबरामजी सूरजमलजी	"	"
३४३	रेखचंदजी हस्तीमलजी	"	"
३४४	मेघराजजी अमोलकचंदजी	"	"
३४५	वालचंदजी पूनमचदजी	"	"
३४६	मुलतानचदजी अनूपचदजी	"	"
३४७	गाम्मलजी भीखमचंदजी	धमतारी	"
३४८	मुलतानचदजी रावतमलजी	(Dhamtari)	"
३४९	श्रीचदजी मनसुखदासजी	"	"
३५०	हजारीमलजी रतनदासजी	"	"
३५१	रिखबचंदजी जुहारमलजी	"	"
३५२	मथुरादासजी खेमराजजी	"	"
३५३	गाढमलजी हीरालालजी	"	"
३५४	छन्नुलालजी कुन्दणमलजी	"	"
३५५	कनीरामजी कसतूरचदजी	"	"
३५६	धारचदजी चडेर	"	"
३५७	ठोगमलजी तखतमलजी	नरसिंघपुर	"
३५८	रूपचदजी जवाहरमलजी.	"	"
३५९	दोलतरामजी फूलचदजी	"	"
३६०	कीरतमलजी बुधमलजी	"	"

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
३६१	मूलचंदजी टोडरमलजी	नरसिंघपुर	मध्यप्रदेश
३६२	पूनमचंदजी	„	„
३६३	हजारीमलजी खूबचंदजी	„	„
३६४	जवाहरमलजी बच्छराजजी	„	„
३६५	नाहरमलजी पेमराजजी	„	„
३६६	तुलसीरामजी लूणावत	„	„
३६७	नानूरामजी जुहारमलजी	„	„
३६८	पिरथीराजजी लूणावत	„	„
३६९	जेठमलजी रूमरूलालजी	„	„
३७०	दयाचंदजी मंगलचंदजी	„	„
३७१	अखयचंदजी मूलचंदजी	„	„
३७२	कुन्दनमलजी लक्ष्मीचंदजी	„	„
३७३	गुलाबचंदजी कोचर	„	„
३७४	कनकमलजी	„	„
३७५	केसरीमलजी जिन्नाणी	नरसिंघगढ़	„
३७६	सूरजमलजी रंगलालजी	„	„
३७७	रतनलालजी पूनमचंदजी	करेली (Kareli)	„
३७८	पन्नालालजी भंसाली	„	„
३७९	कपूरचंदजी पूंगल्या	„	„
३८०	विनयचंदजी धनराजजी	आमगांव	„
३८१	पूनमचंदजी गोलेछा	(Amgaon)	„
३८२	बछराजजी दरड़ा	„	„
३८३	तेजमलजी गोलकचंदजी	कल्याणपुर	„
३८४	बिरजलालजी किशनचंदजी	(Kalyanpur)	„
३८५	रावतमलजी बालचंदजी	„	„
३८६	मगनीरामजी पेमराजजी महता	सिंघपुर	„
३८७	शिवपालजी धनराजजी	गोदरवाड़ा	„
३८८	सुजाणमलजी भोगमलजी	„	„

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
३८९	बखशीरामजी नहार	गोदरवाड़ा	मध्यप्रदेश
३९०	चांदमलजी ढूगड़	"	"
३९१	पन्नालालजी कोचर	"	"
३९२	पूनमचंदजी	"	"
३९३	नथमलजी छाजेड़	"	"
३९४	नाथूरामजी नहार	"	"
३९५	गोपालचदजी ड़ागा	"	"
३९६	नन्नाजी डागा	"	"
३९७	छोगमलजी हजारीमलजी	इटारसी	,
३९८	भवानीरामजी	"	"
३९९	हजारीमलजी	"	"
४००	छगनमलजी नहार	"	"
४०१	रतिचंदजी पारख	हुशागाबाद	"
४०२	मानमलजी गुलाबचंदजी	उमरावती	"
४०३	शोभाचंदजी छोगमलजी	हरदा	"
४०४	सूरजमलजी दफतरी	"	"
४०५	परतावमलजी भसाली	पोसर पोस्ट आफिस पीपाडीया	"
४०६	हणवंतरामजी	ववड (Bibu)	"
४०७	पोखरमलजी सुगनचंदजी	"	"
४०८	भोपचंदजी	"	"
४०९	रामलालजी गोलेछा	खापरीया	"
४१०	नानूलालजी	(Khaparia)	"
४११	घासीरामजी	"	"
४१२	लक्ष्मीचंदजी मिश्रीलालजी	बदनूर (Badn	"
४१३	सरूपचदजी गणेशराजजी	oor Betul)	"
४१४	पूनमचंदजी पुगरया	"	"
४१५	मुलतानचदजी सेठिया	"	"
४१६	उकारमलजी बोथरा	"	"

नम्बर शुपार	नाम आसामी	शहर	जिला
४१७	सुगनचंदजी दफतरी	चदनूर	मध्यप्रदेश
४१८	राजमलजी चोरडीया	,,	,,
४१९	हीरालालजी	,,	,,
	(४) सेंट्रेल इन्डिया एजेन्सी		
४२०	माणकचंदजी गूलाबचंदजी गूगल्या	सीपरी	सेंटल इन्डिया
४२१	समीरमलजी कांसटीया	मुरार	एजेन्सी
४२२	देवचंदजी करणमलजी	इसानगर	,,
४२३	नथमलजी गोलेछा	गुवालियर	,,
४२४	कुशलचंदजी सूरजमलजी नाहेटा	,,	,,
४२५	फतेहचंदजी महोणोत	,,	,,
४२६	चोथमलजी चुन्नीलालजी	जोपाल	,,
४२७	गोड़ीदासजी सेंसमलजी कांसटीया	,,	,,
४२८	मगनमलजी लूणिया	,,	,,
४२९	शोदासजी रिखजदासजी तातेड़	,,	,,
४३०	फूसमलजी सांढ	बरेली	,,
	(५) बंगाल.		
४३१	रायबहादुर बदरीदासजी मुकीम	कलकत्ता	बंगाल
४३२	लाजचंदजी मोतीचंदजी शेठ	,,	,,
४३३	हीरालालजी गुलाबसिंहजी जोंहरी	,,	,,
४३४	बाबू माधोलालजी डुगड़	,,	,,
४३५	अमोलकचंदजी पन्नालालजी पारख	,,	,,
४३६	जेठाजाई जयचंदजी	,,	,,
४३७	जैनक्लब	,,	,,
४३८	मोतीचंदजी नखत	,,	,,
४३९	हीरालालजी मुकीम	,,	,,
४४०	बनारसीदासजी जाड़चूर	,,	,,
४४१	रायबहादुर शिताबचंदजी नहार	अजीमगंज	,,
४४२	रायबहादुर मुन्नालालजी नहार	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
४४३	रायबहादुर बुधसिहजी डुदेडीया	अजीमगज	बंगाल
४४४	बाबूलालजी चोधरी	"	"
४४५	विजयसिंहजी डुदेडीया	"	"
४४६	धनपतसिंघजी नोलखा	"	"
४४७	जालमसिंगजी कोठयारी	"	"
४४८	विनयचंदजी कोठयारी	"	"
४४९	लालचदजी संघवी	"	"
४५०	कालुरामजी श्रीमाल	"	"
४५१	बाबू गनपतसिंघजी	"	"
४५२	बाबू ठतरपतसिघजी	बालूचर	"
४५३	महाराज बहादुरसिंघजी	"	"
४५४	उदयचंदजी बोथरा	"	"
४५५	जगतूसेठ गुलाबचदजी	"	"
	(६) पूर्वदेश		
४५६	कपूरचदजी ओसवाल	मिरजापुर	पूर्वदेश
४५७	तिलोकसीजी अमरसीजी	बनारस	"
४५८	निहालचंदजी आनंदचदजी	"	"
४५९	जैनसंस्कृतपाठशाला	"	"
४६०	रूपचदजी धर्मचंदजी	लखनेऊ	"
४६१	रतनचदजी उन्दरचदजी	"	"
४६२	नानगचंदजी नहार	"	"
४६३	बुधसिघजी जोंहरी	पटना	"
४६४	रुघनाथदासजी भंडारी	कानपुर	"
४६५	गम्भीरमलजी चांदमलजी	आगरा	"
४६६	कल्याणदासजी कपूरचंदजी	"	"
४६७	लुटनलालजी गुलाबचंदजी	"	"
४६८	अबीरचदजी गोटावाला	"	"
४६९	ठगनलालजी पालेचा	"	"

नम्बर शुमार	नाम श्रासामी	शहर	जिला
४७०	फूलचंदजी लोढा	श्रागरा	पूर्वदेश
४७१	श्रीजैनमंदिर सोतीकटला	"	"
४७२	श्रीजैनमंदिर नमक की म्हंडी	"	"
४७३	श्रीचिंतामणिजी का मंदिर	"	"
	(७) पंजाब		
४७४	लाला जसवंतरायजी जैनी	लाहोर	पंजाब
४७५	हीरालालजी गंगारामजी जावड़ा	"	"
४७६	महाराजमलजी फग्गुमलजी	अमृतसर	"
४७७	राधाकिशनजी पन्नालालजी	"	"
४७८	चुनीलालजी जावड़ा	"	"
४७९	श्रीजैनमंदिर	"	"
४८०	गूजरमलजी महरचंदजी	हुशयारपुर	"
४८१	श्रीश्रात्मानंद जैनसज्ञा	"	"
४८२	कालूशाजी जावड़ा	"	"
४८३	लेखूरामजी पोष्टमाष्टर	"	"
४८४	परजामलजी जावड़ा	जालंधर	"
४८५	प्रज्ञुदयालजी नाजर घोड़ावाला	लुधियाना	"
४८६	खुशीरामजी पंजाबरायजी	"	"
४८७	निहालमलजी जावड़ा	"	"
४८८	श्रीजैनमंदिर	"	"
४८९	श्रीजैनमंदिर	अम्बाला शहर	"
४९०	गंगारामजी बनारसीदासजी	"	"
४९१	नानगचंदजी गेंडामलजी	"	"
४९२	वजीरीमलजी जगत	"	"
४९३	श्रीश्रात्मानंदजैनसज्ञा	"	"
४९४	श्रीजैनमंदिर	गुजरानवाला	"
४९५	नानगचंदजी दोलतचंदजी	"	"
४९६	रलारामजी माणकचंदजी	"	"

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
४९७	भवानीदासजी ठाकुरदासजी	गुजरानवाला	पंजाब
४९८	कालूशाजी भावड़ा	”	”
४९९	रामचंदजी जीवणरामजी	”	”
५००	मुसद्दीलालजी भावड़ा	रावलपिंडी	”
५०१	नानगचंदजी गुरुदयालजी	”	”
५०२	पिंडीदासजी भावड़ा	”	”
५०३	नानकचंदजी सोहनलालजी	”	”
५०४	तुलसीरामजी पटवारी	परजीयां	”
५०५	वधावामलजी बोथामलजी	जम्मू	”
५०६	अमीचंदजी मूलामलजी	मांजापट्टी	”
५०७	मूलामलजी हुकमचंदजी	”	”
५०८	मनामलजी अनतरामजी	वेरोवाल	”
५०९	जती खुशीरामजी	समाना	”
५१०	हमीरमलजी रामजी	”	”
५११	शिवामलजी भावड़ा	”	”
५१२	श्रीजैनमंदिर	”	”
५१३	गंडामलजी चेतरामजी	जंडियाला	”
५१४	श्रीजैनमंदिर	”	”
५१५	श्रीजैनमंदिर	मुलतान	”
५१६	कुन्दणमलजी भीरूमलजी	”	”
५१७	आसकरणजी लूणया	”	”
५१८	ठाकुरदासजी बरसाती	”	”
५१९	श्रीजैनमंदिर	रामनगर	”
५२०	हेमराजजी हरदयालजी	”	”
५२१	पन्नालालजी सावणमलजी	”	”
५२२	अरजनमलजी भीनामलजी	”	”
५२३	रूपचंदजी बालचंदजी	देहरागाजीखा	”
५२४	सावणमलजी रामचंदजी	कपूरथला	”

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
५२५	नाथूरामजी ज्ञावड़ा	नकोदर	पंजाब
५२६	राधामलजी ईसरदासजी	जीरा	,,
५२७	दीनानाथजी ज्ञावड़ा	,,	,,
५२८	हरदयालजी माधोरामजी	,,	,,
५२९	श्रीजैनमंदिर	,,	,,
५३०	श्रीजैनमंदिर	सनूखतरा	,,
५३१	गोपीनाथजी अनंतरामजी	,,	,,
५३२	दीनानाथजी ज्ञावड़ा	,,	,,
५३३	हरदयालजी माधोरामजी	,,	,,
५३४	दीवानचंदजी ज्ञावड़ा	शाहपुर	,,
५३५	निहालचंदजी जगन्नाथजी	नारोवाल	,,
५३६	सावणमलजी ज्ञावड़ा	,,	,,
५३७	कुलझूमलजी ज्ञावड़ा	,,	,,
५३८	मगननाथजी अमीचंदजी	कसूर	,,
५३९	टेकचंदजी फगुमलजी	,,	,,
५४०	हीरानंदजी नथमलजी	,,	,,
५४१	नथुमलजी ईसरदासजी	सरहाली	,,
५४२	मयादासजी मथुरादासजी	किलादीदारसिंह	,,
५४३	नंदनलालजी मूलामलजी	पिंडदानखां	,,
५४४	शिवदानजी शामलालजी	सिरसा	,,
५४५	श्रीजैनमंदिर	मलेरकोटला	,,
५४६	अनंतरामजी कसतूरमलजी	,,	,,
५४७	चन्दणमलजी वरसाती	उरमाना	,,
५४८	जवाहरलालजी जैनी	सिकंदरावाद	,,
५४९	उमरावसिंहजी टांक	देहली	,,
५५०	श्रीचंदजी महता	,,	,,
५५१	हजारीमलजी रामचंदरजी	,,	,,
५५२	खूबचंदजी फूलचंदजी	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
५५३	नवलकिशोरजी ननामलजी	दहली	पजाब
५५४	दलेलसिंघजी जोंहरी	”	”
५५५	मालूमलजी जोंहरी	”	”
५५६	श्रीजैनमंदिर	”	”
	(८) काठियावाड		
५५७	कुंवरजी आणंदजी	जावनगर	काठियावाड़
५५ट	वकील मूलचंद नथुजाई	”	”
५५ए	वहोरा अमरचदजी जसराज	,	”
५६०	मोतीचंदजी गिरधर कापडीया बी. ए.	”	”
५६१	जीवराज उंधवजी बी. ए	”	”
५६२	कल्यानजी पदमसी शा बी. ए	”	”
५६३	नानचंद वेचरदास डोसी बी.ए	”	”
५६४	दी जैन यूनियन	”	”
५६५	श्री जैनधर्म प्रसारक सजा	”	,
५६६	जगजीवन धर्मचंद	”	”
५६७	शेठ आणंदजी कल्याणजी	पालीताणा	”
५६ट	वेलचद उमेदचंद महता	धोलकर	”
५६ए	माएर रतनचद मूलचंद महता	वीरमगांव	”
५७०	श्रीजैनज्ञानवर्द्धक सजा	मोरवी	”
५७१	नेणसी जाई फुलचंद	लखतर	”
५७२	शा ओघरुदास लल्लूजाई	बाटोद	”
५७३	संघवी नेमीचंद पानाचंद	घोघा	”
५७४	शा हीराचंद लालचंद	लीमड़ी	”
५७५	नानजी जीवणजी	जलालपुर	”
५७६	त्रीकमजी अंदरजी	धोलेरा	”
५७७	डाया जीवन	”	”
५७ट	अमरचंद तलकचंद	मांगरोल	”
५७ए	डा त्रिजुनदास मोतीचद शा (एल एम् एस्)	जूनागढ	”

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिल्ला
५७०	डी. पी. वरोडीआ. बी. ए.	जूनागढ	काठियावाड़
५७१	कल्याणचंद नरसीन्नाई	वला	,,
	(९) गुजरात		
५७२	लालन्नाई दलपतन्नाई	अहमदावाद	गुजरात
५७३	मनसुखन्नाई न्नगुन्नाई	,,	,,
५७४	मयान्नाई प्रेमान्नाई नगरशेठ	,,	,,
५७५	जैसिंघन्नाई हठीसिंघ	,,	,,
५७६	चिमनन्नाई शेठ	,,	,,
५७७	मोतीलाल कुशलचंद शा	,,	,,
५७८	हीरान्नाई कक्कल	,,	,,
५७९	मोहोलाल मगनलाल	,,	,,
५८०	न्नगुन्नाई फतहचंद कारन्नारी	,,	,,
५८१	प्रोफेसर नत्थू मंठाचंद	,,	,,
५८२	डाक्टर जमनादास प्रेमचंद	,,	,,
५८३	फकीरन्नाई कस्तूरचंद	,,	,,
५८४	जगजीवन जेठा शा	,,	,,
५८५	गिरधारीलाल हीरान्नाई	,,	,,
५८६	सूरजमल मनसुखराम	,,	,,
५८७	करमचंद गोकल	,,	,,
५८८	सांकलचंद मोहनलाल	,,	,,
५८९	सांकलचंद रतनचंद	,,	,,
६००	मूलचंद सांकलचंद	,,	,,
६०१	वालान्नाई मनसुखन्नाई	,,	,,
६०२	गोकलन्नाई अमथाशा	,,	,,
६०३	पुरुषोत्तम अमीचंद दलाल	,,	,,
६०४	दलसुखन्नाई लालन्नाई हाजी	,,	,,
६०५	जैसिंघन्नाई कालीदास	,,	,,
६०६	माणकलाल बगनलाल	,,	,,

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
६०७	अमृतलाल रतनचंद	अहमदावाद	गुजरात
६०८	फकीरभाई घेलाभाई	वडोदा	”
६०९	ताराचंद रिखभदास	”	”
६१०	जगजीवनदास सुदरजी	”	”
६११	गोकलभाई डुल्लभदास	”	”
६१२	वैद चुन्नीलाल हीराभाई	”	”
६१३	मगनलाल चुन्नीलाल वैद	”	”
६१४	गुलावचंद कालीदास	”	”
६१५	जेठालाल चुन्नीलाल	”	”
६१६	लालभाई रायचंद	”	”
६१७	अमीचंद माणकचंद	”	”
६१८	रायवहादुर वालाभाई	”	”
६१९	हीराचंद मोतीचंद जोंहरी	सूरत	”
६२०	मिलापचंद धर्मचद	”	”
६२१	धर्मचंद उदयचंद	”	”
६२२	नानचंद रायचंद	”	”
६२३	त्रिजुवनदास नगीनदास	”	”
६२४	पानाचद ताराचंद	”	”
६२५	गुलावचंद हरखचद	”	”
६२६	नानचद मिलापचंद	”	”
६२७	पोपटभाई अमरचंद	काम्वे	”
६२८	कपूरचद हीराचंद	”	”
६२९	अम्बालाल गुलावचंद	”	”
६३०	अनूपचंद मलूकचद	भडोंच	”
६३१	रायचद केसरीचद	विलीमोरा	”
६३२	मगनलाल जीवनचंद	डभोई	”
६३३	रूपचद वेलजी	खेरालु	”
६३४	वेचरदास गुलावचंद	महसाणा	”

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
६३५	नगीनदास सूरचंद	महसाणा	गुजरात
६३६	कल्यानजी डोसी	”	”
६३७	कसतूरचंद वीरचंद	”	”
६३८	वेणीचंद सूरचंद	”	”
६३९	जैन पाठशाला	”	”
६४०	कीलाभाई पानाचंद	ठाणी	”
६४१	शंकरलाल वीरचंद	कपड़वंज	”
६४२	वहोरा मीठाभाई अम्बादास	मांडल	”
६४३	महता मंगलजी ईसरदास	पालनपुर	”
६४४	शा. गिरधरलाल	”	”
६४५	विठलदास पुरुषोत्तम	आणंद	”
६४६	कमसी गुलाबचंद	राधनपुर	”
६४७	मोहनलाल टोकरसी	”	”
६४८	हुकमचंद कुशलचंद	”	”
६४९	वोड़ीदास सोभागचंद	”	”
६५०	गोकलभाई दोलतराम	विशनगर	”
६५१	जयचंद निहालचंद	वड़नगर	”
६५२	नगीनदास जेठाभाई	”	”
६५३	फतहचंद सांकलचंद	”	”
६५४	वरधवान वेचर	”	”
६५५	भीका दोलतराम	”	”
६५६	वीरचंद खेमचंद	”	”
६५७	हेमचंदजी नगरशेठ	पाटन	”
६५८	जवेरचंद गुमानचंद	”	”
६५९	हीराचंद खेमचंद	”	”
६६०	पानाचंद कजोड़ीमल	”	”
६६१	वकील मूलचंद चतुर	वडवान केंप	काठियावाड़

नम्बर शुमार	नाम आसामी	शहर	जिला
	(१०) मुंबई		
६६२	रतनचंदखीमचंद मोतीचंद नगर शेठ	मुंबई	मुंबई
६६३	वीरचंद दीपचंद सी. आई ई	"	"
६६४	प्रेमचंद रायचंद	"	"
६६५	फकीरचंद प्रेमचंद जे पी	"	"
६६६	धरमचंद उदयचंद	"	"
६६७	रावबहादुर माणकचंद कपूरचंद	"	"
६६८	फतहचंद कपूरचंद लालन	"	"
६६९	डुह्मन कल्याण परख	"	"
६७०	विरधीचंद पूनमचंद ढड्ढा	"	"
६७१	रतनजी वीरजी	"	"
६७२	श्री गोडी पार्श्वनाथजी का मंदिर	"	"
६७३	श्री शांतिनाथजी का मंदिर	"	"
६७४	मोहनलाल मगनलाल	"	"
६७५	चुन्नीलाल पन्नालाल	"	"
६७६	अमरचंप पी. परमार	"	"
६७७	माणलाल घेलाभाई	"	"
६७८	हीराचंद मोतीचंद	"	"
६७९	फूलचंद कस्तूरचंद	"	"
६८०	जीवनलाल भगवानलाल पन्नालाल	"	"
६८१	लखमसी हीरजी मेसरी बी ए एल् एल् बी	"	"
६८२	जेठाभाई दामजी	"	"
६८३	टोकरसी नेणसी	"	"
६८४	गुलाबचंद मोतीचंद	"	"
६८५	खीमजी हीरजी कापानी	"	"
६८६	वसनजी त्रीकमजी	"	"
६८७	मोतीचंद देवचंद	"	"

३४. तारों द्वारा याद दिहानी.

अलावा इन कुंकुमपत्रियोंके वक्तन फवक्तन जाति और धर्म के मुख्य और आगेवान महाशयों को बतौर याददिहानी, और ताकीद चिट्ठियां भेजी गई; और उन साहबोंको कान्फरेंस में जरूर शामिल होने के लिये आमंत्रण किया गया, और कान्फरेंस के दिन बहुत नजदीक आजाने पर नीचे लिखे हुए महाशयों को तार द्वारा याददिहानी की गई.

नम्बर	माह व तारीख	शहर	नाम आसामी	मज़मून
१	२२ सैप्टेम्बर सन्. १९०२	अहमदाबाद	शेठ लालभाई दलपतभाई	महरबानी करके तारीख मुकर्रर पर मित्रमंडलीसहित फलोधी के जलसे में पधारें
२	,,	,,	शेठ मनसुखभाई भगुभाई	,,
३	,,	,,	मिष्टर गोकलचंद अमथाशा	,,
४	,,	,,	,, भगु फतहचंद कारभारी	,,
५	,,	,,	,, मोतीलाल कुशलचंद शा	,,
६	,,	,,	माष्टर हीराचंद कक्कलभाई	,,
७	,,	,,	प्रोफेसर नत्थु मंछाचंद	,,
८	,,	मुंबई	शेठ वीरचंद दीपचंद सी. आई. ई.	,,
९	,,	,,	,, जीवणचंद लल्लूभाई	,,
१०	,,	,,	,, फकीरचंद प्रेमचंद जे. पी.	,,
११	,,	,,	मिष्टर अमरचंद पीपरमार	,,
१२	,,	,,	,, मोहनलाल पूंजाभाई	,,
१३	,,	,,	,, फतेहचंद कपूरचंद लालन	,,
१४	,,	,,	शा. वेणीचंद सूरचंद महसाणावाला	,,
१५	,,	भावनगर	शेठ कुंवरजी आणंदजी	,,
१६	,,	,,	मिष्टर जीवराज ओधवजी दोसी बी. ए.	,,
१७	,,	,,	मिष्टर नैनचंद वेचरदास दोसी बी. ए.	,,
१८	,,	,,	,, त्रिभुवनदास ओधवजी शा बी. ए.	,,

नम्बर	माह व तारीख	शहर	नाम आसामी	मजमून
१९	,,	,,	,, कल्याणजी पदमसी शा बी ए.	,,
२०	,,	अम्बाला शहर	,, मिसरीलाल बी ए.	,,
२१	,,	राधनपुर	शेठ कमलसीभाई गुलाबचंद	,,
२२	,,	भरूच	शेठ अनूपचंद मलूकचंद	महरबानी करके फलोधीके जलसेमे पधारें शेठ मनसुखभाई वगैरहके आनेकी उम्मीदहै
२३	,,	सूरत	जोंहरी हीराचद मोतीचंद	,,
२४	,,	पाटन	मुनिश्री कांतिविजयजी	महरबानी करके लल्लू वगेरह महाशयोंको फलोधी आने की ताकीद करे
२५	,,	भावनगर	शेठ कुंवरजी आणदजी	अहमदावाद मुवई वाले आते है आप मोतीचदको साथ लेकर जल्द रवाना होवें
२६	२३	,,	,,	अहमदावाद मुवई के तार आगये वे आवेंगे तुम आओ
२७	२४	सिरोही	मिष्टर अमरचंद पीपरमार	चिठी मिली सुस्ती छोड कर जल्द रवाना होओ और रवानगीका तार दो

३५. सब जगह से समाचार हिम्मत बढ़ानेवाले मिले.

इन चिठियो और तारों के जवाब मे जो हिम्मत बंधाने के जवाब राजपुताना, मालवा, पंजाब, बगाल, गुजरात, काठियावाड़ वगैरह के सुश्रावकोंकी तरफसे मिलेवे, इस ही रिपोर्ट के साथ शामिल किये गये है कि जिन के मुलाहिजे से वह वह खयालात उन महाशयो के इस कान्फरे-

स के निस्बत जो उन्होंनें प्रकट किये हैं मालुम हो सकते हैं. उन जवाबात की विशेष समालोचना की इस जगह जुरूरत नहीं समझी जाती है; इस कदर लिखना काफी समझा जाता है कि, कुल सरदारोंकी तर्फ से इस कार्य में पूर्ण सम्मति जाहिर हुई, सबने अपने अन्तःकरण से खुशी प्रकट की, सबने इस कान्फरेंस का भला चाहा, सबने इस उद्योग को ठीक बतलाया, कई सरदारोंने शामिल होकर इस कल्प-वृक्ष के पोदे को लगाकर कृतार्थ होने की खुशी जाहिर की, बहोतोंने किसी न किसीकारण से अपनी हाजरी से माफी चाही. परंतु खुशी की यह बात है कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से सब साहबोंने इस बात में अपनी सम्मति प्रकट की और इस सम्मति से हमलोगोंकी हिम्मत बहोत बढ़ी—

३६. श्रेयःकाम में विघ्न. मातु श्री और जेष्ठ भ्राता की बीमारी.

श्रेयःकाम में विघ्न भी बहुत होते है. इस प्रथम कान्फरेंसके शुरू करने में जो कोशिश की गई, वह निष्फल जाती हुई दीखने लगी. जब कान्फरेंस के दिन नजदीक आने लगे, तो एक दम जनरल सेक्रे-टैरी की मातुश्री और जेष्ठभ्राता के कफ, खांसी, बुखार की बीमारी प्रकट हुई, कि जिस कारण हमारा फलोधी जाना दुश्वार मालुम होने लगा इधर को बीमारी तरक्की पाने लगी उधर कान्फरेंस के दिन न-जदीक आने लगे,और इस उम्मीद पर कि कान्फरेंस के समय तक बी-मारीसे निवृत्त होजावेंगे हमने चिठ्ठीयां तार वगैरह के देने में कोता-ही नहीं की परंतु बीमारीने भी इसही वक्त मोका पाया. जब २३ सैप्टे-म्बर आगई, और बीमारी में कुछ फरक नहीं पड़ा तो इधर को बीमारी का खयाल उधर को अपनी जबान की पाबंदी का खयाल पैदा हुआ. हरवक्त संकल्प विकल्प रहने लगा. इधर को बीमारी का जोर उधर को कान्फरेंस के भरने का खयाल, दोनों को तराजूमें डाल कर तो-ला गया तो यह ही निश्चय किया कि अछे काम के करने में अछा ही फल होगा. बीमारी जुरूर मिट जावैगी यह मोका फिर नहीं आने-का. इस खयाल को मातुश्री तथा जेष्ठभ्रातानें और भी पुष्ट किया, और इस बात पर बहुत जोर दिया कि शिरपर उठाये हुए काम को हरगि-

ज नहीं छोड़ना चाहिये हम खुद अफसोस करते हैं कि हमारे बीमारी होने की वजह से हम खुद ऐसे शुभ काम में शामिल होने से अशक्त हैं, हमारी प्रार्थना अधिष्ठायक देव से यह ही है कि, तुम्हारे विचारे हुवे काम को फतहमंदी के साथ पार पटके चुनाचे इन दोनों बीमारों को अधिष्ठायक देव की मरजी पर छोड़ कर हम मेरतारोड स्टेशन को रवाना हुए और वहां पहुंच कर प्रथम जैन कान्फरेस के फल के चाखने को उत्कंठित हुए

३७. २० सेपूटेम्बरसे यात्रियों की धूमधाम.

इस समय कुंकुमपत्रियो के ज्यादा शहरो मे जाने से और कानूफरेस के जल्से के देखने की उम्मीद मे २० सेपूटेम्बरसे ही यात्री आने लगगये थे. और परदेशी डेलीगेटोके वास्ते यहांसे आदमी आगतस्वागत के लिये पहले ही भेज दिये गये थे. नई बनी हुई कोटड़ियो मे से इन साहबो के ठहरनेके लिये थोड़ी कोटडियां रीजर्व रक्खी गई थीं परंतु एक आदि कोटड़ी में रीजर्व रखने पर भी दूसरे यात्रियोंने कबजा कर लिया था–

३८ डेलीगेटों की पेशवाई.

२४ सेप्टेम्बर की सुबह और शाम की गाड़ी में और२५सेप्टेम्बरकी सुबहकी गाड़ी तक यात्रियों की और डेलीगेटों की बड़ी धूमधामसे आमद थी– स्टेशन पर "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" की तर्फ से पेशवाई डेलीगेटान का इत्तजाम किया गया था–स्वामिभाइयों के रेल से उतरते ही उन के साथ होकर उन को ठहरने की जगह पर ले जाते थे स्टेशन से श्रीपार्श्वनाथस्वामी का मंदिर बहुत ही नजदीक है, इस लिये स्टेशन से उतरते ही फोरन डेलीगेट लोग मदिर में पहुंच जाते थे. उन की रसोई वगैरह का इंतजाम एक ही जगह पर किया गया था-

३९ हमारी भूल चूक को डेलीगेटोंने माफ फरमाई.

चूकि यह पहले ही पहले इस मरुधर भूमी मे ऐसा इतफाक हुआ था, इस लिये विदेशी यात्रियों व डेलीगेटो ने कृपा कर के जो भूल

४१ हमदर्दीकी चिठ्ठियों में से चंद चिठ्ठियां

(१) वंगाल प्रांत.

१ रायबहादुर वदरीदासजी मुकीमने कलकत्ता से मिती न्नादवा वदि ७ सम्वत् १ए५ए की पत्रीमें इस खुलासेसे लिखा हैः–

आप जो तीर्थों की आसातना मिटाना, धर्म की उन्नति, जाति का सुधारा के काम पर तत्पर हुवे हैं, सो निहायत खुशी की वात है. आप की महनत सफल होगी, और इस मोके पर न्नी हमारा आने का वहुत इरादा था, और वीरचंदजी दीपचंदजी से न्नी कहा था कि आप को जुरूर चलना होगा लेकिन उनका इरादा कम मालुम हुआ और हैमिलटन के नीलाम ता. २१ सैप्टेम्वरको शुरु होके, ७ सात दिन होगा, जो दिन मेले के हैं; नीलाम के न्नी वे ही हैं. अगर थोड़ा आगें पीछे होता तो जुरूर आते और श्री मकसीजी के काम के वास्ते लश्कर फिर जाना पड़ेगा, नहीं तो ऐसे काम के लिये हम को आने का उजर नहीं होता–

---

२. बाबू माधोलालजी दूगड कलकलकत्ता से तारीख ए अगस्त सन् १ए०२ के पत्र में लिखते हैंः

"No doubt you have taken a good view for the benefit of the sufferers and I am also of opinion that some arrangements must be made to relieve the distressed."

३. जोंहरी लान्नचंदजी मोतीचंदजी कलकत्ता से तारीख ३० जोलाई की चिठी में लिखते हैंः–

"We are quite agreeable to the proposal made by you and shall try our best to be present at the Confeience and to induce others to join with the movement."

---

४. बाबू अमोलकचंद मुनालाल कलकत्ता से तारीख १४ अगस्त सन् १ए०२ की चिठी में लिखते हैंः–

"The contents of your letter grieved me much to learn the State of affairs amongst the Jain Community and my most heart-felt sympathy is offered to you and those who are desirous of a reform"

For my part I am willing and ready to help in bringing about a reform as suggested by you and will make it my duty to invite the attention of the other friends of mine to the circumstances of the case, but I would be much obliged if you would suggest some means or method by which our aims may be accomplished to the best advantage

As regards my coming on the 25th September I would consider it a great blessing from Heaven should I have the opportunity to join you there for such a noble cause as you suggest and may the great good Lord help me to be the humble member of the Community to take such an honourable step

In my humble idea it strikes me most forcibly that a committee should be formed of the most influential and religious members of our community and this Committee should be vested with the rights to be a governing body over the accounts and the disbursements of the different temples in India If it be necessary to move the Government to obtain for the Committee the right so to do, we shall have to proceed in a civil suit under Section 539, Chapter XL of the Civil Procedure Code

---

५. राय वहादुर वावू वुध सिंहजी दूदेड़ीया अजीमगंज से तारीख ११ अगस्त सन् १९०२ के पत्रमे लिखते हैं:-

"In response to your letter of the 26th ultimo, I beg to inform you that I have full sympathy with the proposition that you wish to lay before the Jain Conference to be held at Merta Road for the consideration of the members as to how the chronic indegency of the poor brethren of our sect is to be removed and how their sufferings can be alleviated'

The choice of date and locality to hold the Conference secure my unhesitating approval and I fancy I should be guilty of apostacy and want of fellow feeling if I do not take this opportunity of conveying my sincere thanks to yourself for your attempt to do a lasting benefit to our poor brother Jains who are being crushed under the galling scarcity of food in recent years You are very correct when you say that thousands of our creed are suffering from dearth while a few of us are lying in the lap of superfluity A meeting of the leaders of our Samaj to devise means to improve the present state of affairs is absolutely needed and the means that you have proposed to effect the purpose seem to me to be the best

Excuse me for my inability to state definitely as to my taking an active part in the proceedings of the ensuing Conference so early, but when the time comes, I shall spare no pains to take such steps as the then circumstances will permit

---

६. रायबहादुर मुन्निलालजी नहार अजीमगंज से तारीख २१ सैप्टैम्बर सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"I regret exceedingly that owing to certain circumstances I am quite unable to be present with you on the occasion and sincerely trust you will kindly excuse me.........Next year, leaving emergency I shall try my utmost to join you there in the National Conference. Wishing you every success in your unique endeavours &c.'

---

(७) पंजाबप्रांत.

१. नानक चंदजी दोलतरामजी नावडा गुजरांवाला से अपने खतमें लिखते हैं:—

"नवाजिशनामा जनाब का पहुंचा बहुत खुशी हांसिल हुई, और आपने धर्मकार्य में कमर बांधी है, दिन रात आपका धर्म में खयाल रहता है आपने जलूसा सालाना के बारे में फलोधीपार्श्वनाथ तीर्थको लिखा है; बहुत अछा है"

---

२. रलारामजी मानकचंदजी नावका गुजरांवाला से तारीख १३ अगस्त सन् १९०२ के खत में लिखते हैं:—

"नवाजिशनामा पहुंचा, वाकइ आप का खयाल काबिल कदर और मोतियों में तोलने के लायक है नगवान् आप जैसे धर्म के प्रेमी और काम के खैर ख्वाहोंकी उमर दराज करे, और आप के काम में बरकत दे उमीद है कि आप की मुजविजा सालाना कान्फरेंस बहुत ही मुफीद साबित होगी मोजूदा जमाने में सब मजाहब तरक्की के मैदानमें कदम बढा रहे हैं अगर सब से पीछे हैं तो हम खुवावे गफलत में पड़े हैं अफसोस कि हमारी कोम में अनी तक अमूमन जहालत और नफाक की गरम बाजारी है आप जैसे लायक असहाब अगर कमर हिम्मत बांधें तो हमारी ऐन खुश किसमती है जुरूर कनी न कनी कोम तरक्की की मंजिले मकसूद पर पहुंच जावेगी".

३. श्री आत्मानंद जैनसना के सेक्रेटरी मिष्टर मिसरीलालजी अम्बाला शहर से तारीख २९ अगस्त सन् १९०२ के खत में लिखते हैं:—

" खत आपका पहुंचा मशकूर फरमाया इस में कोई शक

नहीं है, कि जो इरादा आपने चंद तजावीज करने का किया है, वह जैन जातिके लिये निहायत ही मुफीद है–प्रार्थना है कि आप अपने इरादेमे कामयाब हो ”

---

४ गंगारामजी बनारसीदासजी भावड़ा अम्बाला शहरसे तारीख ११ अगस्त सन् १९०२ के खतमें लिखते हैं:–

“इनायतनामा मुरसला पहुंचा, आज उस को सभा में पढ कर सुनाया जावैगा, और ताकीद की जावेगी मैं इतवार तक जयपुर पहुंचूंगा. ”

---

५ तुलसीरामजी पटवारी परजीयां से तारीख २३ अगस्त सन् १९०२ के खतमें लिखते हैं·–

“ मे आप के परोपकारका शबोरोज धन्यवाद देता हूं, मगर इस जमाने मे हम लोगोके पुन्य कमी पर है, वरना आप जैसे परोपकारी भाई जो भाइयों के लिये और धर्म कार्य में तन मन धन से कोशिश कर रहे है और फिर भी हमारी आख गफलत की नीद मे है ”

---

(३) राजपुताना–

१ रायबहादुर शेठ सोभागमलजी ढढ्ढा अजमेर से तारीख ४ अगष्ट सन् १९०२ के पत्रमें लिखते है.–

“ The undertaking, I feel sure, is noble in all its aspects and fitly deserves infinite merit . wishing you every success in your praiseworthy attempts &c ”

---

२ रायबहादुर संघवी जवेरचंदजी सिरोहीसे तारीख १ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र मे लिखते हैं·–

“ फलोधीजी महाराजरा तीर्थरी सभा मे मने शरीक होवारी लिखी सो ठीक है, में बहोत खुश हुआ और म्हारो इरादो भी ऐसा सवाबरा काम में शामिल होवारो जुरूर थो, मगर आज कलरा मोसम वा दूसरा जुरूरी कामरा सबब से शामिल जलूसे सवाब में होणे से मजबूरी है. ”

---

३. संघवी बछराजजी जोधपुरवाले उदयपुर से मिती सावण वदि १२ सम्वत् १९५९ के पत्रमें लिखते हैंः—

" ऐसे उत्तम कार्य की उन्नति होना मैं अंतःकरण से चाहताहूं, लेकिन हाल में यहां पर श्रीमान् दरवार की सेवा में हूं जिससे कान्फरेंस में नियमित समय पर आने का वादा करने से मजबूर हूं; अगर वक्त पर फुरसत होगी तो आसकूंगा जो महाशय ऐसे कार्य की उन्नति करते हैं उनको धन्य है "

---

४. महता फतेलालजी उदयपुरसे तारीख १९ सैप्टेम्वर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैंः—

" Owing to ill health since May last, I am sorry I could not send you a reply to your letter in time. In such matters the help of those who are strict Jains will be more useful than that of mine as I am practically a Vaishnav. I am afraid I shall not be able to join the meeting for which please excuse. Wishing you every success &c."

---

५. पटवा शेठ केसरीसिंघजी कोटा रामपुरासे मिती सावण वदि १२ सम्बत् १९५९ के पत्रमें लिखते हैंः—

" चिठी आप की आई. कान्फरेंस फलोधी धर्म सभा के वास्ते लिख्यो सो मैं गाड़ीमेंसे पड़ गयो, जिणसे आसकूं नहीं.

---

६. शेठ मिलापचंदजी नेमीचंदजी धाड़ीवाल वीकानेरसे तारीख २० अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैंः—

" .... The work you intend to undertake is really a very good and benevolent one. May God give you every success in the undertaking........."

---

७. चांडावत नोरतनमलजी बी. ए; एल्. एल्. बी; जोधपुरसे तारीख १० अगष्ट सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैंः—

" .... You are really doing a great deal to further the advancement of our community and we ought to be all proud of you I shall try my best to come over to Shri Phalodiji this year when I hope to make the acquaintance of so many' jewels of our community and derive immense benefit from your learned lectures...

---

(४) मालवा–

१ मुनि श्रीहंसविजयजी मुकाम इंदोरसे मिती सावण वदि ८ सम्वत् १९५९ के पत्रमे लिखते हैं:–

" चिठी आपकी आई आपने तीर्थयात्राका तथा जाषणका हाल लिखा था, सो पूनमचंदजी सांकुसुखा आदि सन्नासदोंको सुणा दिया है "

---

२ शेठ चांदमलजी पटवा रतलामसे मिती आसोज वदि १ सम्वत् १९५९ के पत्रमें लिखते हैं:–

' कागज राजका मिती जादवा सुदि १४ का लिखा हुआ आया, श्रीफलोधीमे जैनधर्मकी महासनामें मेरे लिये आनेका लिखा सो विचार तो वहोत वरसोसे है परंतु कर्म टूट्यां आणो वणै "

(५) मुंवई.

१. शेठ वीरचंद दीपचद सी आई. ई. तारीख १ अगष्ट सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं:–

" I have learnt that a religious fair is to be held at Phalodi on the 25th and 26th September and that you are going to issue invitations and you ask me to join you in the fair along with others for which I thank you very much But I am sorry to say that I am unable to comply with your request as I have to attend several other religious matters on this side which necessitate to keep myself here "

Then Maxiji matter keeps me always engaged here We have opened a fund to aid the suffering Jains on the side of Gujrat and Kathiawar, which has come to Rs 15000 and I have to make arrangements to distribute the same Also I have been invited at the Delhi Durbar for which I have to make previous arrangements for my going

All these engagements prevent me to join you at this time but I will try to attend the next year if every thing goes on well I wish you success in the noble cause you have undertaken '

---

२ शेठ जीवणचंद लल्लूनाई शेठ धर्मचद उदयचंदकी तरफसे तारीख ४ अगष्ट सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं.–

"I am in receipt of your valuable circular of the 29th Ultimo re-holding of The Jain Conference and in reply I have much pleasure to state here that my views are in perfect sympathy with the sentiments expressed in your letter under reply."

It is true that your noble views require a wide circulation among our co-religionists and your laudable attempts to hold a Conference at one of the most ancient, honoured, and sanctified shrine of our Jain faith are worthy of hearty co-operation and encouragement. But it is a great pity that the philanthropic doctrines of our Tirthankaras have been, for the most part, underrated by the present generation and thus we lack in duties towards our fellow-brethren and some of the remnants of the ancient shrines.

To protect all those of our co-religionists from starvation during famine and to regenerate those remnants of our religious sanctity, a constitutional body like a conference is quite essential and it is my perfect conviction that you will leave no stone unturned to introduce a representative element into its constitution from different divisions.

In conclusion I shall have much pleasure in taking part in the Conference either personally or through any of my sons with full instructions from me. I hope that you will continue your endeavours at any risk for the welfare of our Community and I pray to our Tirthankaras that you may achieve golden success in your laudable attempts

---

३. शेठ फकीरचंद प्रेमचंद जे. पी. तारीख २० सप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं:—

"........Yes, your object is indeed very laudable and your efforts to invite our people at least once a year are really praiseworthy. Owing to certain Sansarik matters, which I cannot leave aside under any circumstances, I very much regret I cannot attend such a work as you are doing and which I would otherwise follow most heartily. If I had time I would have sent an address to be read over there suiting the occasion but at present I have no time nor mind. I shall be glad to be concerned with your Sabha and shall thank you to send me its rules and regulations."

---

४. शेठ माणकलाल घेलाभाई जोहरी तारीख १ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"........I quite agree with the excellent proposal you have made for the growth of our community But your second proposal for holding that Conference at Phalodi on the Jodhpur Bikanir Railway is rather unagreeable as there will be a very rare number of educated Jains assembled at Phalodi

owing to a great portion of the Marwari Community being ignorant and in my opinion it would be far better if the Conference were to be assembled at a place like Bombay, Palitana or Ahmedabad

Wishing you every success in your sacred efforts &c "

---

५ मिष्टर मोहनलाल हेमचंद आनरेरीसेक्रेटैरी जैनक्लब तारीख ४ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैंः—

" As for holding a Jain Conference, I am of opinion that this is very essential and all Jains ought to lose no time for this, but according to our old ideas and not to destort them and to honour them, it would be most advisable, in my opinion, to hold the Jain Conference first at Palitana, Ahmedabad or Bombay

I shall be very glad to give you every assistance and aid you may require on my behalf and I fully appreciate your views in Jain Conference"

---

६ मिष्टर मोहनलाल पूजाभाई तारीख २३ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैंः—

" We have full sympathy towards the Phalodi Jain Conference and we hope its success for ever Yesterday a Jain Sangh was held here in Godiji's temple and they have shown their wish to call a Jain Conference at Palitana on Kartiki Poonam "

---

७ मिष्टर फतेचंद कपूरचंद लालन तारीख २४ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैंः—

" Dear Brother mine, in the Order of Shri Supreme Mahavir, your brother Lalan strove a great deal to recover from his recent illness, but he could not He, however, made up his mind, though weak and fainting occasionally, to start on the 23rd instant if he could get any company One best friend Mr Veni Chand Soor Chand agreed but could not accompany on account of other religious pressing duties on hand You as well as our Brethren, he hopes, would excuse Lalan this time But he should be considered as present, sympathising the every cause of our Jain Conference He would do any thing he could to further its cause in future

It has been resolved by one of our Sangha meetings, held at Godiji, to hold the next Conference at Shri Tirtha Dhiraj Shri Shatrunjaya Love and Progress and Victory to The Truth Supreme proclaimed by our Blessed Shri Mahavir!

---

८. मिष्टर अमरचंद पीपरमार तारीख ३० जोलाई सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"........I have got no words to express myself fully on reading your very elaborate and well-conceived letter. What an amount of fellow-feeling and eagerness to serve Jainism must be at your heart. We are all dormant now and look to our own interest......Only persons of your type are required to steer the ship of our Reform......I do not flatter but am convinced that a gentleman of your position and talents can do what is required.

I on my part am ready to join in the Proceedings. In my opinion, Phalodi is not a centre. However it is most encouraging that you have been agitating the question and doing so much."

---

९. मिष्टर दुर्लभकल्याण पारख तारीख २ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"Extremely glad to receive your most esteemed favour showing ardent zeal and sincere feelings for the welfare of Jainism and its followers, in body, mind and heart, and congratulate you most heartily for your never tiring labour to give birth to one Jain Conference of long and substantial life that may bring home some long felt and wanted reforms and pray that your labour will meet with success.

To begin work in proper direction is half the battle won and to begin work in wrong direction is half the energy lost. Jain Conference is a subject of grave and serious consideration in order to make it an energetic and not the dead body like the Ahmedabad Congress. Success of the Conference depends upon the sincerity, energy, self-sacrifice and moral courage of its supporters. All who are concerned in it as champions must give shoulders to shoulders. They should not be only praise thinkers but should form themselves subject of praises for others.........My dear and every where respected patron of sincere feelings and enlightened views, do not proceed further unless you see on your side some others who are not only weeping for the non-existence of the Conference, but working to bring it into existence, like one wealthy man bewailing his wife's barrenness and trying his utmost by whatever means his wife's pregnancy. In short, first of all try to collect some satisfactory number of supporters (not silent but working) like your goodself. All of them should like and make additions and not subtractions. I hope you shall be able to collect the Dharma Foj as stated. If you support this argument, I wait your orders to work in the above-shewn direction...... ...."

---

१० रावसाहब हीराचंद मोतीचंद तारीख २३ सेप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं.

"Received your telegram glad to know the contents

I am very sorry to let you know that I am unable to attend the Congress on account of two certain reasons and so I hope you will certainly excuse me

One is here I am busily engaged in the affairs of Makhsiji, and within a few days I shall have to go there with Seth Veerchand Deepchand and others

The other is that our Sangh was gathered at the temple of Shri Godiji Maharaj and there a resolution was passed that the Phalodi Meeting should be postponed for the present and it should be held in the month of Kartik at Shri Palitana"

---

११. शुभेछक मित्रमंडलकी तरफ से तारीख २४ सेप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्र में लिखा आया है:–

"On behalf of the Mandal I beg to give you their best regards and heartiest thanks for your favour of the 10th instant. I have been further instructed, by the same Mandal to write that we have decided to send a delegate from amongst us "

---

१२ शा वेणीचंद सूरचंद महसाणावाला मुकाम मुंबईसे तारीख २४ सेप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं

" You are fully right in proposing the necessity of a Jain gathering somewhere Seth Veerchand Deepchand in Bombay also told me some days back that letters were received from Mr Golabchand Dhaddha and the facts contained in them being most urgent and advantageous, must be paid attention to At the same time I had an interview with Muniraj Shri Nem Vijeyji in Ahmedabad and Mr Koonwarji Anandji in Bhawnagar on this topic, and they all are of opinion that it would be more beneficial if the gathering be held at Palitana on the 15th of Kartik Sudi Seth Mansookhbhai and Lalbhai of Ahmedabad even are in favour of Congress and as above-said all being of one opinion you will fortunately succeed in your attempt ."

---

१३ मिष्टर चिमनलाल रामचंद पारख तारीख २१ अगष्ट सन् १९०२के पत्रमें लिखते हैं:–

"मुंबई समाचार के अखबार मे मिष्टर पीपरमार की दी हुई खबर पढ़ कर खुशी हुआ के जाद्रवा वदि १० कि रोज श्रीफलोधीमें कान्फ-

रैंस भरी जायगी इस काम के वास्ते आपनें जो कुछ प्रयास किया है वह बेशक लायक तारीफके और जैन कोम के वास्ते फायदामंद है.

(६) गुजरातप्रांत.

अहमदावाद

१. शेठ मनसुखभाई भगुभाई तारीख १७ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं:—

"I am much obliged for yours of the 16th instant I have a mind, no doubt, to come to Phalodi, and would not let go any opportunity to attend, unless some urgent business require my presence in Bombay which I expect shortly. In that event I would be sorry not to be able to attend. At any rate, however, your object has my full sympathy, and if I cannot attend, I shall send some one on my behalf."

२. शेठ लालभाई दलपतभाई तारीख २४ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं:—

"I am very thankful to you for your letters and timely wire, reminding me of the Phalodi meeting. I am very sorry at not being able to attend which, pray, excuse. Moreover I am suffering with acute stomach complaint, for the last eight days. Kindly do convey my heartfelt sympathy with the object you have at heart, to the meeting. I think sincere unity alone can save our people from the degeneration now going on among the Jains. The only way to unite is the holding of such meetings, if not oftener, at least once a year. I think they should be held at different places each year. You might also appoint two or three General Secretaries, say, yourself, Mr. Kanwarji Anandji of Bhawnagar, Mr. Gocul Dass of Tatv Vivechak Sabha from Ahmedabad The excellent work you have begun, might thus be given a definite, permanent shape........"

३. शेठ जैसिंघभाई हटीसिंघ तारीख ११ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"I am in receipt of your esteemed favour of the 26th ultimo expressing your intention to hold a Jain Conference at Phalodi in the next month for which I am obliged. I am really glad to say that your motive is very praiseworthy and would lead to beneficial results if it finds a good support from our people.

I shall be very happy to accept your invitation and be present there......"

४ डाक्टर जमनादास प्रेमचंद तारीख २२ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्रमें लिखते हैं:-

" I have a great mind and desire to attend the Jain Conference organized under your direction and I shall try to come if I am not unavoidably detained In honouring the Jain Conference by my presence, I honour myself and my Chatoorbedh Sangh for whose weal and welfare we are inseparably bound to exert ourselves with a real heart and soul individually and collectively for a common cause

Now in conclusion I heartily sympathise with the objects of the Jain Conference and wish a hearty and cordial success to it And for the furtherance of the objects of the Jain Conference I heartily wish you to count upon my adequate sympathy and support with my Pranam to all my brethren assembled together for the dispassionate and considerate deliberations on the Protection, Spread and Rise of Jainism and on the Proverbial Prosperity of Jainas of by gone times, physically and socially, mentally and intellectually, commercially and spiritually You are with my hearty congratulations on your long cherished objects, Success Welcome to read this humble letter of mine before my brethren, who, I trust, will pardon me for my unavoidable absence from such a grand, unselfish, philanthropic, patriotic and obliging assemblage of co-religionists under the style and title of

" Jain Conference' —

५ मिष्टर नगुनाई फतेचद कारभारी तारीख ३ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं.-

" I am really happy to hear from you that you are going to hold a Conference on the 25th and 26th proximo This is a noble cause and all is due to your feelings towards our selfish brethren My dear Brother, I thank you with all my heart for the kind trouble you have taken in jolting me a few lines and more so because though you have to perform a very responsible duty you are doing your best for your fellow brethr [illegible] if an humble man like myself fails to join such a noble work w[illegible] and his brethren, I consider myself a traitor I shall be happy to he[illegible] from time to time and w[illegible] that that day may soon come so that [illegible], the[illegible]

६. मिष्टर मोतीलाल कुशलचंद शा. तारीख १४ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैंः—

"I can hardly express the feelings that were created in me when I received your kind favour of the 26th ultimo, which were of two sorts; viz, one for your kindness remembering a stranger that had only a passing acquaintance with you when you were here last and secondly it was a joy at hearing the at least a partial fulfilment of a hope that I cherished for years together for the regeneration of our Jain brothers You have more than pointed a vivid picture of the fallen state of ourselves and our religion. (Unless) some efforts like one which you are now starting are made we shall have to go downwards still. Gone is the study of our religious philosophy by our brothers, gone is also the feeling of reverence for our sacred places and lastly gone for ever is perhaps (I hope I am wrong) our past prosperity. I have been for long maturing a plan for doing something in the matter. It was however, very difficult, if not impossible, for a man like myself to give it any shape owing to want of spmpathy from our own brothers with whom I talked over the subject. It was by accident, I should say that I formed your acquaintance. I found to my joy and surprise that there were better and abler persons who were also not only thinking like myself, nay more, actually working in the line which had only an imaginary existence in my heart.

......I hope to be there on the meeting days and request you to kindly inform me whether I shall be allowed to speak out my views in Hindustani language before our assembled brothers......"

७. मिष्टर गोकलचंद अमथाशा तारीख ७ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के कार्ड में लिखते हैंः—

"Thanks for your Post Card. I value the matter as my life and will do the best I can—I wish I be free in time."

८ माष्टर हीरांचंद ककलभाई तारीख १० अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैंः—

"आप जे जैन कांग्रेसनु काम उपाडयुं छे ते घणूं स्तुतिपात्र छे में मारा मित्रो नें ते विषय वात कही छे. श्रीफलोधी पार्श्वनाथना वार्षिक दिवसे जैनी भाइयोनो मेलावडो थाय छे ते वखते त्यां आववाने में मारा मित्रानें आमंत्रण करयूं छे—

ए महता मंगलजीभाई ईश्वरदास पालनपुरसे तारीख ए अगष्ट सन् १९०२ के पत्रमे लिखते हैं.—

"I have duly received your letter of the 31st ultimo and have great pleasure to state that the views conveyed therein and the objects of the Conference you are going to convene are very excellent and will of course do much good if carried out

Wishing you and Shri Phalodi Tirthonnati Sabha success in your praiseworthy efforts &c"

१० मिष्टर फतहचद रामचंद कारभारी सादडासे तारीख २१ सैप्टेम्बरके पत्रमे लिखते हैं —

" I have full sympathy with this noble cause and heartily thank you for the kind trouble you take in the interest of our community I hope you will try to hold the next meeting at Palitana

I have already instructed my son Bhagu F Karbhari to proceed to Phalodi

Really I am sorry for not joining our grand meeting but I hope my absence will be represented by my son"

११ राय वहाडुर वालाभाई वडोदा से तारीख२ अगष्ट सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं.—

"I duly received your very interesting and energetic letter of the 31st

I entirely agree with you in your view of the present condition of the Jains and the necessity there is for improvement But it is a Herculean task and would require much trouble to accomplish it In my humble opinion it will be better to hold the Conference as you propose and enlist the sympathy of those that are present there But you should remember that most of our people are illiterate and as you have to deal with such a material you should have for the object of the Conference extremely simple matters in the commencement, I mean objects which the majority will understand of itself and will be inclined to act

I am unable to join myself as I am in service I hope you will have every success

१२ मिष्टर मगनलाल चुन्नीलाल वेद आनरेरी सेक्रेटेरी श्री आत्मारामजी जैनपाठशाला व पुस्तकालय वडोदा से तारीख २३ सेप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्र मे लिखते है —

" ......The whole credit of this Conference is due to Brother Golabchandji. I wish every success to his unselfish undertaking.'

१३. जोहरी हीराचंद मोतीचंद सूरतसे तारीख २ अगष्ट सन् १९०४ के पत्र में लिखते हैं;

" I have duly received your kind letter No. 261 and I fully agree with you as to the views expressed in it.... ....I am willing to join the meeting you have kept on the fair occasion but I single-handed from this side of the country cannot do anything in it. So if you invite other Sethias on this side (and they are not a few) I conjointly with them will do what I can in the matter. If they will join the Sabha, I will very willingly attend the Sabha and dischaige my duty."

१४. शाह जवेर तथा रतनचंद कावीठासे मिती भादवा वदि ५ सम्वत् १९५८ के पत्रमें लिखते हैंः—

" आप तर्फथी अमारा जेवा पामर प्रमादी नें जाग्रत करवानें "श्रीजैनधर्मप्रकाश" मासिक पत्र भावनगर जैनसभा तरफ थी निकले छै तेनें पुस्तक १८ अंक ६ मां विषय आव्यो तथा विशेषमां आप तरफ थी रवाना करेली कुंकुमपत्रिका उत्तम कामना मेलावड़ाना शुभ वर्तमान दर्शक आई ते वांची परम आनंद थयो छै के आप जेवा महरवानो शाशन उन्नति अर्थे मोटो वोजो उपाड्यो छै तेने माटे धन्य वाद छै,

१५. शेठ अनूपचंद मलूकचंद भरूचसेमिती सावण सुदि ३ सम्वत् १९५८ के पत्र में लिखते हैंः—

" सर्व कार्यों सफल करवा फलोधी मां जैन मंडल एकठुं करवा धारो छो ते बहु सारी वात छै अने तमारूं इच्छित सफल थावो. ए विषय मारो विचार तो अहमदावाद तथा मुंबईथी क आवे छै, कारण जे आ काममां नाणानी जरूर छै माटे नाणावालानें असर थाय; वली नाणावाला बधा गृहस्थो फलोधी पगला करसे ए असंभव छै, माटे जिहां नाणावाला ते स्थले अेकठा थवुं जोइये, तेम छतां धनाढ्य ग्रहस्थोना समाचार आपने मल्या होय तो महारी हरकत नथी.

मने ऐ जैनमंमल एकठुं थाय तेमा लाज्ञ आपवा लख्युं ते लाज्ञ लेवानी पूरी इछा छे. आप जे तारीख मुकर्रर करशो ते तारीखे निरावाधपणुं हतु हु, ते तेम हसे तो जरूर लाज्ञ लेवा आविश "

(७) काठियावाड़–

१. मिष्टर मोतीचंद गिरधर कापडीया वी ए. जावनगर से तारीख २२ सैपूटेम्वर सन् १ए०२ के पत्र में लिखते हैं:–

" My health does not allow me to join the movement undertaken by you I have full sympathy with what you and other members carry out at Phalodi I as a member of the Jain Union declare our full sympathy for your undertakings "

२ मिष्टर त्रिज्ञुवनञोधवजी शा वी ए. जावनगर से तारीख २४ सैपूटेम्वर सन् १ए०२ के पत्र में लिखते है:–

" I sincerely sympathise with your great and laudable efforts to ameliorate the condition of the Jains I wish the next meeting may be held at Palitana a place most convenient for all to meet at Wishing you success in your undertaking "

३ मिष्टर नानचद वेचर वी ए. जावनगर से तारीख २२ सैपूटेम्वर सन् १ए०२ के पत्र मे लिखते हैं.–

" I know that your efforts are directed for the amelioration and friendly commerce of our Jain brothers scattered over the most part of India Your Zeal and assiduity and generosity are unparalleled among our Jains I do not wish to address you a flattering letter, but what I have felt and what I have heard and seen, has convinced me of your sincerity in the work "

४ माक्टर त्रीज्ञुवनदास मोतीचंद शा एल्, एम, ऐस, जूनागढ से तारीख २० सैपूटेम्वर सन् १ए०२ के पत्र मं लिखते हैं –

"As plague is raging in some of the districts of this State I am unable to have the pleasure of attending our Phalodi Sabha to be held in this month. Please express my regret to our brethren and excuse

५ मिष्टर रतनचद मूलचद महता सेक्रेटेरी श्री जैनधर्मविजय पुस्तकालय वीरमगाम से तारीख२४ सैपूटेम्वर सन् १ए०२ के पत्र में लिखते हैं.

"Your invitation letter was fully explained to our Jain brothers here in a meeting specially convened for the purpose the day before yesterday night. The aims and objects of holding the Jain Conference were also fully propounded and an earnest request was made to the Jain Sangh here to depute at least one or two gentlemen to be present at the Conference The whole meeting has unanimously approved of your Commendable object."

६. मिष्टर लक्ष्मीचंद माणकचंद आनरेरी सेक्रेटैरी जैन लाइब्रेरी मोरवी से तारीख १३ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पत्र में लिखते हैं:—

"Your kind and hearty invitation of the Jain Conference to be held at Phalodi on the 25th instant was duly to hand by yesterday's post. I and my friends and acquaintances were extremely glad to read its contents.

Your noble ideas for the reform are highly appreciated by my circle and they earnestly request your favour to take opportunity to visit Morvi once.

At last I take permission to request your Honour that setting aside other matters of small importance you should be pleased to try your utmost to unite the two Jain Communities which are at present seen to be on good terms in many places. I and my friends are bent on doing so and in Morvi there is not a single ingredient of enmity or jealousy. The Sthanekvasis of the cultivated mind praise the noble idol and vice versa. If these two parties come to terms the hope of our future prosperity is not far."
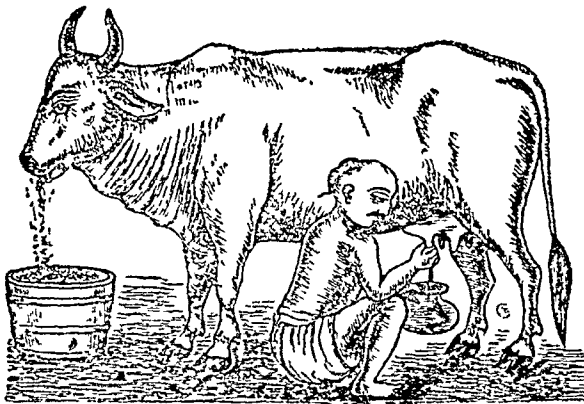
श्वेताम्बरीय जैन कान्फरन्स

की

रिपोर्ट.

भाग दूसरा

अर्थात्

खुलासा कार्रवाई

अधिवेशन

प्रथम

स्थान फलोधी

सन् १९०२ ई

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

१ सभा मंरूप

प्रथम भागके अवलोकनसे विदित होगा कि इस कान्फरेन्सके शुरु करनेमें कुल जैन समुदाय के आगेवान सद्गृहस्थोंकी राय थी। और इस कान्फरेन्सके साथ दिली हमदर्दी और दिलसोजीके पत्र हिंदुस्थानके जुदे जुदे भागोके अगवा जैन गृहस्थोंके आचुके थे तारीख २५ सैप्टेम्बर सन् १९०२ के पहले हजारों यात्री फलोधी पहुंच चुके थे और "श्रीफलोधी तीर्थोन्नति सभा" की तरफसे प्रतिनिधियोंकी आगत स्वागतका इंतजाम किया गया था कान्फरेन्स के जलूसे के वास्ते श्री पार्श्वनाथस्वामी के मंदिर के बाहर और बाहर के पड़कोटे के अन्दर मैदानको साफ कराकर शामीआना खडा कराया गया था और इस शामीआने के अन्दर कोई कुर्सी वगैरह नहीं रक्खी गई थी न कोई खास बैठकका प्लेटफार्म किसी के वास्ते कायम किया गया था बल्कि शामीआने के अदर दरी और चान्दनी बिछाई गई थी कि जिसपर पुराने हिन्दुस्थानी फैशन के मुवाफिक सब सरदार एक जाजमपर उपस्थित हुए थे सभापति के वास्ते अलवत्ता कुर्सी रक्खी गईथी यह शामीआना ऐसा था कि जिसमें करीब हजार बारासो मनुष्य बैठ सकें लेकिन इस शामीआने को खडा करते वक्त यह खयाल जुरूर रक्खा गया था कि अगर इससे भी ज्यादा संख्या मनुष्यो की होजावे तो उनको किसी तरंह की दिक्कत न हो इस लिये तीन तरफसे इस शामीआनेको खुला रक्खा था कि जिससे शामीआनेके बाहर बैठनेवाले सरदारोंको भी सभाकी काररवाई कुल मालूम होती रहे–

२. प्रतिनिधियोंका उतारा-

सम्वत् १९५७ की सालमें जो नवे मकान इस तीर्थपर बनेथे उनमेंसे चंद मकान गुजरात देशकी तरफ के प्रतिनिधियोंके वास्ते रीजर्व रक्खे गये थे और चंद प्रतिनिधियो को खास तोरपर जनरल सैक्रेटेरी के उतारेपर ठहराये गये थे, इन महाशयोंके पानी वगैरह के इन्तजामके वास्ते नोकर मुकर्रर कर दिये गये थे और खाना पीना सबका सैक्रेटेरीके रसोवडे में रक्खा गया था–

३. प्रतिनिधियों की आमद.

"श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा" की तरफसे मेम्बर लोग स्टेशनपर ट्रेन टाइमपर जाकर प्रतिनिधियों को ट्रेनसे उतार कर स्टेशनसे मंदिर तक लेजाकर उनके उतारे में उतारते थे और गुजरात काठियावाड़ के प्रतिनिधियोंको देख देख कर सबका चित्त बहुत हुलसता था आखिर कार तारीख मुकर्ररा तक जब सब प्रतिनिधी आपहुंचे तो इस प्रथम कान्फरेन्स की काररवाई तारीख २५ सैप्टेम्बरके दोपहर को तथा उसही दिन रात्रिको तथा२६ सेप्टेम्बरके दोपहरको हुई और जो जो ठहराव हुए इस रिपोर्टमें आगे दर्ज किये जावेंगे

कान्फरेन्सकी पहली बैठक—

४. रिसेपूशन कमिटीके प्रेसीडेंटकी तरफसे भाषण.

जब २५ सैप्टेम्बर के दोपहर को शामीआने के नीचे सभा भरी और सभासदों की धूम धाम थी तो उस वक्त रिसैपूशन कमीटीके प्रेसीडेंट शेठ हीराचंदजी सचेती अजमेर निवासी की तरफसे श्रीफलोधीतीर्थोन्नति सभा" के जनरल सैक्रेटेरी मि०गुलाबचंदजीढढ्ढाने इस तरं हपर भाषण दिया—

मेरे प्यारे स्वामीभाइयो ! आजका सूर्य बहुत अच्छा उगा है कि जिसमें हमारे वर्षोंका विचारा हुआ काम पार पड़ा है. आपको भली प्रकारसे यह बात मालुम रहना चाहिये कि यह जैन कान्फरेंस एक दिन या एक बर्ष या एक मनुष्य की कोशिशका नतीजा नहीं है. इस कान्फरेन्सके एकत्र करनेकेलिये हमलोगों की उत्कंठा कई वर्षोंसे थी वह आज श्रीपार्श्वप्रभुके प्रसादसे पार पड़ी है. आपलोगोंको मालुम रहै कि कुल उसवालोंकी उत्पत्ति ख्वाह वे अब राजपूतानामें हों या गुजरात, काठियावाड़, पूर्व, पंजाब, दक्षिणमें हों, इस ही मरुधर देशकी उशा नगरी से है. उशा जोधपुरसे करीब पंदरह बीस कोस ऊंट बैलगाडी के रस्तेसे है. इस उशा नगरीमें अपने परमपूज्य आचार्य महाराज श्रीरत्न शेखर सूरीजीने धर्मोपदेश दे कर जैनधर्म अंगीकार करनेवालोंको उसवाल जातिमें कायम किया वहांके राजपुत्र भी इसमें शामिल हैं. इसवृत्तां-

तके यहां पर लानेसे यह मतलब है कि मरुधरभूमि वह स्थल है कि जहां पर अपना सबका घर है— अब इस वक्त रोजगार वगैरहके खयालसे हजार हजार कोसके फांसले पर अपन लोग आबाद हैं और कोई मारवाडी कोई पंजाबी कोई गुजराती वगैरह नामसे मशहूर हैं किसीके शिरपर मारवाडी पगडी है किसीके शिरपर गुजराती पगडी है. किसीके शिरपर फेटा है, कोई मारवाडी बोली बोलता है। कोई गुजराती. कोई पंजाबी बोलता है कोई चांवल भात खाताहै कोई गेहूं जोकी रोटी खाता है कोई बाजरी, मक्का, जुवार खाता है कोई राजकाज करता है, कोई जवाहरात का व्योपार करता है, कोई साहुकारी करता है, कोई कुछ धधा करता है परंतु जरा विचारकर देखें तो मालुम होगा कि देश कालके प्रभावसे यह भिन्नता मालुम होती है वरना दर असल कुल हिंदुस्थानके जुदे जुदे प्रांतोंके रहनेवाले ओसवाल इस मरुधरभूमिके ओसवालोंके सगे भाई बंधु हैं—इस तरफ कोई विदेशी भाईबंधुओंका कई कारणोंसे आना जाना न रहनेकी वजह से हमारे उनके रीत रिवाजमें, पहनने ओढ़नेमे, खाने पीनेमे सूरत शक्लमे फरक पड़ा गया है. परंतु कितना ही फरक पडो आखिरमें घर ही याद आता है आम तोर पर मसल मशहूर है और जिसको भयकर कहत सम्वत् १९५६ के मे निजदृष्टीसे देख चुके हैं कि मारवाड के लाखों आदमी बारिश की कशीशसे मारवाडको छोडकर हजारों कोसों तक चले गये, परंतु फिर समय अच्छा आनेपर वापस अपने वतनको लोट आये इस ही तरंह पर आपलोगोंने भी एक अरसेसे इस मरुधरदेशको छोडकर कई कारणोंसे दूसरे प्रान्तोंमे निवास किया था, ताहम इस जैनसमुदायकी महासभाकी नीव अपने वतनमे डालनेको आप लोग उत्कंठित होकर इस फलोधी तीर्थपर पधारे हैं यह आपकी मातृभूमिकी मुहोब्बत और प्यारको अच्छी तरह प्रकट कर रही है सुपुत्रोंसे यह ही उम्मीद होती है. वैसे ही आप साहबोंने यहां आकर अपनी मातृभूमिमें इस कान्फरेंसके काम काजको भलीप्रकार शुरु किया है और जो तकलीफ सहन करके आप यहां पधारे हैं और जिस धर्मलागणीके प्रेरे हुए आप यहां आये हैं उन सबके लिये हम आपको अन्त.करणसे धन्यवाद देते हैं

और आशा करते हैं कि दिन व दिन चंद्रमाकी कलाके मुवाफिक आप लोग आपसमें भ्रातृभाव बढाकर एकताके झंडेके नीचे वह वह शुभ काम करेंगे कि जो इस लोक और परलोकमें अछे फलके देनेवाले होंगे.

अगरचे आपकी खातर तवाजो हमसे वैसी वन नहीं आई है कि जैसी होनी चाहिये ताहम हमारी भूल चूककी तरफ निगाह न दे कर आप साहब हमको उन कमियोंकी माफी वखशेंगे और यह धर्म काम सर्व साधारण समझकर इसको किसी तरहपर अछीतरहसे पारपटकने पर कमर बांधकर इछित फल को प्राप्त होवेंगे.

हमलोगोंमें विद्याका प्रचार ज्यादा नहीं है. प्रायःकरके व्यापारधंधेके अभावसे हमलोगोंकी आम हालत उम्दा नहीं है. ताहम हम लोग इस बातको अपने अंतःकरणसे चाहते हैं कि अपने धर्म और जाति कीजो गिरी हुई हालत इस वक्त नजर आती है तथा जो जो नुकसान अपने धर्म और जातिको पहुंच रहे हैं. वेवंद होकर आयंदा अपनी धर्म और जातिकी वहबूदी हो. और इस ही खयालसे हमने आपलोगोंको आमंत्रण करके आपके वतनमें बुलाये हैं और आशा करतेहैं कि आप सव एक चित्त होकर जो काम दरपेश है उसको सम्पूर्ण भले प्रकारसे पार उतारेंगे—

हमारी सभा अलवत्ता सम्वत् १९५६ में कायम हुई है परंतु इसके कायम होनेके चार बरस पहलेसे इस सभाको कायम करनेका विचार किया गया है किसीनकिसी कारणसे चार वर्ष तक दिलका खयाल दिलमें ही रहा प्रकट न होसका आखिरकार सम्बत् १९५६ की साल सभा कायम कीगई और सम्बत् १९५७ के सालाना जलसेमें कुछ विचार कान्फरेंसका करनेपर उस साल बारिश ज्यादा होनेसे सभासदोंका खयाल यहां पर यात्रियोंके ठहरनेके लिये ज्यादा मकान बनानेकी जुरूरतकी तरफ रजू हुआ और उस वक्त कोटड़ियोंके बनानेके लिये चंदा इकठाकरनेमें समय व्यतीत हुआ सम्बत् १९५८ के सालमें यहांपर वीमारी ज्यादा फैली हुई होनेके कारण हमलोगोंको उसवक्त मौन धारण करना पड़ा परंतु उसके छ महीने बाद हमारे जनरल सैक्रेटेरी मिष्टर-

गुलाबचंदजी ढढ्ढाने तीर्थयात्रा गमनकरके गुजरात काठियावाडके मुख्य मुख्य शहरोमे सजाये इकठी करके वहांके आगेवान सरदारोंकी जैन-कान्फरेंसकी तरफ सम्मति लेकर इस साल कान्फरेंस इकठा करना अवश्य समझा हम लोगोका विचार था कि प्रथम इस कान्फरेंसकी बुनयाद अहमदाबादमें डाली जाय, क्यो कि अपने धर्ममें आगेवान अपने अहमदाबादके शेठिया हैं परतु बडे होते हें बेबडी बात करतेहें उन्होने इस शुभ कामका मान अपने वतन मरुधरदेशको देना चाहा इस लिये हमलोगोंनेभी उनकी रायसे इतफाक करके यहां ही इस महासभाको शुरु करना चाहकर आप लोगोको आमंत्रण दिया– हमलोगोको उम्मीद थी कि गुजरात काठियावाडकी तरफसे संख्या वध सरदार पधारेंगे परतु अफसोसके साथ प्रकट करना पडता है कि कई कारणोंसे ज्यादा सख्यामे हमारे स्वामी भाई न आसके परतु उन सबके तार और चिठियां जो आई हे उनसे विदित होता है कि उन सबकी सम्मति इस शुभ काममे है और इस कारखाईके साथ उनका तन, मन, धनसे इतफाक है हमको सिर्फ यह विश्वास ही चाहिये इस विश्वासपर तो बहोत कुछ काम होसकताहै क्यों कि काउपर (Cowper) ने कहा हे कि Hope Daderred Mackte The Heart Sick But When It Counth It Is A Tree Of Life अर्थात् उम्मीदके पूरे न होनेसे दिलको सदमा पहुंचता है लेकिन जब उम्मीद पूरी होजाती है तो यह एक जिंदगीका दरख्त हे– पस हमाराभी यह ही हाल हुआ है आठ वरसतक उम्मीद किया हुआ काम पार न पडनेसे हमेशा दिलशकनी होती थी अब आप सरदारोंके पधारनेसे और जो सरदार नहीं आये हें उनके तार और पत्रोंसे हमारा इछित काम पार पडा है इसके लिये हम श्रीपार्श्वप्रभुकी पूर्ण कृपा मानते हैं औरआशा करते हैं कि आप उस परमात्माकी जय बोलेंगे (पार्श्वप्रभुकी जय ! जय!) आये हुए तार और कागजोंमेंसे चुने चुने कागज आपको शा मोतीलाल कुशलचद अहमदाबादके डैलीगेट आगे पढकर सुनावेंगे, उनसे आपको मालुम होगा कि हिंदुस्थानके कुलप्रांतोंके जैनवर्गकी इस शुभकार्यमे सम्मति है कि जो बात अपनी खुशीको अधिक बढानेवाली हे–(खुशीकी तालियां)

ग्रैस शब्दोंके अर्थ के फर्कके बाबत देखो श्रीजैनधर्मप्रकाश पुस्तक १७ अंक ७) जिस कदर ज्ञान उनमें मोजूद था उसको एक जगंह इकट्ठा किया. अपने लिये अपने महान् आचार्योंकी ऐसी कान्फरेंसकी नजीर मोजूद है– पस उस ज्ञानको जो उन महान् आचार्योंने बचाया बदस्तूर जारी रखना और प्रचलित करना हर सच्चे जैनीका फर्ज है–सल्तनतोंके फेरफारसे मुल्कमें सुलह शांति न रहने की वजहसे धर्म विरुद्ध पक्षके ज्यादा फैलनेसे अपने बुजुरगोंने यह उपाय सोचा था कि जितने पुस्तक हैं उनको पृथक् पृथक् न रखकर एक जगंह भंडारमें महफूज जगंह जमा करदिये जावें उस वक्तका उनका विचार बहुत उत्तम था और अबतक उनके हुक्मके मुवाफिक जो भंडार बंद रक्खे गये इससे भी फायदा ही पहुंचा है कि किसीको कोई मोका उस ज्ञानको इधर उधर करदेनेका नहीं मिला परंतु अब समय बदल गया. अंगरेजोंके राज्यमें हर तरंहकी आजादी मिलगई धर्मपर कोई शख्स कोई हमला नहीं कर सकता ऐसे उम्दा जमानेमें हमारा फर्ज है कि उस अपूर्वज्ञानको फिर तमाम दुनियांमें फैलाया जाकर जैनधर्मकी अपूर्व फिलासोफीका असर सारे जगत्पर डालकर भव्यजीवोंपर उपकार किया जावे– कागजका स्वभाव है जैसा कि औरबस्तुका भी है कि हवा रोशनी न लगनेसे तथा सील वगैरहका असर पहुंचनेसे वह चीज खराब हो जाती है और उदइलगकर वह चीज नष्ट हो जातीहै– पस जो बमी मुद्दतसे हमारे ज्ञानभंडार बंद हैं उनके उदई जुरूर लगी है और जो अगणित मूल्यका विरसा अपने बुजुर्गोंने अपने लिये छोड़ा है वह मीरास अपनी नादानी गफलत, सुस्ती और कुसंपसे अपन कीड़ोंको खिला रहे हैं (अफसोस ! अफसोस !) अबतक जो भंडार रक्षकोंने उस ज्ञानको बचाया इसके लिये उनको धन्यवाद देना चाहिये परंतु अब उनको उस ज्ञानके उद्धार करानेमें हरगिज मानें नहीं होना चाहिये- अब उस परम्पराकी रीतिको छोडना चाहिये– इस वक्त मुजे एक कोमी रिवाज याद आता है–किसी एक जातिमें यहरिवाज है कि जब बरकन्याके फेरे होते हैं उस वक्त बिल्ली जहां कहीं मिले उसको तलाश करके पकड़ कर लाते हैं और उस बिल्लीको एक टोकरीके नीचे दबाकर

रख देते है– जब फेरे होचुकते हैं उस वक्त उसको छोड देते हैं– इस के लिये दरयाफ्त किया गया तो सबने कहा कि यह हमारे पुश्तैनी रीति है– खोज चलाते चलाते यह पता लगा कि किसी समयमे जब वर कन्याके फेरे हो रहेथे तो उस वक्त एक बिल्लीने कूद कूद कर वहां विघ्न करना शुरु किया तो उस वक्त पंडितने उस बिल्लीको टोकरीके नीचे दबा दी उसके बाद असल अभिप्रायको न जान कर जब जब शादी होती बिल्लीको तलाश करके पकड़ कर लाते और टोकरीके नीचे दबाते अब उन लोगोंसे यह कहा जावे कि तुम इस रिवाजको छोडदो तो वह अपनी हटको नहीं छोडते– परंतु इस हटको कोई ज्ञानी पुरुष हरगिज नही मानेगा इस ही तरह पर अपने ज्ञान भंडारोंके लिये अपने बुजुर्गोंने समयानुसार फरमा दिया था कि इनकी बहुत हिफाजत रखना इनको खराब न होने देना इनको किसीको मत भीजना वगैरह वगैरह परंतु यह हुक्म इस ही वास्ते था कि इस हुक्मकी तामील होनेसे उस खराब वक्तके खोफ व खतरेसे वह ज्ञान महफूज रहा अब वह समय नहीं है अब अमन आमानका समय है अब गुणग्राही मनुष्योका बरतावाहै– अब कुल संघ के प्रतिनिधि इकट्ठे होकर इसकी आवश्यकता देखते हैं इस लिये अपने अपूर्व ज्ञानभंडारोंको जो उदई खा रहे है उनको खोल कर उनका उद्धार कराना यह अपना अवश्य फर्ज है– (हर्षकी तालिया)

परमात्मा श्रीमहावीरस्वामीके मोक्ष पधारे पीछे उनकी वाणी और उनकी प्रतिमा ही पर अपना आधार है जिस तरह ज्ञानका उद्धार करना अपना फर्ज है उस ही तरह जिनमंदिर और जिनप्रतिमाका उद्धार करना अपना फर्ज है–बुद्धिहीन पुरुष अकसर आक्षेप करते है कि जिन प्रतिमाकी सार संभाल करना या मंदिर बनाना सूदमंद नहींहै क्यों- कि अपने तीर्थंकर भगवान् वीतराग थे और संसारसे विरक्त थे फिर उनकी प्रतिमा बना कर पूजना दुरुस्त नहीं है परंतु यह उनका खयाल भूलभरा हुआ है स्थापना निक्षेप हरशख्सको मानना पड़ता है और हिंदु मुसलमान ईसाई वगैरह अन्य मतावलंबी भी इस निक्षेपको मानते हैं तो फिर हमने अपने परमेश्वरकी साक्षात्मूर्ति द्वारा स्थापनाकी तो क्या

बिगाड़ किया हमारा इस वक्त स्थापना निक्षेपको सिद्ध करनेका कथन नहीं है (इस निक्षेपका सविस्तर वृत्तांत "सम्यक्त्व" में मोजूद है) परंतु इस बातको दिखलाना है कि अपने महान् आचार्योंने तथा अपने बुजुर्गोंने जो अपूर्व मंद्रिर लाखों करोडों की लागत लगाकर बनाये हैं और इस तोरपर अडबों खरबों रुपयोंकी विरासत अपन लोगोंके लिये छोड गये हैं अब उनको अच्छी हालतमें रखना अपना कर्तव्य है, देखो अर्बुदाचलकी कोरणीके अमूल्य मंदिर राणकपुरका अद्वितीय मंदिर तारंगाजीका शोभनीय मंदिर सिद्धाचलजीके अगणित शिरोमणि मंदिर वगैरह वगैरह कुल अपने वडेरोंकी दोलत और धर्म लागणीकी शहादत देरहे हैं— अब उन मंदिरोंकी मरम्मत तक हम लोग नहीं करा सकते हैं इसके कई कारण हैं. जिनमें मुख्य कारण हमारी कुसंप है— इसलिये इस कुसंपको छोडकर एक मत होकर जीर्ण मंदिरोंका उद्धार कराना बहुत ही जुरूरी है. हमने अपनी आंखसे देखा है कि मंदिर लाखों करोडों रुपयोंकी लागत के हैं परंतु उनमें जो परम पवित्र परमेश्वरकी प्रतिमा विराजमान हैं उनकी कुछ भक्ति नहीं होती है. कूड़ा कजोड़ा मंदिरमें और खास वेदीमें मोजूद है. कबूतरोंकी और चमचेडोंकी बीटें हर जगह मोजूद पाती हैं. चक्षु किसी जगंह मिलती होंगी पूजाका यह हाल है कि सो पचास मूर्तियोंके ऊपर एक पुजारी कम तनख्वाहका रहता है वह एक हाथमें पानीकी चरी लेकर दूसरे हाथमें खसकूंचा लेकर एक सिरेसे दूसरे सिरेतक बेगार काटता है और खसकूंचीके घस्से लगाता है- अंगलूणा करनेकी उसको यों जुरूरत नहीं रहती कि वायुदेवता उस पुजारीको सहायता देता है और पावटीके पास बगलोंमे जहां जहां पानी ज्यादा देरतक ठहरता है उसमें रेतको शामिल करके थोडे दिनोंमे वह मैल जमा देता है कि जिसका साफ होना मुशकिल होजाता है. केसर तो शायद ही नजरमें आवे चंदणकी भी टीकी नो अंगके लगजावे तो अच्छा भाग समझना चाहिये बरात बरसे शोभनीय मालुम देती है और अगर बराती भी बरके जैसे गहने वगैरह अच्छे अच्छे पहन कर बरातमें चलें तो ज्यादा शोभा होती है परंतु जहां बराती तो बहुत अच्छी पोशाक और गहने पहिने हुएहों और बर वि-

लूकुल वावाजी वना वेठा हो तो क्या देखनेवाले हांसी नहीं करेंगे (हांसी अवश्य करेंगे। हांसी अवश्य करेंगे) पस इस ही तरह मंदिर कोरणीदार चमकता हुवा देख कर तो सवकी तवियत खुशहोगी परंतु उसमें मूर्त्तिकी दशा देख कर क्या देखनेवालेकी लागणी नहीं दूखेगी? (अवश्य दूखेगी। अवश्य दूखेगी) जव यह हाल हमारी प्रतिमाओंकी सेवा पूजाका है तो जाइयो क्या हम लोगोंको इसमें शर्मकी वात नहीं है (शरम? शरम!) इस सुधारेके लिये इस जैन कान्फरेंसके सिवाय और कोई वहतर जरया नहीं है आप लोगोंका फर्ज है कि इकठे होकर जुरूर सुधारा करें—

जिनप्रतिमा और जिनवाणीके उद्धारके साथ साथ ही आजकलकी जो अपनी ज्ञान और बुद्धिकी प्रवलता कम होगई है उसका सुधारा करना जी वहुत ही जुरूरी है यह लोक और परलोक जव ही सुधर सकता है कि जव अपना ज्ञान और विद्या ठीक हो वगैरइल्म के रुपया पैदा नहीं हो सकता है वगैर रुपये के विचारा हुआ काम नहीं हो सकता है और जवतक विचारा हुआ काम पार न पड़े तरक्की नहीं होसकती है पस इस लोककी और परलोककी तरक्कीके लिये इल्मकी वहुत ही जुरूरत है अपने वड़े इल्म दारथे तो उनके पास करोडों रुपयोंका वैजव था आजकलके जमाने मे योरोप अमेरीकाके मनुष्य अक्कमंद है तो उनके पास करोमों रुपयोंका वैजव है अपने वुजुर्गोंने दोलत होनेकी वजहसे ही वह वह काम किये हैं कि जो अव हम लोगोंसे शायद स्वप्नमें जी न होसके कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य को लगजग आठसो वर्षका जमाना हुआ उस वक्त जव श्री हेमचंद्रजी पाटन पधारे तो उनकी पेशवाईके वास्ते १८०० करोडपति श्रावक आये थे आजके जमानेमें एकजी करोडपति श्रावक देखनेमें नहीं आता है और दोलतके न होनेसे कुछ काम नहीं चल सकता है. और अव जमाना जी वह आ गया है कि जिसमे मर्द ऊैरतको यथोचित तालीम मिलना वहुत ही जुरूरी है— अछी तालीम होनेकी वजहसे अपने वुजुर्ग राजा महाराजाओंके पास ऊंचे ऊचे ऊेहदे पर मुकर्र थे मंत्रीपनेका ऊेहदा प्राय करके पुशतेनी इनका ही होता

था– परंतु हाय अफसोस आज कलके जमानेकी शिक्षा न मिलने से हमारा वह हक रोज वरोज हाथसें जाताहे (अफसोस! अफसोस!) हमारे बुजुर्गोंके हाथमें तमाम व्यापार था परंतु अब हमारे स्वामी भाई अज्ञानताके शिष्य होकर उसका मजा उठा रहे हैं. तोभी जैसी कि मसल मशहूर है "टूटा तो भी टोड़ा और भागी तो भी गुजरात" व्यापार हाथसे गया तो भी इस वक्त अपने वर्तमान गवरनर जनरल लार्ड करजन के हिसावके मुवाफिक " It is asserted tht more than haef the mereantle wealth of India passes through the hands of the Jain laity,' अर्थात् ऐसी धारणा है कि हिंदुस्थानके आधेसे ज्यादा व्योपारी दोलत जैन श्रावकोंके पास है–परंतु इस वाक्यामृतसे खुश होकर न वैठ जाना चाहिये वह उच्चपदकी शिक्षा और तालीम की जिससे ज्ञान प्रवल होता है अपनी कोममें विलकुल नहीं है. अपनी जातिके कितने पुस्तक लिखनेमें प्रवीण हैं कितनें अखवार चलाते हैं कितने फिलासोफरहैं कितने डाक्टर हैं कितने इंजिनियर हैं और कितने लायर और वारिष्टर हैं और कितने व्रिटिशसरकारमें ऊंचे उहदेका वैभव भोगते हैं? आंख खोलकर देखें तो अंगुलियोंके पेरओंपर भी उनकी गिणती नहीं आसकती है.

इस शायस्ता जमानेके मुवाफिक कुल हिंदुस्थानमें अपनी जैन कोमकी हाईस्कूल या कालेज या वोर्डिंगहाउस या लाज वगैरह कहीं नजर नहीं आते– कोई प्रवंध ऐसा नजर नहीं आता कि जिससे युवा जैन विद्यार्थियोंको कोई मदद मिल सके कि जिससे वे लोग अपना उद्योग जारी रखकर अछे अछे चतुर और प्रवीण श्रावक वनैं. साधु मुनिराजों के वास्ते शिक्षाका कोई प्रवंध नहीं है–इन सवके न होनेका कारण अपना कुसंप है–

संप होनेसे छोटे छोटे आदमी वड़ा वड़ा काम कर सकते हैं दाखलातरीके दूसरोंकी जो एक थोडी संख्याकी विरादरी है वह आपसके इत्तफाक से आज कल वडी तरक्की पर है. उन्होंने उनके लड़को के पढ़ने और आरामसे रहनेके खयालसे आगरा अलीगढ़ अलाहवाद वगैरहमें वोर्डिंगहाउस वगैरह वनाये हैं और रोज वरोज तरक्की परहैं– आर्य समाजियोंने लाहोरकालेज वगैरहके लिये संप करके फंड किया है और

अछीतरंह काम चलाते हैं इस ही तरंह पर अन्य कोमोमें सव सुधारे के काम हो रहेहैं लेकिन अपनी कोम सवके पश्चात् हे इस लिये हे जाइयो! आप लोग अव इसवातका पाया डालो—

धर्ममार्गमें अपना सवसे ज्यादा आधार अपने जैन मुनियो पर हैं परंतु आज कलके जमाने में यह मुनि दोप्रकारके होगये हैं— एक तो पीले कपड़े पहननेवाले त्यागी वैरागी, दूसरे सफेदचद्दरके यति, साधु-मुनिराजोंका आजकल प्रायःकरके गुजरात काठियावाड़में विचरना होता हे मरुधरदेशमे आहारपानीकी सुगमता नहीं होनेसे वे महात्मा इधर वहुत ही कम विचरते हैं इसलिये हमलोगोंका ज्यादातर आधार सफेद चद्दरके यतियोंपर हे और अलावा उन गुणज्ञ यतियोके कि जिन्होंने जैनधर्मका रहस्य पाया है और जिनकी संख्या वहुत ही कम है आज इस ही स्थानपर इस उत्सवमें आपलोगोंने अपनी आंखोसे देखा है कि हमारे यति और यतियोंकी क्या शोकजनक हालत है— हम लोगोंको उनके होनेसे मगरूरी होनेका मोका नहीं है वल्कि जव कभी उनका वृत्तांत आता हे हमको शरमाना पडता हे (शरम! शरम!) इसलिये अपने कान्फरेंसका कर्तव्य है कि अवल तो इसबातका प्रवध किया जावे कि अपने साधु मुनिराज मरुधर देश वगेरहमें भी विचरें और इन यति महात्माओंके सुधारेका प्रयत्न किया जावे और इनके सुधरजानेपर जो जो काम इनके लायक हों ये उनसे लिये जावे अगर सुधारेके प्रयत्न करने परभी ये लोग न सुधरें तो फिर उनसे कनारा कशी ठीक है—

आज कल दुर्भिक्षसे पीडे हुए हमारे यतीम जैनवच्चे और निराश्रित जैनवधुओंकी दशा सुधारने लायक है किसी जमानेमे जेनी लोग भीख मांगकर खाते हुए नजर नहीं आये हे परतु अव वह जमाना आगया है कि जिसमें उन लोगोंकी दुर्दशा होगई है— इन लोगोंके वास्ते खास प्रवध करना इस कान्फरेंसका फर्ज है— एक छोटीसी पारसियोंकी कोम है कि जिसमें जातीय प्रवध होनेसे किसी पारसी मर्द या औरत या वच्चेको भीख मांगते हुए नहीं देखा हे—

मेरे प्यारे भाईसाहवो! मेने आपका वहुत वक्त लिया है परंतु उस

प्रेमकी धाराको मैं किसी तरंह नहीं रोकसकता कि जो आज आपके दर्शनोंसे बह रही है– इस उमंगका कुछ पता नहीं है कि जो आज आपके यहां इकठे होनेसे हमारी छातीमें समाती नहीं है, इस आपकी कृपाका कुछ पार नहीं है कि जिसकी वजहसे आपलोग अपने सांसारिक धंधोंको छोड़कर अपने अमूल्य समयको लगाकर अपनी कोम और धर्मकी उन्नतिके लिये आप यहां इकठे हुए हैं– इस वारेमें आप साहबोंको जो अर्ज करना था किया. आपको फिर धन्यवाद दिया जाता है कि आप कृपाकरके यहां पधारें. और आपसे फिर यह प्रार्थना की जाती है कि जो कुछ हमारी तरफसे आपकी आगतस्वागतमें कमी हुई हो उसके लिये क्षमा करें.

बंधुओ ! जैसे नावको चलानेवाला मल्हा अच्छा होनेसे नाव मंजिल तैकर लेती है– वैसे ही इस कान्फरेंसका काम काज ठीक तोरपर चले उसके लिये किसी अच्छे श्रावकको अपने प्रेसीडेन्ट मुकर्रर करके काम चलानेकी जुरूरत है, इसलिये में आशा करताहूं कि आप अपने इस कान्फरेंसका प्रेसीडेंट पसंद करेंगे–

५ कान्फ्रेंसके प्रेसीडेंटकी चूंटणीमें शा. कुंवरजी आणंदजीकी दरखास्त

शेठ हीराचंदजी सचेती की तरफसे मिष्टर गुलावचंदजीका दिया हुआ भाषण समाप्त होनेपर शेठ कुंवरजी आणंदजी भावनगर (काठियवाड) वाले श्री "जैनधर्मप्रकाश" पत्र के अधिपतिने वहुत उम्दगीके साथ दरखास्तकी कि यह प्रथम कान्फ्रेंस इस फलोधी तीर्थपर मरुधर देशमें स्थापन की गई है और इसका सर्वप्रकार का मान श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा को घटता है, इसलिये इस कान्फ्रेंस का काम चलानेके लिये इसही सभाके सभासदोंमेंसे प्रेसीडेंट चुना जावे तो वहतर है; और चूंकि महता वखतावरमलजी जोधपुर निवासी इस सभाके पेटरन हैं, और जोधपुर (राज्य) में एक उच्च पदको धारण करते हैं, इसलिये इस कान्फ्रेंस का कार्य अच्छीतरंह चलाने के लिये महता वखतावरमलजी मुकर्रर किये जावें–

६. पटवा कानमलजी की ताईद

इस दरख्वास्त की ताईदमे पटवा कानमलजी जोधपुर निवासीने प्रकट कियाकि जो दरख्वास्त शेठ कुंवरजी आणदजीने कीहै वह बहुत ठीक है क्योंकि मैं महता वखतावरमलजी को अच्छी तरह जानताहूं और राजपुतानामें महता वखतावरमलजी प्रसिद्ध हैं इनकी इस तीर्थकी तरफ धर्मलागणी सराहने योग्य है और उन्नति (तरक्की) के काम में यह साहब कमरबांधकर तन, मन, धनसे तैय्यार रहते हैं इस वास्ते ऐसे भाग्यशाली और चतुर महाशयको इस कान्फ्रेंसका प्रेसीडेंट किया जाना बहुत ही ठीक है.

७. महता वखतावरमलजीने प्रेसीडेंटका पद धारण किया।

इस दरख्वास्तको सबने एक मन होकर स्वीकार की इस वास्ते सभासदों की हर्षगर्जना होते हुवे महता वखतावरमलजीने प्रेसीडेंटकापद धारणकिया और कब्ल इसके कि वे अपना प्रेसीडेंशल स्पीच दें उन्होंने मुनासिब समझा कि हिंदुस्थानके भिन्नर विभागोसे जो प्रतिनिधि पधारे हैं उनकी परस्पर ओलखाण कराई जावे इसलिये प्रेसीडेंटकी आज्ञानुसार मिष्टर गुलाबचंदजी ढढ्ढा जयपुर निवासीने सभामें नीचे मुजिब सदगृहस्थों की ओलखाण कराई—
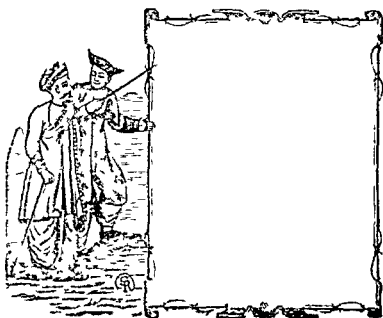
८. प्रतिनिधियोंकी ओलखाण

श्री मुम्बई.
शेठ दीपचंद माणकचंद
जोहरी साकरचंद माणकचंद
घडियाली(शुभेच्छकमित्रमंडलकीतरफसे)
श्री सूरत
जोहरी गुलाबचंद धर्मचंद उदयचंद
श्री अहमदाबाद
मिष्टर भगुभाई फतहचंद कारभारी
मि. मोतीलाल कुशलचंद शा.
शा. पुरुषोत्तम अमीचंद दलाल
शा. दलसुख भाई लल्लूभाई हाजी
शा. जैसिंघ भाई कालीदास
मिष्टर गोकल भाई अमथाशा
(तत्वविवेचक सभाके प्रतिनिधि)
शा. मणीलाल छगनलाल
शा. अमृतलाल रतनचंद
श्रीभावनगर
शेठ कुंवरजी आणंदजी
श्रीमाणसा
शेठ हाथीभाई मूलचंद
श्रीसादरा
वकील छोटालाल लल्लूभाई
शेठ हरजीवन हेमचंद
श्रीमहुवा
प्रोफेसर नत्थुभाई मंछाचंद

श्रीसिकंदराबाद
मिष्टर जवाहरलाल जैनी
श्रीदेहली
लोढा हीरालालजी
श्रीसिरोही
मिष्टर अमरचंद पीपरमार
संघवी जवानमलजी
श्रीपोकरण फलोधी
शेठफूलचंदजी गोलेछा
श्रीसवाई जयपुर
मिष्टर गुलाबचंदजी ढड्ढा एम्. ए.
शेठ केसरीमलजी चोरडीया
शाह सुजाणमलजी ललवाणी
शेठ धनरूपमलजी गोलेछा
शेठ चांदमलजी कवाड़
जोहरी नेमीचंदजी भागा.
जोहरी कन्हैयालालजी बहोरा
जोहरी जीवणमलजी डागा
श्रीझूझणू
श्रीमाल गंगारामजी
श्रीखेतड़ी
शेठ सोभागमलजी श्रीमाल
श्रीजोधपुर
महता बखतावरमलजी
भंडारी मंगलचंदजी
भंडारी स्वरूपचंदजी

भण्डारी केवलचदजी
कांसटिया सूरजमलजी
महता लक्ष्मीराजजी
पारख दीपचदजी
महता रामराजजी
भण्डारी आणंदराजजी
महता शिवराजजी
पटवा कानमलजी
पटवा जुवानमलजी
महता फोजराजजी
महता रतनराजजी
पारख सूरजमलजी
ढढ्ढा मनोहरमलजी

श्रीवाली

भण्डारी सूरजचदजी

श्रीजैतारण

शेठ केसरीमलजी गणेशमलजी

श्रीसोजत

भण्डारी मंगलचंदजी

श्रीपाली

पोरवार तेजमलजी
शेठ लखमीचदजी

श्रीमेड़ता

भणसाली सेसमलजी
" सुगन मलजी
धाड़ीवाल सरदारमलजी
भाभावत रिखबदासजी
कोठियारी शिवदानमलजी
महता समीरमलजी
भण्डारी वीरचदजी

श्रीनागोर

चोरड़िया वछराजजी
खजानची मुकदचदजी
तोलावट गुलजी
भागा छगनजी
चोरड़िया फुलचंदजी
महता जेठमलजी
चोधरी गुलाबचदजी
सुराणा भोगमलजी
लोढा अवीरमलजी
भण्डारी बखतावरमलजी

श्रीअजमेर

शेठ हीराचदजी सचेती
लूणया केसरीचंदजी
धाडीवाल हीराचदजी
वांठिया मगनमलजी
भांभावत कानमलजी
मोणोत किशनचंदजी
महता धीरजमलजी
धाड़ीवाल सुगनचदजी
कांसटिया धनराजजी

श्रीमूरपुरा

धाड़ीवाल शिवचदजी

श्रीबीकानेर

शेठ पूनमचदजी सावणसुखा
शेठ रतनलालजी ढढ्ढा
दफ्तरी मोहनलालजी
बद्धी बीकणचंदजी

जिन सद्गृहस्थों का नाम ऊपरि लिखा हुआ है, उनके सिवाय सैंकड़ों गावों के आए हुए जैनी भाई शामियानेमें चकाचक भरे हुए थे.

सभापति (प्रेसीडेंट) का भाषण.

इस परस्परकी ओलखाण के बाद महता बखतावरमलजी जोधपुरवालोंने भाषण दिया जिसका खुलासा यह है—

प्रिय सुशील स्वामी भाइयो ! जैन धर्म एक विनयमयी धर्म है. विनयसे सब कुछ प्राप्त हो सकता है. विनयभक्तिसे सब प्रसन्न होते हैं और इस विनयकोही मुख्य समझकर मैनें आपकी आज्ञाका पालन किया है. जैन समुदायके प्रतिनिधियोंकी कान्फरेंस एक ऐसी जिम्मेवारी की महासभा है कि जिसके सभापतिका पद धारण करना मुझ जैसे साधारण मनुष्यका काम नहीं है. इस पदके लिये कोई परोपकारी बुद्धिमान् पण्डित और जैनशास्त्रवेत्ताकी आवश्यकता थी क्योंकि इस पदधारी मनुष्यकी जिम्मेवारीका कुछ पता नही है. और में अपने अंदर इस पदकी यथोचित योग्यता नही समझता हूँ परन्तु जब कि गम्भीर बुद्धिमान् सज्जनोंने कृपापूर्वक यह पद मुझको प्रदान किया तो मुझको अवश्यमेव हर्षपूर्वक अन्तःकरणसे स्वीकार करना लाजमी आया—यद्यपि मेरे पूर्वकथानुसार मैं अपनेको इस पदके योग्य नहीं समझता और न इस महामंडलके उद्देश्य अभिप्राय तथा दृढ विचारोंको प्रकट करनेकी और सर्व साधारणको भली भांति समझानेकी मेरे अन्दर शक्ति है तथापि अपनी शक्तिके अनुसार कुछ न कुछ इस मामलेमें कहूंगाः—

॥ दोहा ॥

जैसी जाकी बुद्धि है तैसी कहत बनाय ॥
सज्जन बुरा न मानिये अधिक लेन कहां जाय ॥ १ ॥

आप सब सज्जनोंने एक चित्त होकर मुझको इस महासभाके सभापतिका उच्च पद देकर मान दिया है जिसका मैं कोटिशः हार्दिक धन्यवाद देकर अपना कथन शुरु करताहूंः—

प्रिय धर्मबांधवो ! आप सब साहिबोंको अच्छीतरंह मालुम होगा कि अपनी सर्वोत्तम जैनजाति पहिले किस प्रकार उन्नतिके शिखरपर विरा-

जमान थी, किसतरंह कटिबद्ध होकर परोपकार और धर्म रक्षाकररहीथी और अपने मान, गौरव, समाज, परमार्थ, व्यवहार तथा देशके अभ्युदयके अर्थ परमदृढतासे कैसे कैसे उपाय करती थी कि जिसीके कारण जातिवान्धवोंमे विद्या, बल, पराक्रम, सत्य, ज्ञान, ऐक्यता और परस्पर प्रीति दृष्टिगोचर होतीथी–

यदि आपलोग मुनसिफाना जांच परताल करेगे तो आपको मालुम होगा कि अपनी जातिकी भूत और वर्त्तमान अवस्थामे क्या फरक आगया है अर्थात् हम लोग किस उन्नतिके शिखरसे गिरकर कैसी अवनतिके नीचे आ पहुंचे है

प्रियमित्रो ! यह वहही जाति है कि जो अपने धर्म, विद्या, एकता और परस्पर प्रीतिभावके बलसे बादशाहके बराबर दर्जेपर गिनी जातीथी जिसकी कहावत अबतक इस प्रान्तमे प्रचलित है "कै शाह कै बादशाह"

हे मेरे परम दयालु सज्जनो ! यदि आप विचार कर देखें तो परोपकारमें तथा धर्ममे यह जाति संसारभरमे एकहीथी, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण श्री आबुराजके मंदिर, श्रीसिद्धक्षेत्रके मदिर श्री राणकपुर और श्री तारंगाजी वगेरह तीर्थोके मदिर हैं– आबूराज और राणकपुरके मंदिर कैसे अपूर्व है यह आप सब साहब अच्छी तरह जानते है तथा इनको बनवानेमें कितना रुपया खर्च हुआ यह अनुमान करना कठिनही नहीं किन्तु असंभव प्रतीत होता है अब आप जरा उन देवमूर्तियोंके निवास स्थानकी तरफ कि जिन्होने ये मन्दिर बनवाये दृष्टि दीजिये कि वे कहां है ? आपको हजारो पते लगानेपरभी उनके निवासगृहका पता नहीं लगेगा अहाहा हा ! क्या आप लोग उसको सच्चा धर्म और परोपकार नहीं कहेंगे आपको अवश्य कहना पडेगा कि वे सच्चे धर्मप्रेमी और परोपकारी पुरुष थे कि जिन्होने असंख्य रुपये ऐसे ऐसे महामंदिर बनवाकर खर्च किये और अपने रहनेके मकानके लिये कुछभी रुपया खर्च नहीं किया

इसही प्रकार अनेक मनुष्य इस जातिमे होगये है जो परोपकारहीको अपना मुख्य कर्त्तव्य समझतेथे बस उसीसे यह जाति उन्नतिकी

दशामें विराजमानथी और अब जबतक इस जातिके बडे २ योग्य और धनाढ्य पुरुष पहिले कीसीतरंह कटिबद्ध हो परोपकारको अपना मुख्य कर्त्तव्य न समझकर विद्यादि सद्गुणोंके प्रचारका प्रयत्न इस जातिमें न करेंगे यह जाति अपनी पूर्वकालकी उन्नति अवस्थाको प्राप्त नहीं हो सकती है.

प्रिय सधर्मी भाइयो! जैसे यह जाति पहिले धर्मकार्योंमें कटिबद्धथी वैसेही सांसारिक धनोपार्ज्जन आदि कामोंमें लगी रहतीथी और अपने नियम " अहिंसा परमो धर्मः " को पूर्णरीतिसे पालती हुई व्यापारमें उच्चपदको धारण करतीथी परन्तु जब हम व्यापारकी तरफ इस समय ध्यान देते हैं तो कुल व्यापार जो उस समय हमारे बुजुर्गोंके हाथमें था वह सब अंगरेज, पारसी आदि कोमोंके हाथमें चला गया, दूध और मक्खन आदि उत्तम पदार्थरूपी व्यापार परजातिमें प्रवेश कर गया और केवल छाछरूपी वह व्यापार अपने हातमें रह गया कि जिससे पेट पालनभी कठिनाईसे होता है, फिर परोपकार और धर्म पहिलेके अनुसार कहांसे होवे और व्यापारके न रहनेसे इस जातिका गौरव कितना कम हो गया है यह आप पुराने इतिहासोंके देखनेसे अनुमान करसकते हैं.

जो धर्मज्ञता, एकता, परोपकार और परस्पर प्रीतिभाव आदि गुण पहिले इस कोममें थे वे इस समय बहुत कम हो गये इसका कारण क्या है यह आप यदि विचारेंगे और ध्यानपूर्वक देखेंगे तो इसका मूल कारण धर्मको अधर्म, बुद्धिको निर्बुद्धि, सत्यको असत्य, बुद्धिमानको मूर्ख शुभको अशुभ आदि करनेवाली एक अविद्याही आपको मिलेगी कि जिसके प्रचारसे कई प्रकारकी हानियें आपको सहनी पडीं और जब-तक इसका डेरा आपके विराजमान रहेगा तबतक कई प्रकारकी हानि-यां आपको औरभी सहनी पडेंगी. विद्याके क्या क्या गुण हैं उनको सम-झानेकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसके प्रचारका आन्दो-लन सब भारतवर्षमें हो रहा है और इस विषयमें हजारों व्याख्यान हो चुके हैं तथा सैंकडों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, अतः मेरी आपसे यहही प्रार्थना है कि जैसे अन्य जातियां विद्याप्रचार करके तरक्की

कर रही है वैसेही अपनी दयालु जैन कोममें विद्याका प्रचार करके तरक्की करे कि जिससे अपनी कोम उस उच्च पदको फिर धारण करे जिससे कि हमलोग अभी नीचे गिरे हुए है–

आज अहोभाग्यसे मेरे हर्षकी सीमा नही है और इस समयको मैं धन्य समझता हूं कि जिसमे अवनतिको दूर करनेके लिये इस तीर्थ भूमिपर आप सब सज्जनोंकी कृपासें उस उत्तम महलकी पुख्ता तोरपर नीव डाली जाती है कि जिसके नियत होनेकी इस अवसरपर बहुतही आवश्यकताथी, इस महासभाके नियत होकर जारी रहनेसे आयंदा अनेक प्रकारके फायदे होते रहेंगे जिनका कि इस समय स्वप्नमेंभी ध्यान नहीं है, परन्तु जेसे जेसे समय व्यतीत होता जावेगा और इस सभाकी उन्नति होती रहैगी वेसे वैसेही वे फायदे प्रकट होते जावेगे और अपने भाई बन्धु तथा अपने पीछे होनेवाले सतान इस शुभ मुहूर्त्तको बहुत धन्यवाद देगे कि जिसमे यह साक्षात् कल्पवृक्षका बीज बोया गया है इस कान्फ्रेन्ससे वह संप और इत्तफाक बढेगा कि जो इसके अभावमे दृष्टिगोचरभी नही हो सकता है भिन्न २ मनुष्य कुछ नही कर सकते है परन्तु एक मनुष्यके साथ दूसरेके मिलनेसे दोनोंका मिला हुआ बल कई दर्जे ज्यादा हो जाता है इसही प्रकार जब अधिक म नुष्योंका समूह होकर एक यूथ (जुथा) हो जाता है तो वह जमाअत अपने धारे हुए कामको बहुत शीघ्र और आसानीके साथ पार पटक सकती है और यह बातभी आपको अछीतरह मालुम रहै कि यह कान्फ्रेन्स किसीकी खुदगर्जीसे नहीं कायम हुई है कि जिससे यह नतीजा पैदा हो कि सैंकडोका नुकसान होकर एक दोका फायदा हो अथवा इस गरजसे नहीं कायम की गई है कि सैंकडोंकी वे इज्जती होकर एक दोकी इज्जत बढे किन्तु यह कान्फ्रेस इस शुभ परिणाम और हेतुसे नियत की गई है कि इसके कारणसे सांसारिक तथा धार्मिक कार्योंकी उन्नति हो और जो जो अवनतियां इस समय देखनेमें आती है उनका सुधारा किया जावे और जब अपने परिणाम बुरे नहीं है किन्तु जातिकी उन्नति करनेके है तो अन्तमे इस उत्तम कामका उत्तमही फल होगा और श्रीपार्श्वप्रभुसे प्रार्थना है कि

जिस प्रकार इस शुभ कार्यका पाया इस पवित्र भूमिपर डाला गया है उसी प्रकार इस शुभ कार्यका फलभी सदा शुभ होता रहै—

मैं ऊपर कह चुका हूं कि प्रथम फायदा इस कान्फ्रेंससे संप और हित वढ़नेका है. प्रायः जवतक भिन्न भिन्न स्थलके मनुष्योंका मिलना जुलना न हो उस समयतक आपसमें हमदर्दी नहीं वढती है और यह वात स्वयं सिद्ध है इसका सुवूत पेश करनेकी जरुरत नहीं और जहां पर जुदे जुदे स्थलोंके डाहे चतुर मनुष्य इकठे होकर कार्य करेंगे तो वहांपर वुद्धिकाभी प्रकाश होगा क्योंकि जुदे जुदे दिमागकी जुदी जुदी वुद्धि होती है और जहांपर चुने चुने आली दिमाग श्रावक इकठे होकर जो जो उत्तम वातें प्रकट करेंगे वे प्रत्येक मनुष्यको साधारण रीतिसे मिलेगी अर्थात् सेंकडो हजारों रुपये खर्च करके यदि उन एकत्रित मनुष्योंकी सम्मति कोई पुरुष लेना चाहे तो उसको प्राप्त नहीं हो सकती जैसी कि इस महासभामें शामिल होनेसे हो सकती है इस भिन्न २ दिमागकी वुद्धिको एक जगंह लानेकी तदवीर हमारे प्यारे मित्र और हमारी श्रीफलोधीतीर्थोन्नति सभाके जनरल सेक्रेटेरी मिष्टर गुलावचंदजी ढढ्ढाने विचारी है और इस कान्फ्रेंसके एकत्र करनेका मान उनको घटता है. हमको और आपको अछीतरंह मालुम है कि उन्होंने अपने मुतालिक वडी जिम्मेदारीके राज्यकार्यसे समय निकालकर सच्चे दिलसे पैसा खर्चकर अपनी जाति और धर्मकी उन्नतिके लिये अपार परिश्रम किया है. गुजरात काठियावाड़की तरफ जाकर कान्फ्रेंसके लिये सम्मति लेना तथा सेंकडों पत्र और तार देकर इस कार्रवाईको अछीतरँह पार पटकना वगैरह वगैरह यह काम उनकाही है, यहांतक कि इस समय उनके माता और वडे भाईके वीमार होनेकी हालतमें भी उन्होंने इस शुभ कार्यमें जो मदद दीहै और उनको अपने घरपर वीमार छोडकर इस कान्फ्रेंसमें शामिल हुए हैं. इस कुल कार्रवाईके वास्ते इस कान्फ्रेंसकी तरफसे मैं उनको धन्यवाद देता हूं (हर्षकी तालियां)

अलावा इत्तफाक और अक्ल वढनेके इस कान्फ्रेंसके कायम रहनेसे विद्योन्नतिभी होगी, क्योंकि आजकल अपनी जातिमें विद्याका सर्वथा अभाव है. जिस दर्जेपर अपने वुजुर्गोंका ज्ञान चढा हुआ था अव उस-

के विरुद्ध हमलोग इस विद्याखातेमें उतनेही गिरे हुए हैं जैसा कि अपने आवकार कमीटीके प्रेसीडेन्टकी तरफसे मिष्टर ढड्ढाने कहा है अपनी जातिकी तरफसे सम्पूर्ण हिन्दुस्थानमें एकभी कालेज हाईस्कूल वा बोर्डिंग हाऊस देखनेमें नहीं आता इस विद्याके फैलाव और तरक्की-की तरफ खास तवज्जाह देना अपना काम है और जब अपनी जातिमें विद्याका प्रचार जैसा कि चाहिये हो जावेगा तो उस समय अपनेको जो देशोन्नति और धर्मकार्यमें आगेवाणीका हिस्सा लेनेकी आवश्यकता है वह स्वयमेव सिद्ध हो सकती है जैसे प्रत्येक मनुष्य अपने पुत्रको अच्छी स्थितिमें देखनेकी इच्छा रखता है उसी प्रकार मेरीभी यह आ-न्तरङ्गिक इच्छा है कि मैं जैन समुदायकी आगे आनेवाली संततिको अपने नेत्रोंसे ऐसी देखूं कि जो अपने बुजुर्गोंका नाम रखनेवाली हो (खुशीकी तालियां)

अपने मुनिराजोंसे धर्म चल रहा है और जहां जहां उनका अभा-व है वहां वहां धर्ममें हानि पहुचती है उनके धर्मकार्यमें चाही हुई सहायता देकर धर्मको फैलाना यह अपना काम है इस विषयमें आप लोगोंका ध्यान मिष्टर ढड्ढाने खैंचा है वह सही है, मुझे इसपर अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं है

मंदिरों तथा तीर्थोंपर जो जो आसातनायें होती हैं वे सबको मालुम है इस विषयपर विशेष विवेचन करनेकी आवश्यकता नहीं हरएक जैनीका मन ऐसी आसातनायें देखकर दुखता है परन्तु भिन्न भिन्न होनेकी दशामें कोई मनुष्यभी इस तरफ कमर बधी नहीं करसकता है अब आपसमें एकता होनेसे आशा होती है कि वे आसातनायें अवश्य दूर हो जावेगी

सबसे अधिक गौर करनेका काम अपने 'ट्रष्ट फण्ड" की व्यवस्थाका है, अपनलोग इस फंडकीतरफ सर्वथा ध्यान नहीं देते हैं और इसही कारणसे अपने इस फण्डसे ट्रष्टीसाहबभी बेदरकार रहते है, इस फण्डकी ठीक तोर पर कार्रवाई होना बहुतही जुरूरी बात है क्योंकि इसका हिसाब साफ न रहनेसे उस ट्रष्टीको बहुत धर्मविरुद्ध आचका आता है देव

साधु अथवा प्रतिमा वगैरहका जो ट्रष्ट है वह ऐसा नहीं है कि जिसमें एक पाईकीभी गफलत और भूल रक्खी जावे. शास्त्रोंद्वारा मालुम होता है कि विना उपयोगके ऐसे फंडमेंसे यदि एक पैसाभी अपने काममें लग जाता है या अपने पास रह जाता है तो भवांतरमें अत्यन्त दुःख सहन करना पडता है अतः इस ट्रष्ट फंडकी तरफ शीघ्र ध्यान देना अपना परम कर्तव्य है.

इन विषयोंके अतिरिक्त और जो जो उपयोगी विषय अपनी जाति और धर्मकी उन्नति करनेवाले हों उनपर चर्चा करके अपनी तरक्की करना अपना फर्ज है.

अब मेरे हाथमें समय बहुत कम है और आज विषय नक्की करनेके लिये सब्जेक्ट कमीटीका कायम होना जुरूरी है इसलिये अपने इस ऐड्रेसको मैं इस श्लोकके साथ समाप्त करताहूं:—

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ १ ॥

और आशा करता हूं कि जो शुभ कार्यका बीज इस तीर्थभूमिपर डाला गया है वह हमेशा कायम रहकर तरंह तरंहके उत्तम और रंगतदार वृक्षोंको सर सब्ज रक्खैगा. और इस बीजके बोनेवाले हाजरीन जल्साको कि जो कृपाकरके यहां पधारे हैं मैं धन्यवाद देता हूं.

१० सद्गृहस्थोंके दिलसोजीके तार और पत्र.

प्रमुख साहबको अपनो भाषण सभासदोंकी हर्षगर्जना और तालियोंके साथ समाप्त करतेही मिष्टर मोतीलाल कुशलचंद शाने चुने हुए पत्र और तार जो उन परदेशीय सद्गृहस्थोंकी तरफसे आयेथे कि जो कई कारणोंसे इस प्रथम कान्फ्रेंसमें शामिल नहीं हो सकते थे परन्तु जिन्होंने उन पत्रों और तारोंद्वारा इस सभाके साथ एकता और दिलसोजी बतलाईथी और जिनका विशेष वर्णन इस रिपोर्टके प्रथम भागमें किया

गया है सभाके समक्ष पढ़कर सुनाये कि जिनके सुननेसे सब सरदारोको बड़ी खुशी हांसिल हुई क्योंकि वे पत्र और तार हिन्दुस्थानके आगेवान सद्गृहस्थोंकी तरफसे आये थे और वे सब यह सूचना देते थे कि जो कार्य इस कान्फ्रेसमें किया जावेगा उसमें उनकी सम्मति है

११ जैन विवाहविधि.

इसके पश्चात् बड़ोदानिवासी वैद्य मगनलाल चुन्नीलालकी तरफसे जो जैन विवाहविधिकी पुस्तक प्रथमवार राजपुतानेमें इसजगह आई उसकी सूचना सभामे दी गई

१२ सब्जैक्ट कमीटी

कान्फ्रेंसका जल्सा विसर्जन होनेके पीछे उसही शामियानेके नीचे करीब२५ सद्गृहस्थ एकत्रित होकर विषय नक्की किये और दूसरी बैठक आजही रात्रिके समयमें नियत की गई

प्रथम बैठकका जल्सा करीब ३॥ बजे विसर्जन हुआ और कुल सभासद श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके मंदिरजीमे जो नवपदजीकी पूजा होती थी उसमें शरीक हुए

कान्फ्रेंसकी दूसरी बैठक.

ठहराव पहिला

इस महासभाका नाम " जैन कान्फ्रेस" रक्खा जावे

इस ठहरावको पास करनेकी योजना करते हुए शेठ पूनमचंदजी सावणसुखा बीकानेर निवासीने जो फलोधी तीर्थोन्नति सभाके प्रेसीडेंट है दरख्वास्तकी कि यह सभा जैनसमुदायके प्रतिनिधियोकी सभा है और ऐसे प्रतिनिधियोंकी सभा सत्तावाली और बाइख्तियार सभा होती है ऐसी ऐसी सभायें अपने पहले बुजुर्गोंके वक्तमें हुवा करतीं थी,अंग्रेजी शब्दके अभावमे ऐसी सभाको महासभाके नामसे पुकारा करते थे, थोडे अर्से पहलेसे जमानेके फेरफारसे ऐसी सभाये बन्द हो गईथीं परन्तु अब बृटिशराज्यके अमन आमानके जमानेमे ऐसी सभाये हर जगह और हरकोममें देखनेमें आती है इस लिये समयानुसार इस सभाका नाम "जैनकान्फ्रेस ' रक्खा जावे

इस दरख्वास्तकी ताईदमें अहमदावादनिवासी शा. मणीलाल ठगनलालने मधुर स्वरसे गुजराती भाषामें जाहर किया कि इस महासभाका नाम जैन कान्फ्रेंस रक्खा जावे, क्योंकि कान्फ्रेंसके प्रतिनिधियोंकी तरफसे सब कामकाज होता है और चूंकि अपनी इस सभामेंभी अपनी कोमके प्रतिनिधि जुदे जुदे ग्रामोंसे आकर शामिल हुए हैं इस सभाकानाम "जैनकान्फ्रेंस" रक्खा जावे.

इस दरख्वास्तको पास करते हुए प्रेसीडैंट साहबने हाजरीनजल्सेका मत लेकर सर्वानुमतिसे इस ठहरावको पास किया.

ठहराव दूसरा.

" इस कान्फ्रेसका जल्सा अनुकूल स्थलमें वर्षमें एक दफा जुरूर हुवा करै "

इस दरख्वास्त पास करनेकी योजना करते हुए मिष्टर सुजाणमलजी ललवाणी जयपुरने दरख्वास्त कीकि यह जैन कान्फ्रेंस अर्थात् जैनमहासभा कुल जैन कोम और जैन धर्मकी उन्नतिके वास्ते कायम की गई है और इस सभामें हिन्दुस्थानके कुलप्रान्त शामिल हैं किसी प्रान्त या किसी शहर अथवा ग्रामका जैनी क्यों न हो सबके लिये इस महासभाकी कार्रवाईका असर बराबर पड़ेगा. यह नहीं हो सकता कि इस कान्फ्रेंसकी कार्रवाई अमुक अमुक स्थलके श्रावकोंपर असर डाल सकती है और अमुक अमुक स्थलोंके श्रावकोंपर असर नहीं डाल सकती है और चूंकि ऐसे सुधारे एकही वक्त या एकही दिनमें नहीं हो सकते हैं इस लिये ऐसी महासभाका साल दरसाल एक दफै जहां मुनासिब समझा जावे जल्सा जुरूर हुआ करै ताकि जुदे २ प्रान्तोंमें इसकी शुभ कार्रवाईका असर पड़े और जो कार्रवाईकि प्रथम कान्फ्रेंसमें विचारी गई है उसकी अनुमोदना दूसरी कान्फ्रेंसमें की जाकर जो कुछ न्यूनाधिक करना हो वह किया जावे. इस तरह कार्रवाई करनेसे थोडे वर्षोंमें हम लोगोंको वह फल मिलेगा कि जिसका इस समय खयाल तकभी नहीं हो सकता है.

इस दरख्वास्तकी ताईदमें अहमदाबादनिवासी शा. जयसिंह भाई कालीदासने प्रार्थना की कि ऐसी सभाओंका साल दरसाल एकदफे जुदे२

प्रान्तोंमें होना बहुतही जुरूरी है और जो नेक नतीजे साहब सुजाणमलजीने बताये हैं वे इस सभाके साल दरसाल भरनेसे प्राप्त होसकते हैं

इस दरख्वास्तको पास करते हुए प्रेसीडेन्ट साहबने हाजरीन जल्साका मत लेकर सर्व सम्मतिसे इस दरख्वास्तको पास की

ठहराव तीसरा.

"अपनी जैन कोम केलवणी संबंधमें बहुत पीछे है इस खातेमे इसको आगे बढानेके लिये जैनवर्गके आगेवान गृहस्थोंको योग्य प्रयास करना चाहिये

इस दरख्वास्तको पेश करते हुए अहमदाबाद निवासी देशी मोमबत्तीके कारखानेके मालिक मिष्टर मोतीलाल कुशलचंद शा ने एक पुरजोश भाषण इस प्रकार दिया–

महरबान सभापति और सद्गृहस्थो केलवणीका विषय मेरे दिलपर बहुतदिनोंसे नक्श किये हुए था और कई वर्षोंसे मे चाहता थाकि अपना हृदय खोलकर जो दशा अपनी इस वक्त हो रही है आपके सामने पुकार पुकार कर कहू उस परमात्माके प्रसादसे मुझे आज ऐसा उम्दा मोका मिला है कि मैं आप साहबोंका ध्यान इस तरफ खेंचू

आपको अच्छीतरह मालुम है कि "विद्याविहीन पशु" अर्थात् विद्याविना मनुष्य पशु समान होता है पशुमें और मनुष्यमें यहही फरक है कि मनुष्य विद्याको प्राप्त करके अपनी आत्माका कल्याण कर लेता है. पशु कुछ नहीं कर सकता है विद्या वह चक्षु है कि जिससे जगत्के अन्तर्गत सब पदार्थ देखे जाते हैं इस आत्माके साथ अज्ञानतिमिर अनादिकालसे लगा हुआ है उस अज्ञानके अंधेरेको मिटानेवाली विद्याही है और यह विद्या मनुष्य जन्ममेंही प्राप्त हो सकती है अन्य गतिमे नहीं हो सकती है. धर्म केलवणीके बाबत तो अपने अन्य ठहरावमें चर्चा की जावेगी इस जगहमें सिर्फ दुनियावी विद्यापर चर्चा करना चाहता हूं वह दुनियावी विद्या अनेक प्रकारकी होती है. मसलन कलोंकी विद्या, फोटोग्राफ, शिल्पशास्त्र इत्यादि इनके न हासिल करनेसे

ज्यारे आ प्रमाणेनी आपणी स्थिति छे त्यारे धार्मिक श्रद्धा टकीरहे तेनाथी भ्रष्ट न थवाय तेने माटे शुं करवुं जोइए ? आ प्रश्न उत्पन्न थशे एनो उत्तर विद्वानोना मगजमांथी अनेक प्रकारनो निकली आवशे परंतु तेवा सर्व प्रकारना उत्तरोना रहस्य तरीके मारी मान्यता एवी छे, के " सांसारिक केलवणीनी साथे बाल्यावस्थाथीज धार्मिक केलवणी आपवानी आवश्यकता छे माटे तेने लगता योग्य प्रयत्नो थवा जोइए "–हूं दरखुवास्तपणे एज शब्दोमां करवा मांगूं छूं अने तेनी पुष्टीमां मारे जणाववानुं एटलुंज छे के ज्यांसुधी आपणे एवा प्रकारनी गोठवण नहीं करीए त्यांसुधी आपणा धार्मिक विचारो सुधरशे नहीं. अने धार्मिक श्रद्धा दृढ थशे नहीं. निशालमां शीखतो बालक "उं ईश्वर तुं एक सरज्यो तें संसार" एम सीखीनें आवे तेने तेनी साथेज एवी समझण आपवी जोइए के आ कवितामां जे वात कहेली छे ते बधी ईश्वरनी महत्त्वता बताववा माटेज छे पण आ संसार कांइ ईश्वरे बनावेल नथी. आ दुनयानो स्वरूप तो उपाधिमय छे अने परमात्मा ईश्वर तो उपाधिरहित सर्व कर्मथी विमुक्त, निश्चल दशासंपन्न छे, ते आवी उपाधि व्होरी लई पोताना आत्मिक गुणोने विनाश करेज नहीं एवी रीते बालक समजी शके तेवी ढबथी तेने समजाववो जोइए जेथी पूर्वोक्त कवितामां कहेलो भावार्थ तेने ठसी जाय नहीं वली "आस पास आकाशमां, अंतरमां आभास, घास चासनी पास पण, विश्वपतीनो वास " आवी कविताना तात्पर्य तरीके एम समजाववानी जरूर छे के आ कवितानो हेतु मनुष्यनो पाप कार्य करतां भय उपजाववानो छे के दरेक जग्याए ईश्वर हाजर होवाथी तुं प्रछन्नपणे कांईपण पाप कार्य करीश तो ते परमेश्वरथी छानुं रहेवानुं नथी, पण एम समजवानुं नथी के परमेश्वर, बधे व्यापक छे वा फरता फरे छे. परमात्मा तो ज्ञेयपणे सर्वत्र छे आत्मापणे सर्वत्र नथी, आवी अनेक बाबतो छे के बालकोना कुमला मगजमां प्रथमथीज सत्यपणे ठसाववानी जरूर छे आने माटे केवा प्रकारना प्रयत्नो शरू करवा जोइए तेना निर्णयने माटे सारा विद्वानोनी एक कमीटी

नीमी ते कार्य तेमने सोंपवुं जोइए अने तेउ जे निर्णय जाहेर करे तेने अमलमां मूकवा माटे श्रीमंत गृहस्थोए पोतानी कोथलीनां मोंढा छुटां मुकवा जोइए आ संवधमां कहेवानु घणु छे परंतु वखतनो सकोच होवाथी मारूं जापण आटलेथीज समाप्त करी पूर्वोक्त दरख्वास्त आप साहबोनी समक्ष रजु करूं छु आप तेना पर योग्य विचार चलावी पसार करशो

इस दरख्वास्तकी ताईदमें अहमदावाद निवासी शा. अमृतलाल रत्नचदने मुख्तसिर तोरपर इस मुजिव जापण दिया:-

प्रिय धर्मवंधुउं ! जावनगरनिवासी शा. कुवरजी आनंदजीने अछीतरंह पर सिद्ध किया है कि जवतक अपने वच्चोंको सांसारिक विद्याके साथ साथ धर्मशिक्षा नहीं दी जावेगी उसवक्त तक अपने पवित्र धर्मका सारांश अपने पुत्र पुत्रियोंके समजमे ठीक तोरपर नहीं आ सकेगा वच्चेका दिमाग कोमल होता है और जो वात ऐसे दिमागपर जमा दी जाती है वह हमेशाके लिये कायम रहती है जैसे किसी छोटे कोमल पेढपर कोई हरफ काट दिया जावे तो वह हरफ हमेशा उस दरख्त पर वड़ा होनेकी हालतमेंजी कायम रहेगा ऐसेही इस कोमल दिमागपर जमाई हुई वात हमेशाके लिये कायम रहती है इस लिये हमारा फर्ज है कि हम अपने वच्चोकी तालीमका वह प्रवंध करे कि जिससे उनके कोमल दिमाग पर अपने पवित्र धर्मकी वातें अछीतरंह जम जावे, में आशा करता हू कि शा कुंवरजी आनंदजीकी योजना पर समस्त सजासद पूरा रगौर करके उनके प्रस्तावका प्रसार करेंगे

इस ताईदके वाद सजापतिने सव सजासदोंसे राय लेकर यह ठहराव सर्वानुमतसे पास किया-

ठहराव पांचवां

"यतीम जैनवंधु और निराश्रित श्रावकोंको आश्रय देनेकेवास्ते योग्य गोठवण होनी चाहिये,-"

इस दरख्वास्तको पेश करते हुए जोहरी साकरचंद माणिकचंद घ म्मियाली मुवई निवासीने नीचे मुजव जापण दिया,-

स्तुति.

न बंधो, न मोक्षो, न रागादिलोकं ।
न योगं न भोगं, न व्याधिर्नशोकं ॥
न क्रोधं न मानं, न माया न लोभं ।
चिदानन्दरूपं, नमो वीतरागं ॥ १ ॥

महेरबान प्रेसीडेंट साहेब, तथा देश परदेशना महारा वहाला जैन बांधवो,

आजना खुशालीना प्रसंगे एक अगत्यनी दरख्वास्त मुकवानुं काम मने सोपवामां आव्युं छे. जैन कॉन्फरेन्स (अथवा जैन संघ) के जेमां हिंडुस्तानना जुदा जुदा भागना भाईओ के जेने दरेकने मलवामाटे आवा मेलावडा सिवाय बीजुं कोई उत्तम साधन अशक्य छे, ते दरेकने जोइ कोने आनंद तथा खुशाली नहि उत्पन्न थाय ? जैन तीर्थने स्थापनार श्रीतीर्थंकर भगवान् पण तेने नमस्कार करे छे, तेवा श्री जैनसंघने अत्यारे पोतानी असल जग्या श्री रजपुतानामां भेला मली संपनुं तथा ऐक्यतानुं काम करवामां शामेल थतो जोइ कोने हर्ष पैदा नहिं थाय ? जे शूरवीर भूमिमां हजारो राजाओए पोतानी शूरवीरता देखाडी हिंद भूमिमाटे पोताना प्राणार्पण कर्या छे, तेज शूरवीर भूमिमां एक वखत वधारे एक उत्तम कार्यनो पायो नाखवामां आवे ने ते पण एक शूरवीर ओसवाल जैनना हाथे त्यारे ते पाया ऊपरि भविष्यमां एक मोटी इमारत बंधाइ ते इमारत बीजाने आशरो आपनार थई पडे, एवी जो कोई आशा राखे–अने हुं पण तेवीज आशा राखुं छुं,– तो ते माटे आप सर्व साहेबो मने क्षमा करशो. भाइओ मि. गुलाबचंदजी ढढ्ढा माटे हुं बोलुं छुं तेमणे जे मुश्केल काम माटे हिंमत करी छे ते माटे हुं तेमनो उपकार मानुं छुं अने एवा सेंकडो वीररत्नो आपणामां उत्पन्न थाओ एवी प्रार्थना करुं छुं.

भाइओ, आनंदना आवेशमां हुं विषयांतर थयो छुं, ते माटे मने क्षमा करशो. बिनवारसी बालकोने तथा निराश्रित श्रावकोने आश्रय आपवा माटे योग्य गोठवण करवा संबंधी दरख्वास्त मूकवानुं काम मने सोंपवामां

आव्युं छे, अवे ते उपर हवे हु बोलीश जैनकोम जेवी श्रीमंत कोममां पण गरीब वर्ग छे, ए आप ए दरखास्त उपरथी जोइ शकशो लार्ड कर्जन जेवा एक सत्ताधिकारी ज्यारे कहे छे के हिंदुस्ताननो अडधो व्यापार जैन लोकोतरफथी करवामां आवे छे, ते वखते आपणने हर्ष थाय छे, पण तेज वखते जैनोनी गरीबाईपर विचार आवतां आपणे शोकसमुद्रमां डुबी जइये छीये आपणी जैनकोमनां केटलांक कुटुंबोमां आजकाल लाचारी तथा गरीबाई एटला तो भयकर रूपमा फेलायली छे के तेथी केटलांक आबरुदार कुटुंबो आ मनुष्य जन्मने न इच्छता मोत इच्छे छे, अथवा ते अनीतिनां कामो करवा तत्पर थाय छे मनुष्यना मोटा शत्रुओ– लाचारी तथा महोताजमंदी– जे कुटुंबमा पगपेसारो करे ते कुटुंबथी इज्जत अने आबरूनी जोइती संभाल थवी ए महा मुश्केल छे आवा केटलाक माणसो पोते बेकार होवाथी अने पेटपुरतुं पेदा न करी शकवाथी तेओ कालना चक्रना भोग थई पडी, पोतानां अति वहालां बच्चांओने छोडी दइ पोताना पेटमाटे नहि करवाना कार्यो करे छे, ने परिणामे आवां बिनवारसी छोकरां तथा बच्चांओ तथा निराश्रित श्रावको पोतानो बापीको धर्म छोडी अन्य धर्म अख्त्यार करे छे, अथवा चोरी करतां के जुगार रमतां शीखे छे, अने ए शिवायना बीजा केटलाक अनीतिना रस्ताने ग्रहण करी आ उत्तम मनुष्यभवनो दुरुपयोग करी दुर्गति पामे छे जेओना मा बापना मृत्युथी अथवा तेमनी गरीबाईथी जेओने छोडी देवामां आवेला होवाथी जेओने मा बापना खरा प्रेमनी खुबीनी खबर नथी, जे बिनवारसी बालको पोतानी गरीबाईना सबबे सर्व तरफथी तिरस्कार पामे छे जे बालकोने नीति तथा धर्म शुं छे तेनो जरापण प्रकाश न मलवाथी खोटे रस्ते चडवाने लालच थाय छे तेवा बालकोनी हालत केटली वधी दयाजनक होवी जोइए तेनो विचार आप सर्व साहेबोनी मुन्सफी उपरज सोंपु छु.

आपणे सघला वीर भगवान्‌ना पुत्रो कहेवाइये छीए, आपणी कोम असलना वखतथी एक मातबर कोम तरीके गणाती आवी छे आपणामां मोटा राजाओ पंडितो, मोटा मोटा बाहोश वजीरो, तथा हमणाना कारनेगी करतां पण वधु सखावत करनाराओ थइ गया छे? जैनोनो

मुख्य सिद्धांत दयानो होवाथी असलना जैनो दरेक दयाना काममां आगल पडता हता, एवुं इतिहास परथी तथा लोकवायका परथी साबित थाय छे. ते वखतमां जैनकोम सौथी वधु मातबर तथा वधु दयालु हती. जगडु शा जेवा शेठे हिंदुस्तानमां बार वर्षसुधीना लांबा दुष्काल वखते कोइपण कोमना तफावत वगेरे सर्वेने अन्न तथा पैसाथी मदद करी करोडोनी दोलतनो सदुपयोग करी बतावी आप्यूं हतुं के जैन कोमनी दया घणा उंचा पायापर रचायली छे. ते वखत हमणांनी माफक सुधारो तथा केलवणी न छतां भाईचारानी लागणी तथा दयानुं तत्त्व जैन कोममां केटलां बधां हतां तेने माटे उपलोज दाखलो बस छे. पण अफसोसकारक ए छे के हमणांना वखतमां तेथी उलटाज बनावो नजरे पडे छे. एक सुपुत्र, बापे मेलवेली दोलतमां तथा कीर्तिमां ज्यारे नीतिथी वधारो करे छे, त्यारे एक कुपुत्र ते दोलतनो दुरूपयोग करी दुर्दशा पामे छे. वीर भगवान्ना वखतमां तथा ते पछी जैनोनी संख्या हमणांना करतां घणी मोटी हती एम घणाकनुं मानवुं छे. ते संख्या घटीने हमणां फक्त १३ लाखना आंकडापर आवी छे. दुनियामां सौथी नानी गणाती पारसी कोम जेनी कुल संख्या ९४००० नी छे तेनाज करतां आपणी संख्या फक्त मोटी छे, ज्यारे दुनियामां मनाता बीज़ा सेंकडो धर्मो माननाराओनी संख्या आ करतां वधु छे. जैनोए आ उपरथी घणुं शीखवानुं छे. जो आ रीते दरवरसे आपणी कोममां घटाडो चालु रहे तो लाखो नहि पण असंख्यातां वर्षोथी, जे नाम तथा कीर्ति, तथा धर्म तेउए टकावी राख्यो छे; ते एक दिवस तद्दन नाबूद थइ जवानो संभव रहे छे. अने ते माटे आधुनिक कालना जैनो पण कारणभूत गणाशे. त्यारे हवे शुं करवुं ? ए सवाल उत्पन्न थाय छे. मुसलमान, खिस्ती, बौध आदि कोमो के जेनी दया कोई पण रीते जैनोनी दया करतां वधु नथी ते कोम पण पोताना भाइउनां दुःख टालवाने आश्रमस्थान तथा बोर्डींगो स्थापे छे, एटलुंज नहि पण तेमने धंधे लगाडे छे. आपणे पण लूलां, लंगडां,तथा रखडतां जानवरो, पक्षिउ तथा जंतुउ सारू पांजरापोलो बंधावी तेमां तेमने सुख आपवा उपायो योजीए छीए, पण पंचेंद्रियजीवोमां पण सर्वेथी उत्तम प्राणी–जे मनुष्य, तेने माटे आ-

पणे कांई पण नथी करता ए शु शोचनीय नथी? ज्यारे आपणो एक ञाई शीरापुरी, लाडु, दूधपाक, विगेरे जीजने तृप्त करनार वस्तुउंथी इंद्रिउंने संतोपे ठे, त्यारे आपणो वीजो ञाई रोटलाना टुकडा व गेरे माटे टटवले, सुवानी जग्या वगेरे माटे गमे त्यां रखडे, पैसा वगेरे पेट ञरवा अशक्त होवाथी गमे तेवा कार्यो आदरे, ए शु आपणने शरमावनारुं नथी? गया डुष्कालो वखते हजारो मनुष्यो, कटको रोटली वगेरे ञूखमराथी आ फानी डुनियां त्याग करी गया ठे, हजारो हिंडुउं मुसलमान थई गया ठे पन्मिता रमाबाइए स्थापेला सारदासदनमा आशरे ८०० स्त्रीउंए खिस्तीधर्म स्वीकार्यो ठे, अने हजारोनी सख्यामां वीजाउंने अन्य मीसनरीउंए वेप्टीजम आप्यु ठे!! शुं जैनोए ए उपरथी धम्रो लेवो जोइतो नथी? आपणे ए उपरथी घणुंज शीखवानु ठे आपणे आपणा डुःखी ञाइयो माटे, आश्रमस्थानो वोर्डीगो, उद्योगशालाउं, विगेरे उघामी तेउंने धधे लगामी तेउंनी जींदगीनुं तथा आपणा मनुष्यञवनुं सार्थक करवु घटे ठे एवा निराश्रितोमांथी केटलाक एवा हिराउं जलकी नीकलशे के जेउंनो प्रकाश सर्व ठेकाणे फेलाशे एवा केटलाक निराश्रितोने जैनधर्मनां उचां तत्त्वोनु ज्ञान आपी, जैन पन्मितो वनावी, ञविष्यनी प्रजा माटे ऊचा पडितो वनाववा घटे ठे के जेथी हमणा जे अन्य धर्मी पडितो वगेरे आपणे कांइ पण नथी करी शकता, तेमनी जरूर ञविष्यमा नहि पडे मारा सांञलवामां आव्युं ठे के, अत्रेना एक श्रीमंत गृहस्थ एवा एकसो वालकोने आश्रय आपवा इछे ठे ते गृहस्थने ते माटे धन्यवाद घटे ठे आवा विनवारसोने चित्रकलानो हुन्नर, वणवानो हुन्नर ञरत कामनो हुन्नर, मीणवत्ती वनाववानो हुन्नर, शिल्पकला वगेरे हुन्नरो शिखामी तेमना जीवननु ञलु करवु घटे ठे, जेथी ञविष्यमा तेउं फक्त पोतानुं के पोतानी कोमनु ञलुं करे, एटलुज नहि पण पोताना देश तथा आखी डुनियाने फायदो कर्ता थइ पड़े तद्दन निराश्रितो जेउं कांइ पण करवा अशक्त होय तेउंने जीवितदान आपवा मदद करवी जरूरनी ठे जे गृहस्थे एवा एकसो निराश्रित वालकोने मदद आपवा विचार राख्यो ठे, तेना काममा मदद करवानी तथा तेने उत्तेजन आपवानी आपणी फरज ठे प्रथम कॉन्फ-

रैन्समाज आवा उत्साही नरो नजरे पडे छे ते उपरथी एम देखाय छे के भविष्यमां आपणी उन्नति नजीक छे. अगाड़ी जणावेलां कारणोथी हुं दरखास्त मूकुं छुं के विनवारस बालकोने तथा निराश्रित श्रावकोनें आश्रय आपवा माटे योग्य गोठवण थवी जोइये, अने हुं आशा राखुं छुं के अत्रे पधारेला दरेक गृहस्थ ए बावत उपाडी लेइ पोतानो दिल-सोज टेको आपशे.

इस ठहरावकी ताईदमें मिष्टर गुलाबचंदजी ढड्ढा जयपुर निवासीने एक पुरजोश भाषण इस खुलाशेसे दिया—

"इस दरख्वास्तकी कि जो मेरे मित्र मिष्टर घडीयालीने इस वक्त आप साहबोंके रोवरू पेश की है ताईद करते हुए एक एक रोम मेरे वद-नका खड़ा होता है और हमारे दीन निराश्रित श्रावकोंकी दशा देख कर तथा हमारे यतीम जैनवच्चोंको देख कर हृदय कंपायमान होता है—समझमें नहीं आता कि जैनियों जैसी कृपालु दयालु कोमको भी ऐसी हालतमें क्यों देखना पड़ता है. हमारी कोममें दया श्रेष्ठ समझी गई है और इस ही दयाकी वजहसे हमारे दिलोंमें एक दूसरेके साथ हमदर्दी और इत्तफाक का अंकुर पैदा होता है—हमको अछी तरंह मालुम है कि जीवमात्रकी उत्पत्ति निगोदमें है और अपने अपने कर्मा-नुसार वहांसे बाहर निकल कर चोरासी लाख जीवयोनिमें भ्रमण करना पड़ता है— एक एक जीवका दूसरे जीवके साथ कई दफे कई प्रकारका सम्बन्ध होना मुमकिन है. एक समय एक जीवका दूसरा जीव भाई है दूसरे समय इन दोजीवोंका ताल्लुक स्त्री पुरुषका हो सकता है बाप बेटेका हो सकता है इत्यादि अनेक प्रकारके रिश्ते हो सकतेहैं. इस लिये जीवमात्रकी उत्पत्तिका स्थान निगोद होनेसे अपने एकजीवका नाता बाकीके जीवोंके साथ विरादरीका हुआ और जब हमारा आप-समें यह रिश्ता है तो एक जीव दूसरे जीवपर दया क्यों न करै. अज्ञा-नता से तथा अशुभ कर्मके उदयसे हमारे अंदर परस्परके ओलखा-णका ज्ञान नहीं होता है परंतु यह आम ओलखाण सबसे ज्यादा है और इस वजहसे हमको एक दूसरेके साथ हमदर्दी होती है—इस हमदर्दीका नतीजा यह है कि अव्वल तो हम किसी जीवको तकलीफ

पहुंचानेकी नियत ही नहीं करते और जहां तक मुमकिन होता है बहुतसे जीवोंको अजयदान देते हैं और बहुतसे अपंग जानवरोंकी पांजरापोल वगैरह कायम करके परवरिश करते हैं और सार संजाल करतेहैं—वे महाशय धन्य हैं कि जिनकी करुणा और दया यहांतक बढी हुई है कि जो तन मन धन लगाकर जीवोंकी रक्षा करते हैं पांजरापोलकी चाल तो प्राय: सब प्रांतोंमें जारी है परंतु खेदकी बात है कि यतीमखाना या निराश्रित श्रावकोंके लिये आश्रम कहीं नहीं देखा जाता है खयाल करनेकी बात है कि अगरचे जीवमात्रके साथ अपना सम्बन्ध निगोदकी अपेक्षासे जाईबधीका है परतु इस लोकका यहजी धारा है कि इस जन्ममें जो नजदीकी हैं वह नजदीकी समझाजाकर उससे अधिक प्यार होता है और जैसे जैसे जीवका रिश्ता दूर परें का होता जाता है वैसे वैसे उससे तालुकात कम होते जाते हैं मसलन जेसी म्होब्बत एक शख्सकी उसके सगे जाईसे होती है वैसी उसके दो चार पीढ़ी परेंके जाईसे नहीं होती और जो म्होब्बत उसकी दो चार पीढ़ीके परेंके जाईबधु से होगी वह म्होब्बत दूर परेंके कुटुम्बवालेसे नहीं होगी और जेसी म्होब्बत अपने अपने कुटुबवालेसे होगी वैसी विरादरीवालेसे नहीं होगी और जैसी म्होब्बत विरादरीवालेसे होगी वेसी म्होब्बत एक शहरवालेसे नहीं होगी और जितनी म्होब्बत एक शहरवालेसे होगी वैसी एक प्रांतवालेसे नहीं होगी और जैसी म्होब्बत एक प्रांतवालेसे होगी वेसी एक मुल्कवालेसे नही होगी और जेसी म्होब्बत एक मुल्कवालेसे होगी वैसी दूसरे मुल्कवालेसे नहीं होगी और जो हमदर्दी हमारे हमजिन्सके साथ होगी वह पशुपखीके साथ नहीं होसकती यह बात स्वयसिद्ध है क्योंकि बीरबलसे अकबरने पूछा था कि अगर मेरी और तेरी झाढ़ीमे आग लगे तो पहले किसकी बुझावे तो बीरबलने जवाब दिया कि पहले दो हाथ अपनी झाढ़ीमें डाल कर पीछे आपकी झाढी बुझाऊ इसही तरंह पर हे मेरे अक्कमंद स्वामी जाइयों जरा गोर करो जरा विचारो और देखो हमारा क्या कर्तव्य है इस समयके मुवाफिक हमारा क्या फर्ज है हमको पहले कोनसा काम करना जरूरी है और पीछे कोनसा काम करना है जब हिंदुस्थानकी दोलत हिंदु-

स्थानमें फिरती रहती थी उसवक्त यहांपर कंगालता देखनेमें नहीं आती थी सब आदमी खुशहाल थे दुर्भिक्ष वारवारमें और जल्दी जल्दी नहीं पड़ते थे चालीस पचास वर्ष पहलेतक दोपैसे में मलीदेसे पेटभर सकता था. जब सामान खानपीनका ऐसा ससता था तो फिर दरिद्रता क्यों देखनेमें आती और उस समय एक मनुष्यको दूसरे मनुष्य पर भरणपोषणके आधार रखनेका कोई मोकाही नहीं मिल सकताथा उस हालतमें कि आग हमारी झाडीमें नहीं लगी हुई थी दूसरोंकी झाड़ीमें आग लगीहुई देखकर हम उनकी झाडीकी आग बुझाने पर कमर बांधते थे अर्थात् हमारे भाइयोंको हमारी मददकी जरूरत न होनेकी वजहसे हम उनकी तर्फसे निश्चित होकर पशुपक्षीकी परवरिश करने पर कमर बस्ता मोजूद रहते थे और उस ही लीकपर अवभी चल रहे हैं यह कार्य तो हमारा उत्तम है परंतु जब कि हमारी झाढीमेंही आग लग गई तो पहले हमारी झाडीकी आगको मिटावेंगे या परकी झाढीकी आगको ? अगर परकी झाडीकी आग पहले बुझाते हैं तो तो हमारी झाडीकी आग हमको दग्ध करदेगी और जो सहायताकि हम परको दे सकतेथे वह हमारे दग्ध होजानेसे न रहेगी परिणाम इसका यह निकला कि हमभी दग्ध होगये और जिनकी हम सहायता करते थे वे हमारे अभावमें दग्ध होगये इसको ज्यादा खोल कर कहने की जुरूरत नहीं है यह बात आपके विचारने की है. मेरे कथनसे आपको अछी तरंह मालुम होगया होगा कि अब हमारे हम जिन्सोंका आधार हमारी दया पर रह गया है इस भयंकर सम्वत् १९५६ के दुर्भिक्षके सबब से हमारे सेंकडों हजारों स्वामीभाई निराश्रित हो गये हैं हमारे कम उम्रके लड़के लड़की जो कि वे उनके मातापिताके मरजानेसे यतीम होगये हैं और अब उनका मुख्य आधार हमारे ऊपर है. या तो हम उनको मदद देकर जैनधर्ममें उनको कायम रक्खें या उनकी तर्फसे आंख बंद करके उनको अन्यधर्मियांकी सहायता पर छोड़कर अपने फर्ज मनसवीके अदा करनेमें कोताही करें. अब वह समय आगयाहै कि जिसमें आंख मीचकर परम्पराकी रीतिपर चलनेसे नुकसान पैदा होता है आप लोग चतुर विचक्षण हैं

आपके बुजुर्गोंने आपके धर्मोपदेष्टाओंने आपको जलीप्रकार उपदेश देकर समकाया है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव देखकर काम करो–पस अब के बदले हुए समयके मुवाफिक आप लोग विचार कर काम नहीं करोगे तो धर्मोपदेष्टाओंकी आज्ञाका जग करनेसे दोषी ठहरोगे अब समय वह आगया है कि जिसमें प्रथम अपने जैन निराश्रित श्रावक श्राविका तथा अनाथ बच्चेबच्चियोंकी तर्फनिगाह जाल कर उनका प्रबंध ठीक तोरपर करे ताकि वे प्रफुल्लित होकर इस जैनधर्मको जली प्रकारसे साधन करके अपनी आत्माका कल्याण करें–

क्या यह बात अफसोसके लायक नहीं है कि हम उमदा खुराक घी,, दूध बूरा वगैरह तरह तरंहके मिष्टान्न खावें रेशमी गोटे किनारीदार चमकीले बढिया कपड़े पहनें, गाडी घोडा पर चढ़ कर मजा उमावे इतर फुलेल लगा कर शोकीन कहलावें और हमारे स्वामीजाई बगैर कपडे मजबूरीके साथ गृहस्थावस्थामे ही नग्न दशामें आजावें एक एक दो दो दिन अन्नके दर्शन तक नहीं और जूखे मरते इधरके उधर डावां डोल होते फिरें और धर्मसाधन बिल्कुल न करसकें हर सच्चा जैनी इस बातको हरगिज रवा नहीं रख सकता है न दूसरे उसको इस सबबसे अच्छा कहसकते हैं इसलिये हे जाइयो निद्रा गेडो हट धर्मको गेड़ो कर्तव्य अकर्तव्य पर गौर करो पहले करनेका काम पहले करो पीछे करनेका काम पीछे करो और किसी न किसी तरहंपर अपने स्वामी जाइयोंको मदद देकर पुन्य बढावो (इस समय सजाके सब सजासदोको बड़ाजारी जोश आ रहा था और केसरीमलजी लूणया अजमेरनिवासी तथा दो चार और गृहस्थोंकी आंखोंमेंसे आसूकी धारा बहती थी) मेरी हाथ जोड़कर यहही प्रार्थना है कि निराश्रित जैनियोंके लिये और यतीम जैन बच्चोके लिये योग्य प्रबंध करके कृतकृत्य होवो–

इस ताईदी जाषणके खतम होने पर प्रेसीडेंट साहबने यह रीजोल्यूशन सजाके विचारके लिये सजामें पेश किया चुनांचे यह ठहराव सर्वानुमतसे पास हुवा

ठहराव छट्टा.

" जो जो तीर्थ अथवा परचूरण जैनमन्दिर जीर्णस्थितिमें आगये

हैं उनकी एक लिस्ट तयार कराकर उसके पीछे उनके जीर्णोद्धारके लिये मुनासिब प्रयत्न होना चाहिये—"

इस दरख्वास्तको पेश करते हुवे महुवा निवासी प्रोफेसर नथुभाई मंछाचंदने इस प्रमाण भाषण दिया—

" प्रमुखसाहब तथा सुज्ञ धर्मबंधुओ ! जैनदर्शननी मूर्तिमान् भव्यता आ कालमां जे कांइ उत्तम स्वरूपे आपणी दृष्टिपथे आवेछे ते मात्र आपणां पुरातन जैनमंदिरोनेज लइने छे जे अनर्गल द्रव्यनो सदुपयोग आपणा प्राचीनकालना वडीलोए करी आपणा ऊपर उपकार कर्यो छे ते तेमना उपकारनो बदलो वालवाने आ कालमां आपणामां शक्ति होय एवुं तो देखवामां आवतुं नथी परन्तु तेमनां करेलां महाभारत कामोनुं संरक्षण करवा पूरती कालजी जो आपणे न राखीए तो आ कालमां आपणा जेवा कृतघ्न बीजा कोण गणाय ? आबूपर्वतना विमलशा अने वस्तुपाल तेजपालनां दैवी मंदिरो निहालतां जोनारने खात्री थायछे के पोताना अने परना मात्र उपकारने अर्थेज किरोड़ो रूपयानो खर्च थयेलो छे ए जैनमंदिरो देखतांज आत्माने भक्तिनो वीर्योल्लास प्रकट थाय छे. जे मनुष्य ए मंदिरो देखवाने भाग्यशाली थयो नथी तेनो मनुष्य अवतार मनुष्य छतां पशुतुल्य छे, एवां जिनमंदिरो तथा अन्यस्थलनां जिनमंदिरो जेवां के राणकपुरजीनो भव्य जिनमंदिर कुंभारीयाजीनां देरासरो, पंचतीर्थीनां भव्यमंदिरो, प्राचीन नगरीओनां मंदिरो इत्यादि जैनमंदिरो जे जे स्थले जीर्णस्थितिमां आवी पड्यां होय ते सर्वेने समरावावा सारू जैनोए पोताना न्यायोपार्जित द्रव्यनो भोग आपवानी खास जुरूर छे. मुंबइना माजी गवर्नर लार्ड रे पालीताणे आव्या ते वखते सिद्धगिरिराज ऊपर तेमने मानपत्र आप्या वाद तेमना जवाबमां तेओ साहेब बोल्या हताके जैनोनी खरी जाहोजलाली तेमना प्राचीन मंदिरोने जोतां भूतकालमां सर्वोत्कृष्टपणे हशे. आबूपर्वत ऊपरनां जिनमंदिरोने जोइए छीए त्यारे आपणे जाणे स्वर्गमां होइए एवी भव्यता लागे छे अने आ शत्रुंजय उपर मंदिरो जोतां जाणे आ पर्वत ते मंदिरोनुं शेहेर होय एम स्पष्ट भास थाय छे माटे जैनोनी फर्ज छे के जे जे

पुरातन मंदिरो होय तेनुं संरक्षण करवामां कोइ पण रीते वेकालजीवाला रहेवु न जोइए–

मानवंता लार्ड रे साहेवनां वचनो आपणने केटलो धडो लेवा शिखवे छे तेमज आपणा शास्त्रमां पण नवां जिनमंदिरो करतां जीर्ण मंदिरनो उद्धार करवामां आठगणु पुण्य वधाय छे एवुं कोइक प्रसंगे मारा सांभलवामां आव्युं छे जोके कया शास्त्रमां ते लखेलुं छे ते हुं वरावर जाणतो नथी तोपण एटलु तो चोकस मारू सवल अनुमान छे के नवां जिनमंदिर वनावनारने पोतानी कीर्ति या नामनी महत्त्वता वावत इच्छा रहेती होवाथी (जो कोइने तेवी होय तो तेनेज माटे मात्र मारू वोलवु छे) तेने जेटलुं पुण्य थाय तेना करतां वीजाए करावेलुं मंदिर जीर्ण थइ गयुं होय अने तेने समरावचामां पोतानी नामनानो सवाल नहीं आवतो होवाथी जीर्ण मंदिरने समरावचाना काममां पैसानो सदुपयोग करनारने विशेष पुण्य थवानो संभव जणाइ आवे छे तेमज तेवा पुरातन मंदिरोना कर्ताना उपकारनो वदलो वालवानी जे जैनोनी फरज छे ते पण अदा थाय छे

आ उपरथी आप सर्वे विचारी शकशो के तेवां जीर्ण थइ गयेलां भव्यमंदिरो समरावचा माटे आपणे वेदरकार रहीशुं तो तेना करतां विशेप शरमिंदगी लगाडे तेवी वीजी कइ वात छे आपणा प्राचीन वडीलो जेउए भव्यमंदिरो बंधावी आपणा उपर उपकार करेलो छे तेउं फरी अत्रे पधारी (जे मात्र कल्पनारूप छे) आपणी वेदरकारी तरफ ख्याल करी आपणने वे वोल कहे तो तेथी आपणे केवु शर्मावु पडे? दृष्टांत तो तेना जेवुज वने'–जेम कोइ पुत्रनु निरंतर वात्सल्य चाहनारो पिता पुत्रना हितने खातर सारी हवेली वधावी कार्यार्थे परदेश गमन करे अने घणे वरसे दूर देशावरथी आवी पोतानी वंधावेली हवेली जीर्ण स्थितिमां देखे ते वखते ते पिताने पोताना पुत्रनी वर्तणुकने माटे जेवो खेद थाय तेना जेवी आ पण खेदकारक वीना समजवी तेथी जीर्ण जैनमंदिरानो पुनरुद्धार करवामां न्यायोपार्जित लक्ष्मीनो निरंतर व्यय करवा ते जैनोनु अवश्य कर्तव्य छे जैनोए पोतानीज लक्ष्मीनो व्यय करवो एटलोज कांइ मारा वोलवानो सार नथी, परंतु जैनमंदिरमां

आंगीनिमित्तें, पूजानिमित्तें, महोत्सवनिमित्तें, रथयात्रानिमित्तें, इत्यादि अनेक धार्मिक प्रसंगोना निमित्तथी मंदिरोमां देवद्रव्यनी वृद्धि थाय छे. ते वृद्धि केटलांएक मंदिरोमां तो लाख नहीं परन्तु लाखो रूपैयानी थएली छे. ते रूपैयानी रकमनो सदुपयोग तो त्यारेज थयेलो गणाय के बीजां जीर्ण जनमंदिरोनो उद्धार करवामां ते रकमनो अथवा तो तेनी कांइ पण मोटी रकमपूरता सारा जागनो उपयोग करवा देवामां आवे. आ प्रसंगे हुं पण कोइ खास मंदिरना वहीवट करनाराउने उद्देशीने बोलवा मांगतो नथी परंतु एटलुं तो मारे कहेवुं जोइए छीए अने ते पण बलता हृदयने साथे कहेवुं जोइए छीए के जिनमंदिरोमां एकत्र करवामां आवेला देवद्रव्यनी उपर शास्त्रमां फरमाववामां आवेला नियमोने अनुसारे तेनु संरक्षण अथवा तेनी वृद्धि करवानी तेमज तेनो व्यय करवानी मनोवृत्ति नहीं छतां (जो हशे तो कोइ विरलाने) तेना उपर तेना मैनेजरोने महामोह उत्पन्न थयेलो प्रत्यक्ष रीते देखाइ आवे छे. ते देवद्रव्यनी मिलकत सार्वजनिक मिलकत छतां तेना उपर स्वस्वामित्वनो हक होय तेवा तोर दोरथी वरती इतर मनुष्योने पोतानी समजण मुजबना धर्मनां कामोमांज ते रूपैया वपरावा जोइए एवो बतावे छे. शास्त्रमां फरमावेली आज्ञानुसार जो देवद्रव्यनुं संरक्षण तथा उपयोग करवामां आवेतो देवद्रव्यनी कांइ पण रकमनी आशामी बाद पडे नहीं वा खवाइ जाय नहीं वा तेनो नाश पण थाय नहीं परंतु शास्त्रविरुद्ध आचरण देवद्रव्यनी बाबतमां थतुं होवाथी केटलाएक वहीवट करनाराउ मोटी रकमनुं देवद्रव्य खाइ गयेला मालम पडेला छे. केटलाएके तेनो गेरउपयोग करेलो पण साबित थयेलो छे अने एवी रीते लाखो बल्के तेथी पण मोटी रकमोनो गेरउपयोग वहीवट करनाराउनी मंदबुद्धिथी वा दुष्टबुद्धिथी थयेलानां दृष्टांतो मोजूद छे. ए प्रमाणे थवानुं खरूं कारण महारा वहाला बंधुउ तमे खोली काढवाना प्रयत्नमां जरा उतरशो तो आपने प्रगट रीते सूझी आवशे के ते देवद्रव्य उपरनो तेमनो महामोह तेमनी शास्त्रना नियम विरुद्धनी आप कुदीसत्ताज छे. शुं आदीश्वर जगवान्नी जक्ति पूजा विगेरे कार्यों कर-

वाथी उत्पन्न थयेलुं देवद्रव्य महावीर जगवान्ना मोटा जीर्णमंदिरोद्धारना काममां उपयोगमां न आवी शके ? तमे सर्वे जाइउ एकी अवाजे कहेशो के उपयोगमां आवी शकेज (तालीउ अने उपयोगमां आवी शकेनो हर्षनाद) त्यारे हवे सवाल ए थाय ठे के पृथक् पृथक् जिनमंदिरोमां उत्पन्न थयेलु देवद्रव्य सार्वजनिक ठतां (तेमज देवद्रव्यनो उत्तम प्रकारनो सदुपयोग तो त्यारेज थयेलो कहेवाय के ज्यारे तेनो व्यय जीर्णोद्धारमां करवामां आवे त्यारे) तेनो उपयोग बीजां जीर्ण मंदिरोनो उद्धार करवामां न आवे तो तेना करतां बीजी कइ जूल गणाय, अरे कहेवाद्यो के बीजो कयो ह्मोटो गुन्हो गणाय? (हीयर, हीयरना शब्दो) केटलाएक टुकी नजरवाला देवना जक्तो तथाने मेनेजरोने मे बोलतां सांजल्या ठे के फलाणा देरासरवालाए परमेश्वरनी सावसोनानी आंगी बनावेली ठे अने आपणा देरासरमां घणा रूपैया ठे तो शा माटे आपणे हीराजडित सुवर्णनी वा हीरा माणेकनी आंगी न बनाववी जोइए आवा प्रकारनी चर्चा करनाराउ मध्येना एक जाइनी साथे मारे वार्तानो प्रसंग पड्यो हतो मे पूछ्युं के अमुक देरासरमां केटला रूपैयानी पूंजी हशे? त्यारे तेणे कह्यु के,दरदागीना उपरांत लगजग बे लाख रूपैयानी पूंजी हशे पठी मे कह्युं के, ज्यारे बे लाख रूपैयानी रोकड़ पूंजी ठे त्यारे हीरामाणेकनी आगीने बदले सोनानी आंगी जगवान्ने माटे करावी पोरवाड़ धनाशा जेवाए नवाणु, लाख (नवाणु करोड?) जेटलुं द्रव्य खरची राणकपुरजीनु देरासर करावेलुं ठे तेनो केटलोएक जाग बहूज जीर्ण थइ गयेलो ठे तेथी ते महान् अद्भुत देरासरनो जीर्णोद्धार करावबामां एक लाख रूपैयानी रकम आपवानो विचार बनी शके खरो? मारा सवालनो उत्तर आपवामा ते शेठीयाजी मौन रह्या सारांश ए ठे के पृथक् पृथक् मदिरोमा देवद्रव्यनी वृद्धि ठता अने ते द्रव्य सार्वजनिक ठतां अर्थात् सर्व मंदिरोना उपयोगमा लेवु जोइए एवी शास्त्राज्ञा ठता अने एक मंदिरना उपयोगने माटे जोइए तेना करतां वधारो ठतां बीजा जीर्ण मंदिरोना सुधारा माटे नहीं आपवु ते एक कुटुम्बमां सार्वजनिक उपयोगवालु द्रव्य ठे ते द्रव्यनो ते कुटुम्बना अमुक माणसो जेउ निरोगी ठे तेउनी खोराकी पोशाकी उपरांत तेमने सोना-

ना अने हीरा माणेकना दरदागीना करावी शणगारवामां उपयोग करवा अने अमुक माणसो जेओ रोगग्रस्त छे तेओने दवा प्रमुख औषधोपचार करी साजा करवामां लेश मात्र उपयोग नहीं करवो तेवा प्रकारनुं कार्य करवा बराबर छे.

तेथी सर्व जैन बंधुओने मारी नम्रतापूर्वक विनंति छे के आबु, गिरनार, तारंगा, शत्रुंजय, राणकपुर, कुंभारीआजी तीर्थनी प्राचीन भूमिकाओ इत्यादि अनेक स्थले ज्यां ज्यां जीर्णमंदिरो थइ गएलां होय ते ते जीर्ण मंदिरोनो पोताना द्रव्यथी तथा सार्वजनिक अने मंदिरोना देवद्रव्यथी उद्धार करावबामां प्रयास करवो जोइए—

हवे मात्र बे बोल तीर्थनी उपर थती तथा जिनमंदिरोपर थती आशातना सम्बन्धमां बोली हुं मारुं बोलवुं खतम करीश तमे सर्व भाइयोना जाणवामां आव्युं छे के, आपणां आवां पवित्र तीर्थो उपर केटलाएको मांसाहार करे छे तेमज मदिरा पान पण करे छे. केटलाएको बूट तथा जोडा पहेरी आपणां मंदिरोमां दाखल थाय छे इत्यादि अनेक प्रकारनी आशातनाओ आपणा अंतःकरणने दुःख उत्पन्न करनारी बीजाओना तरफथी थाय छे तेवा प्रकारनी आशातनाओ दूर करावबासारू प्रयास नहीं करतां शुं आपणे मूंगे मोढे बेशी रहवुं जोइए. शुं एक मुसलमान, पारसी के क्षत्रिय पोतानी देवनी पवित्र भूमिने कोइ पण तेवी रीते अपमान करतो देखीने मूंगे मोढे जोतो जोतो सहन करी शकशे? कदापि सहन नहीं करे. तेनी शीराओमां लोही उछले छे, जेना शरीरमां साचुं वीर्य छे, तेवा वीर पुरुषनी सन्मुख आशातना करनारो पण आशातना करतां ध्रुजे छे थरथरे छे. खरी रीते बोलीए तो जैनधर्म ते क्षत्रिय मरदोनोज छे. वणिक वर्गना बच्चाओ वीर्यनी बादबाकीवाळा होवाथी अर्थात् शौर्यहीन होवाथी उत्तम प्रकारे जैनधर्मने पाली के पळावी शकता नथी. एटलुंज नहीं पण अंग्रेज सरकारना आवा अदल इन्साफी राज्यमां जे तदबीरथी आपणी तीर्थनी भूमिकाओ उपर तेमज जिनमंदिरमां आशातनाओ थती अटके तेवा प्रकारनां कार्यो करवामां तन मन अने धनथी प्रयास करता नथी एज अत्यंत खेदकारक बीना छे.

उत्तम खवासना अने अमीरी प्रकृतिना अधिकारीओ तो कदापि

आशातना करवा जेवी जूल करताज नथी मुंवइना माजी गवनर लार्ड रे ज्यारे शत्रुंजय तीर्थ पर पधार्या हता त्यारे तेउ साहेवे प्रथमथीज पोताना वूंट उतारी कपमाना जोड़ा पहेरी लीधा हता अने त्यार पठीज देरासरोनी मुलाकात तेमणे लीधी हती हिंदुउनां तीर्थो उपर तेउ केवी स्वछता राखे ठे तेनो पण जरा खयाल करो पवित्रता ए धर्मनी श्राद्य जूमिका छे तेथी आपणा पवित्र डुगर शत्रुंजय जेवा तीर्थ उपर लोको पेशाव करे, जाड़े फरे अने मजुर लोको पण अनेक प्रकारना अनीतिजरेलां कामो करे तेवां तेउनां कार्यो तरफ वेदरकार रहेवु ते शुं ओतुं शरमजरेलु ठे ? (Shame, Shme !) तेवुं सघलु आपणी नवलाइ सूचवे ठे एटलुं ज नहीं पण आपणी नानकड़ी कोममां संपनुं तत्व खरूज खामी जरेलु ठे एम स्पष्ट रीते देखाडी आपे ठे मने खात्री ठे के, तमो जीर्ण मंदिरोद्धारनी तरफ अवश्य लक्ष देशो

सोजत हाकिम जंडारी मंगलचदजीने इस दरख्वास्तकी ताईदकी और जीर्णमंदिरोद्धारकी आवश्यकता वतलाई

जिसपर वीकानेर निवासी शेठ पूनमचंदजी सावणसुखाने सूचनाकी कि आजकलका जीर्णमंदिरोद्धार ठीक तोरपर नहीं होता है– पुरानी खुवसूरती और पायदारीको खो देता है इस लिये जीर्णोद्धारमें इन वातोंका खयाल रक्खा जावे.

सजापतिने सजाका मत लेते हुवे सर्वानुमतसे इस सुधारेके साथ कि " जीर्णोद्धार योग्य रीतिसे होना चाहिये " यह ठहराव पास किया–

ठहराव सातवां.

" इस फलोधीतीर्थके मंदिर वगैरहमे जो वहुत गेर संजाल और आशातना होती हे इसका यह कान्फरेंस दिलगीरीके साथ नोट लेती हे और आशा रखती है कि इस तीर्थका हिसाव " श्रीफलोधीतीर्थोन्नति सजा " मेरताके गृहस्थोसे समजकर वहुत जल्द प्रसिद्ध करेगी और उसकी आमदनीमेंसे मंदिरके अदर रंग रीपेयरका काम वहुत जल्दी करावेगी"–

इस ठहरावको कान्फरेसमें पेश करते हुवे शेठ दीपचंद माणकचंद मुंवई निवासीने दरख्वास्तकी कि अपनी प्रथम कान्फरेंस इस फलोधी

तीर्थपर " श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा " के प्रयाससे जारी है और जैन इतिहासमें इस तीर्थ और इस सभाका उपकार सोनेके हर्फोंसे लिखाये जानेके काविल है बल्कि अपनी संतान इस प्रयासको हमेशां याद रख कर भला मानेंगे. ऐसी तीर्थभूमि पर जहां साल दरसाल हजारों यात्री इकठे होकर धर्म महोत्सव करते हैं मंदिर वगैरहमें गैर संभाल रहै अथवा इस मंदिरमें आशातना देखनेमें आवे यह वात वडी अफसोस वाली है. मंदिरमें अंधेरा रहना या पूजाकी सामग्री ठीक न होना या मर्द ओरतकी भीड भाडसे धक्का धुमका होना स्नान करके पूजा करनेको जानेवालोंका विना स्नान करे हुवेसे संघटा होना मर्द ओरतका मंदिरकी भमतीमें ठहरना, रोटीखाना, पानीपीना वच्चे वच्चीको रखना, सोना, वैठना इत्यादि अनेक प्रकारकी आशातना देखकर दिलको दिलगीरी होती है—मंदिरकी मरम्मत ठीकतौर पर न होना मंडपमें रंगरीपेयर न होना दुरुस्त नहीं है. मंदिरका जमाखर्चका हिसाव मालुम न होना हानिकारक है हिसाव मालुम होनेसे तथा उसमें जो कुछ वचतहो उसके मालुम होनेसे उस वचतसे सुधारेका वहुतसा काम हो सकता है इस लिये इस ठहराव की खास जुरूरत है कि मेरतावालोंसे हिसाव समझ कर "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसभा " उस हिसावको छपा कर प्रसिद्ध करै और उसकी आमदमेंसे रंगरीपेयरका काम करावें तथा इस मंदिरकी आशातना और गैर व्यवस्थाको टालें.

इस रीजोल्यूशनकी ताईद करते हुवे भावनगरनिवासी शेठ कुंवरजी आणंदजीने दरख्वास्तकी कि साधारण तोर पर ही मंदिर अछा सुहामणा चमकीला दमकीला होना चाहिये कि जिसकी वजहसे दर्शन करनेवालेका मन शांत हो. मंदिर देरासर वगैरह चित्तकी वृत्तिको शांत करनेके लिये हैं और जब ऐसे मंदिर देरासरमें रंगरीपेयर वगैरह ठीक ठीक न हो तो दर्शन करनेवालेका वह आल्हाद नहीं उत्पन्न होता कि जो होना चाहिये. पस जब कि साधारण मंदिर देरासरका यह हाल है तो तीर्थयात्राके स्थानपर तो अवश्य दिलरंजन मनोवृत्तिको शांत करनेवाला मंदिर होना चाहिये और वहां पर किसी किस्मकी आशातना न होनी चाहिये. अलावा इसके देवद्रव्यकी व्यवस्था ठीक होनी चाहिये क्यों-

कि इस द्रव्यका भूलसे रहा हुवा पैसा भी बहुत दुखदाई होता है इसलिये हस्व दरख्वास्त शेठ दीपचंद माणकचद इस तीर्थका हिसाव प्रसिद्धिमें आना वाजिव है और इसका रंगरीपेयर होना जुरूरी है–

इस दरख्वास्तको प्रेसीडेंट साहवने हाजरीन जलसाकी रायके वास्ते जलूसेमें पेश की तो सवके इत्तफाकसे पास हुई

॥ ठहराव आठवां ॥

" जहां जहां अपने पुस्तकोंके भंडार होवें वहा वहांके पुस्तकोकी टीप पुस्तकोंकी स्थितिके साथ इस कानफ्रन्सकी तर्फसे कराकर छपा नी चाहिये "

इस दरख्वास्तको पेश करते हुवे "श्रीतत्त्वविवेचक" पत्रके अधिपति अहमदावाद निवासी शा. गोकलभाई अमथाशाने पुरजोश नीचे प्रमाण भाषण दिया–*

महरवान सभापति साहव और भाइयो! आवा एक अमूल्य विषय उपर पोताना विचार दरशाववानी तक मळे ते दरेक भाईने माटे खरा सद्भाग्यनी वात छे दुनियानी दरेक सुधरेली प्रजा पोतानां धर्मशास्त्रो अने ग्रथोनी सार सभाल राखवाने आतुर होय छे. पोतानो धर्म तत्त्वदृष्टिथी जोतां गमे तेवा नवला पाया उपर रचाएलो होय, तो पण जेने पोते धर्मनी संज्ञाथी माने छे ते तर्फ ते प्रजाना घणा भागनी लागणी सामान्य रीते दोराय छे खिस्ती प्रजाउ तरफ जोशो तो जणाशे के रेतीना पाया उपर चणातर चणवानी माफक पोताना सामान्य कुतूहल उपजावे तेवी हकीकतना पाया उपर रचाएला धर्मनां सेकडो पुस्तको केवा उत्साहथी वहार पाडे छे? तेज प्रमाणे बीजी कोमवाला तरफ पण नजर करीशु तो तेमनो ते तर्फनो उत्साह आपणने दाखलो लेवा योग्य जणाशे. ज्यारे आवा अनेक मतानुयायिओ पोतपोताना धर्मना पुस्तको अने शास्त्रोने माटे आवी रीते उत्साह राखे छे त्यारे किंचित् मात्र पण विरोध अथवा वाधारहितपणे पदार्थोनुं सत्य ज्ञान निरूपण करी तत्त्वज्ञानना अखूट खजानारूपी अमूल्य वारसानुं दान देता एवां आपणां पवि-

* यह भाषण धर्णाकी मातृभाषामें लिखा हुआ हरफ वहरफ छपा है.

त्र शास्त्रो अने ग्रंथो तरफ आपणे दुर्लक्ष दाखवीए ते शुं आपणी माणसाइनें शरमावनारूं नथी ?

पवित्र जैनधर्मनां शास्त्रो आदिनो उद्धार करवो ए आ जगतमां रहेला सत्य तत्त्वज्ञाननो उद्धार करवा बरोबर छे कारणके जे तत्त्वज्ञाने यूरोपियन विद्वानोनुं ध्यान आकर्षिने ते संबंधी निरंतर शोध खोलना कामना तेमने जोड्या छे के जेने परिणामें जैन धर्मना सनातनपणा माटे घणा अमुक पुरावा शोधी काढवामां आव्या छे तेने भंडारोमां उधइथी खवातुं अथवा देखरेखनी खामीथी चूर्णप्राय थतुं रहेवा देवुं ए खरेखर हतभाग्यनी परिसीमा छे. जैन तत्त्वज्ञान अद्वितीय छे अने जेनी साथे तेमा कर्मनी प्रकृति आदिनुंज चमत्कारिक स्वरूप कथन करेलुं छे तेनो एक अंश पण अन्यमतोनां पुस्तकोमां छेज नहीं. आ तत्त्वज्ञाननो चमत्कार एवो छे के व्यास अने शंकर आदि पुरुषो पण तेने यथावस्थित रीते समजी शक्य नथी के जेथी सप्तभंगीनुं खंडन करवाना निरर्थक प्रयासमां खोटो पूर्वपक्ष लइने तेमणे पोतानुं अज्ञानपणुं मध्यस्थ पुरुषोनी समक्ष खुलुं पाडी आप्युं छे, स्याद्वाद न्यायनुं खंडन करवाने अनेक कुवादिओए तेनो खोटो पूर्व पक्ष लेवापूर्वक प्रयत्न करेलो छे पण ते स्वाभाविक रीते निष्फलज गयो छे. व्यास,शंकर पछी हालना समयमां आर्यनामधारी समाजवाला दयानंद सरस्वतीए जैन धर्म उपर आक्षेप करवा प्रयास लीधो छे अने तेमां चार्वाक मतनी शाखा तरीके जैनधर्मनेज उलखाव्यो छे तेमां तो मोहांधकारथी थतां मतिभ्रमनी अवस्थानी छेकटोचे पहुंचवा जेवुं तेमणे साहस खेड्युं छे.

परस्पर विरोध अने बाधारहित एवी श्रीजिनवाणीनो अखंड प्रभाव जालवी राखवो ए मुख्यत्वे करीने दरेक जैननुं अने सामान्यताए दरेक मनुष्यमात्रनुं कर्तव्य छे. पण ज्यारे जैनो पोतानी फरज न समजे त्यारे बीजानें शुं कहेवुं ? जो ज्ञाननो उद्धार न थाय अने उलटी तेनी अपदशा थती जाय तो सेंकडो जमणवारो अने खान पान मोज शोख वगैरहमां जे पैसानो व्यय थाय छे ते फकत पोतानो कर्म संचय बधारवाने माटेज थाय छे एम समजवुं. आनी साथे पुस्तकोनी टीप करवानी बाबत पण अवश्य जरूरनी छे के जेथी आपणुं ज्ञानधन केटलुं सच-

वाइ रह्युं छे तेनी आपणनें खबर पडे आपणे वर्षे आखरे उपज खर्चनुं सर्वेयुं काढीये छीए कारणके आपणो केटलु धन कमाया तेनी खबर पडे तो आ लोक अने पर लोकमां आपणा आत्माने हितकारी थइ पके ते- वा ज्ञान धननु सर्वेयु आपणे अवश्य काढवुंज जोइए अने तेथीज आ ठहरावमां सूचव्यां मुजब आपणा नंमारोमाना पुस्तकोनी टीप आपणे करावावी जोइए पहला तो दरेक नमारमानां पुस्तकोनी टीप करावावी अने पछी विषयना अनुक्रमसर एटले के न्याय, व्याकरण, अलंकार, सूत्रो, टीका, निर्युक्ति, नाष्य आदि विषय मुजव तेना क्रमसर टीप व- हार पाम्वी आ काम आपणा आगेवानो मन उपर लेशे तो भडारोना अधिकारी पुरुषो वगैरह उपर पोतानो वगसग चलावीनें तथा समजा- वत पतावटथी काम पार पाडवामा तेमने पोताना पुन्य बलथी कांई पण अम्चण आवशे नहीं

शा. गोकलनाई अमथाशाके प्रस्तावकी ताईद करते हुवे नावनगर निवासी शा कुंवरजी आणंदजीने इस प्रकार नाषण दियाः—

प्रमुख साहेब अने गृहस्थो मारा मित्र गोकलनाई अमथाशा ए "ज्यां ज्यां आपणा पुस्तकोना नंडार होय त्यां त्यांना दरेक पुस्तकोनी टीप पुस्तकोनी स्थिति साथे आ कॉनफरन्स तरफथी करावी छपावीनें बहार पाडवी" एवी दरख्वास्त आपनी समीपे एकटुंक नाषण साथे रजुकरी छे ते दरख्वास्तना विशेष स्पष्टीकरण माटे मारे बे बोल कहवा- ना छे. आपणे वास्तविक वारसो आपणा सर्व मान्य परम पूज्य पूर्वाचा- र्यो तरफथी आपणने मलेलो जो कोई पण होय तो ते आपणा धर्म शा- स्त्रोज छे जे शास्त्रो समुद्रसरखी बुद्धिना धणी महागीतार्थ श्रुतकेवली एवा पूर्वाचार्योंए आपणा उपरनी एकांत उपकार बुद्धिथी महाप्रयास लइनें रचेला छे, लखेला छे अने तेनी अनेक प्रतो करावीने आपणा पूर्व वडिलोए तेने पृथक् पृथक् नमारोनी अंदर मूकेली छे आ आपणो अमूल्य अने अपूर्व वारसो छे. आपणे एटली बधी अज्ञान दशामा मग्न थइ गया छीए के तेवी आपणी अपूर्व दोलतनो उपनोग करवो तो रह्यो पण तेनी संख्या वगैरहनु ज्ञातापणु पण धरावता नथी तेमज तेनी सार संनाल करीनें ते दोलत विनाश न पामे, घटे नहीं तेमज दुश्मनोना

हस्तगत थइ जाय नहीं तेटलुं पण करता नथी. आपणे सुपुत्रो छे ना? सुपुत्रो तो पोताना वडिल तरफथी मलेली दोलत संभाले छे, तेमां वधारो करे छे अने तेना उपभोग पण लेछे. आपणे सुपुत्रां क्यारे ठरीए के ज्यारे आपणे आपणा पूर्वाचार्योना करेला तेमज भंडारोमां रखायेला धर्म शास्त्रोनें कोइ पण प्रकारनी हानि न पहोंचे तेम संभालीए, तेमा ज़र्जरित थएला होय तेनु पुनः लेखन करावी शुद्ध करावी असल स्थितिमां स्थापन करीए अने संस्कृत तेमज मागधी भाषानु परिज्ञान मेलवीने तेनो अभ्यास करीए, तेमाना अपूर्व रसनु पान करीए के जे रस अमृत रूप थइने आपणा जन्म मरण घटाडी दे. ज्यां सुधि आपणे आ प्रकारे करीए नहीं त्यां सुधि आपणे सुपुत्रोनी पंक्तिमां दाखल थइ शकीए नहीं.—

बीजी बधी बाबत तो दूर रहो पण प्रथम आपणे एटली संभाल तो करके आपणा पूर्वजोनी पारावार दोलतमांथी कालना क्रम वडे प्राप्त थएल अनेक प्रकारना उपद्रवोनु उल्लंघन करीने तेमांथी केटली दोलत बची छे. आ बाबत ज्यारे आपणे प्रयत्न करीशुं त्यार पछी आपणनें भान थशेके अरेरे! शुं आटली बधी दोलतमांथी आटलीज रही खेर हवे जे बन्युं ते खरुं पण हवे आ मांथी घटवी न जोइए, नहीं तो पछी आपणे निर्धन थइ जइशुं.

जरा नजर करशो तो मालम पडशेके श्रीउमास्वाती वाचकना करेला ५०० ग्रंथोमांथी पूरा पांच पण अत्यारे द्रष्टिए पडता नथी, श्रीहरिभद्र सूरी महाराजाना करेला १४४४ ग्रंथो मांथी सेंकडा बाद करतां बाकी रहता ४४ पण लभ्य थता नथी. श्री हेमचन्द्राचार्यना करेला साढा त्रण क्रोड श्लोक मांथी पूरा साढा त्रण लाख पण प्राप्त थता नथी, एटलुंज नहीं पण शुमारे २०० वर्ष अगाउ थयेला श्रीमद्यशोविजय उपाध्यायना करेला १०० ग्रंथो मांथी अडधापण नजरे पडता नथी. आवा आवातो अनेक दाखलाउं छे. आटला बधाविनाशनो कारण शुं? आपणी बेदरकारी आपणुं कुपुत्रपणुं आपणी अज्ञान दशा, आपणुं मोह मग्नपणुं आपणी मूर्खाइ अने आपणुं, पश्चात् बुद्धि पणुं.

परंतु हवे एवो पश्चात्ताप करे कांइ वलवानु नथी गयुं ते गयुं, तेनो

पश्चात्ताप शो ! ज्ञान आव्युं होय तो रह्युं होय तेटलुं तो संभालो एने माटे मारा मित्रे मूकेली दरख्वास्त अनुसार चारे वाजु सरखी रीते प्रयत्न चलावीने ज्यां ज्यां आपणा पुस्तक भंडारो होय ते दरेकनी स्थिति जुओ, ते परलक्ष आपो, सारी स्थिति न जणाय तो सारी स्थितिमां मूको, अंदरना पुस्तकोनी फहरिस्त करावो, तेनो नोध करावो, तेनी स्थितिनु टिप्पण करावो अने ते वधा एकंदर करी ते टीप छपावी वहार पाडो, जेथी अत्यारे आपणा केटला शास्त्र ग्रथो विद्यमान छे ? कोना कोना करेला केटला छे ? क्यां क्यां छे ? केवी स्थितिमां छे ? इत्यादिनुं ज्ञान थशे

आ प्रमाणे थवाथी वचेली दोलत जलवाशे, नवोविनाश नहीं थाय, सुधारवानु सूजशे, नवी प्रतो लखाशे, संख्यामा वृद्धि थशे, अभ्यास करवानी उत्कंठा वधशे अने वीजा अनेक लाभो थशे, परंतु आ वावत कांइ सहेजे वनी शके तेम नथी तेमां मात्र द्रव्यना व्ययनीज आवश्यकता नथी, पण तेवा भंडारोनी मालेकी भोगवता जूनी समजण वाला आपणा भाइओनें समजाववा पडशे अने वखतपर समुदायना वलनो उपयोग पण करवो पडशे, परंतु ते वधा धाना करवानी जरूर छे, जो हवे प्रमादमा काल क्षेप करशु तो सांभलया प्रमाणे अनेक पुस्तक भंडारो विनाश पामीजशे, सडीजशे, सरदीमां लीन थइजशे, उदेइना भोग थइ पडशे अने नजरे देखतां छता निरुपयोगी स्थितिने प्राप्त थइ जशे माटे आ वावतमां आ कान्फरन्से एक मजबूत ठहरावे वहार पाडवानी आवश्यकता छे आ वावत खास जुरुरनी छे तेथी हु मारा मित्र करेली दरख्वास्तने अतः करणथी पुष्टि आपु छुं अने आप सर्वे भाइओ पण तेने मलता थशो एम इछुं छुं

शा. गोकलभाई अमथाशा और शा कुंवरजी आणंदजीके असरकारक और पुरजोश भाषणोके खतम होनेपर भीमाणसा निवासी शेठ हाथीभाई मूलचंदने इस प्रस्तावकी अनुमोदना की जिसपर प्रेसीडेंट साहवने इस रीजोल्युशनको पास करते हुवे सर्व सभाकी सम्मति ली तो सर्वानुमतसे यह ठहराव पास किया गया—

ठहराव नवां.

"पवित्र तीर्थोंपर जो आशातना और गैर व्यवस्थायें होती हैं उनको प्रकाशमें लाकर अटकानेके लिये योग्य प्रयत्न करना चाहिये"—

इस कदर दर्ख्वास्तको सभामें पेश करते हुवे जयपुरनिवासी मिस्टर गुलाबचंदजी ढढ्ढाने इस खुलासेसे भाषण दिया.

मेरे परमपवित्र अनादि जैनधर्मके माननेवाले स्वामी भाइयो? जो विषय इस समय मुझे आपके रोबरु पेश करनेके लिये सोंपा गया है यह ऐसा है कि जिसपर बहुत ज्यादा गोर करके उसका इन्तजाम जल्द किया जावे—इस जगंह दो शब्दोंके उपर विचार करना उचितहै तीर्थ और आशातना. जब तीर्थ शब्द मुंहसे निकलेगा तो फौरन कहने और सुननेवालोंको खयाल होगा कि यह स्थान ऐसा है कि जहांपर संसार की कोई आधि व व्याधि नहीं रहती है जहांपर दुनियांदारीके कामसे निवृत्ति मिलकर धर्मकार्यमें प्रवर्त्तनेका मोका मिलता है जहांपर आल जंजाल पंपालसे फारिग होके स्वस्थताके साथ वर्तना पड़ता है जहांपर अशुभ और दुष्ट कर्मको क्षय करनेके लिये हर समय मोका मोजूद है जहांपर राग द्वेषको जीतकर उस मोक्षकी प्राप्तिका रस्ता मिलता है कि जिसके लिये भव्य जीव हर समय कोशिश करते हैं जहांपर हरवक्त मौका अपने देव और गुरुकी स्वस्थताके साथ भक्तिका मिलता है गरज यह है कि तीर्थ शब्दके उच्चारणसे खयाल उत्तमताई पवित्रता वगैरहका पैदा होता है और आशातना शब्दके उच्चारणसे उस्से विपरीत खयाल होता है अर्थात् पवित्रताकी जगंह अपवित्रताका खयाल होता है सुखकी जगंह दुःखका खयाल होता है पुन्यकी जगंह पापका खयाल होता है धर्मकी जगंह अधर्मका खयाल होता है अधर्म और पाप करनेके लिये रात दिन दुनियांदारीके काम निमित्तकारण होते हैं इस निमित्तकारणसे निवृत्ति पानेकी गरजसे उस निमित्तकारणको छोड़कर उससे अलहदा होकर कोई ऐसा उसके विपरीत स्थान देखा जाता है कि जहांपर धर्मसाधन निर्विघ्नतासे हो सके ऐसा स्थान तीर्थस्थानके सिवाय नहीं हो सकता है.

जब तीर्थ स्थानोंपर कर्मोंको क्षय करनेकी गरजसे जाते हैं तो वहां

पर सामग्री भी ऐसी होनी चाहिये कि जिससे धर्मसाधनका मौका मिले वह सामग्री यह है—राज्यभय न हो, चौर लुटेरोंका भय न हो, खाने पीनेका सामान ठीक मिलता हो, रहने सोनेका मकान ठीक हो, आब हवा अच्छी हो, किसी किस्मका मरकी वगैरहका उपद्रव न हो, जहांके मनुष्य सुशील और दयालु हों जहांपर पूजा वगैरहका बन्दोवस्त ठीक तौरपर हो, जहांके मंदिर व प्रतिमा वगैरह अति शोभनीय हो इत्यादिक सामग्री होनेसे स्वछताके साथ कारवाई हो सकती है परन्तु जहांपर ऐसी कारवाई न हो वहांपर विचाराहुवा फल नहीं मिल सकता—

आशातना दो प्रकारकी होती है एक वह कि जो हम खुद जान बूझ कर या अज्ञानतासे करें दूसरी यह है कि जो किसी दूसरेकी तरफसे लालच माया अथवा कपटांईके सबबसे हो ये दोनो प्रकारकी आशातनाये दिल दुखानेवाली है और दोनों आशातनाओंका बंद करना इस रीजोल्यूशनका मतलब है

उदाहरण तरीके अपने परमपवित्र शास्वता श्रीसिद्धक्षेत्रको लिया जावे यहां पर इन दोनों प्रकारोकी आशातनायें देखनेमे आती है जो कि संक्षेपसे इस तरहपर है—

इस परमपवित्र तीर्थपर चढ़ते हुए पैरमें जूता (उपानत्) न पहना जावे इस समय हम देखते है कि झोलीवाले जूता पहन कर चढते है और हम लोग उनकी डोली किराये करके उनको जूता पहनकर चढ़नेकी हिम्मत दिलाते है—

इस परमपवित्र तीर्थपर खाना, पीना, थूकना, पेशाव करना, पाखाना फिरना बिलकुल मना है परंतु जगह २ पानीके पो लगाकर हम आनन्द मानते है जो डोलीवाले और अन्यधर्मी वहां चढते हैं वे खाना भी खाते हैं पानी भी पीते है थूकते भी हैं सब ही काम करते है और इस तरहपर हमारी धर्म लागणीको दुखाते है और वे क्या दुखावेगे वेतो अन्यधर्मी है परंतु हमारे स्वधर्मी भी ऐसी ऐसी कारवाईको करके उस पवित्र स्थानपर अपवित्रता फैलाते हैं और बड़ी भारी आशातना करके निकाचित कर्म बांधते है यह बात हमने अप-

नी आँखोंसे देखा है कि एक महाशय अपने तीन चार वर्षकी वयवाले पुत्रको लेकर डूंगरकेऊपर चढ़े तो उसके खानेके वास्ते रोटी एक कटोरदानमें साथ ले चढ़े और दर्शन करनेके बाद उसको रोटी खिलाकर पानी पिलाया क्या इस तरंहपर बच्चेके रोटी खानेसे आशातना नहीं हुई? जब बच्चा रोटी खावेगा और पानी पीवेगा तो उसको जरूर पाखाना पेशाबकी हाजत होगी. हम अफसोसके साथ जाहिर करते हैं कि हमने अपनी आंखोंसे इन दोनों बातों को भी देखा है और मर्द स्नान करते हैं वहांपर एक आठ सात वर्षके लड़केको पेशाब करते हुए देखा है—खयाल करना चाहिये कि जिस जगंह स्नान करके पवित्र होकर पूजाके लिये जाते हैं वहां पर लड़का पेशाब करता है इसके अलावा हाथीपोलके पास एक बच्चेने वडी नीतभी करदी थी—गरज यह कि जो जो कार्य उस पवित्र स्थानपर न होने चाहियें वे सब कार्य हम लोगोंकी भूलसे वहांपर देखनेमें आये हैं परन्तु बच्चेही इसके गुनहगार नहीं हैं बल्कि वृद्ध २ श्रावकभी बच्चोंसे ज्यादा गुनहगारीके काममें प्रवृत्त होते हैं थूंकनेकी या कुरले करनेकी डूंगर पर बिल्कुल मुमानियत है हमने अपनी आंखसे देखा है कि जिस कुंडमें पानी लेकर स्नान करते हैं उस कुंडको बिल्कुल अपवित्र करदेते हैं वह इस तरंहपर कि एक शख्स जो पहले स्नान करता है वह अपने पहननेकी धोती या गमछा या रुमाल उस ही कुंडमें धो डालता है जब दूसरा शख्स स्नान करनेको आता है तो उसही कुंडको उठाकर उसमें पानी भर कर उस पानीसे पहले कुरला करता है उस कुरलेका कुछ पानी नीचे गिरता है कुछ उस कुंडमें गिरता है और फिर उसही जूंठे पानीसे स्नान करके पूजा करनेको चला जाता है यह काररवाई बहुलताके साथ नहीं होती परंतु सर्पका विष क्या ज्यादा क्या कम एक तासीर रखता है इसलिये इस परम पवित्र तीर्थपर ऐसी आशातना देखकर दिल बहुत दुखता है कोटके अंदर बीड़ी चुरट दूध वगैरह पीता हुवा भी एक सद्गृहस्थ देखा गया अलबत्ता बडे २ आदमियोंको अभी रोटी खाते नहीं देखे हैं सो अगर जो प्रवाह अबतक रहा है वह ही रहा तो जमाना नजदीक आता है कि जब रोटी भी खाने लगेंगे इस बातको हम मु-

वखिगेके साथ नहीं कहते है बल्कि जैसी हालत देखी है वह कहते है और इसके प्रकट करनेकी यों जरूरत है कि पवित्र स्थानपर पवित्रतासे ही आचरण होना उचित है

और जब मर्दोंकी यह हालत है तो औरतोंकी हालत इससे ज्यादा खराब हो तो क्या आश्चर्य है उनकी हालत वह जाने या ज्ञानी महाराज जाने–

इस कथनसे यह न समझा जावे कि समझदार, पवित्र और श्रद्धालु यात्रियोंकी नेसती है ऐसे २ श्रावक पुण्यप्रभावक भी देखनेमे आये है और धन्य है उनकी माताओंको कि जिन्होने ऐसे ऐसे नररत्नोको अपनी कोखमे धारण किये हैं कि जो उपवास करके धैर्यता, गम्भीरताको धारण करते हुए नगे पैर सूर्यकी आतापना लेते हुये गिरिराजपर चढ़ते है और सर्व दोष टालकर सेवा पूजा करते है–

स्नान करके पूजा करनेका मतलब यह है कि इस मलिन देहको पवित्र करके देवकी प्रतिमासे स्पर्श किया जावे और जब स्नान करे हुवे और विना स्नान किये हुवे एकमेक हो जाते है तो फिर क्यों पानी व्यर्थ ढोला जावे इस बातका पुख्ता इन्तजाम होना मुनासिब है कि स्नान किये हुए और विना स्नान किये एकमेक न हो सकें–

जब किसी राजा महाराजाकी सेवामे हाजिर होते है तो कायदेके साथ हाजिर होना होता है. परमात्मा राजा महाराजाओंके भी महाराजा है उनकी पवित्र सेवामे जब हाजर होवे तो उस वक्त सम्पूर्ण विवेक रखनेकी जरूरत है–परंतु देखा जाता है तो उसके हुजूरमे बहुत ही अविवेकतासे जाते है अव्वलतो मर्द औरतोंकी धाम धूम इस कदर होती है कि एकके उपर दूसरा पडता है कितनी बडी शरमकी बात है कि देवद्वारमे परमेश्वर परमात्माके रोबरू जुदे जुदे स्थलके मर्द औरतमे अविवेकपनेसे धक्का धूम होवे साधारण तोरपर ही एक पुरुषका संघटा अन्य स्त्री गवारा नहीं कर सकती तो इस स्थानपर अविवेकतासे ऐसी चेष्टा क्यों होवे– इसके उपरांत परमेश्वर परमात्माकी प्रतिमाका पूरा २ अविनय होता है क्योंकि इस धूम धाममे ठोकर लगना संभव है धोवती, लहंगेका पल्ला लगना एक आसान

बात है बल्कि अकसर धक्का धूममें उस प्रतिमाका सहारा लेना पडता है क्या ये कुल काररवाइयें आशातनामें दाखिल नहीं हैं ? और क्या इनका सुधार करना जरूरी नहीं है और क्या सुधार हो नहीं सकता है ? और क्या ऐसी हालत हांसीके काबिल नहीं है ? और क्या हम लोगोंको इस काररवाईको गवारा करना वाजिब है ?

पुष्पोंकी तर्फ निगह डालिये उस परम पवित्र प्रतिमाके धारणकरनेमें जो पुष्प आते हैं उनकी क्या गति है और उनको कौन किस हालतमें ले जाते हैं इसका प्रबन्ध यही किया जावे कि बिना स्नान किये हुये माली पुष्प न लेजाने पावें—

प्रक्षालन और पूजाका हाल नहीं वर्णन किया हुआ ही ठीक है इस विषय पर बिचार और खयाल करते हुए हमारा हृदय फटता है—प्रक्षालन और पूजा जैसी कि होनी चाहिये नहीं होती है—लाखों रुपये लगाकर बडे २ मंदिर बनाये जाते हैं परंतु पूजा सेवाके वास्ते कुछ इंतिजाम वाजिव तौरपर नहीं किया जाता है जिस वैभव और ठाठके साथ जैसी कि पूजा होनी चाहिये नहीं होती—जैसा कि अपने रीसेप्शन कमीटीके प्रेसिडेंट साहबने कहाहै एक २ पूजारीके चार्जमें कई प्रतिमायें होती हैं और वह उनकी एक तर्फसे पूजा प्रक्षालन करना शुरू करता है और ठेठतक प्रक्षालन खसकुंचीके साथ घस्से देकर करता हुआ चला जाता है कि फिर उसको अंगलूणा करनेकी जरूरत नहीं रहती प्रचंड वायु, उसकी मददगार बन जाती है—क्या इस प्रकारकी पूजा अफसोस दिलानेवाली नहीं है ?

इस ही तरंहपर अनेक प्रकारकी आशातना तीर्थोंपर देखनेमें आती हैं उनका मिटाना तथा जो जो गैर व्यवस्था तीर्थोंपर चल रही है उसका इंतिजाम करना जरूरी है और इस बातका नोट लेना इस कान्फरेंसका फर्ज है.

इस रीजोल्यूशनकी ताईद करते हुए अहमदाबादनिवासी. शा पुरुषोत्तम अमीचंद दलालने बिवेचन किया कि वाकइ तीर्थोंपर बहुत ही घोटाला चलता है जब यात्रानिमित्त जाते हैं तो अव्वल तो इतनी धर्मशालायें मोजूद होनेकी हालतमेंभी बडी गडबड मचती है अकसर धर्मशाला-

ओंके मुनीम वहुत खेचल करते है अकसर नाणाका खर्च होता है शेठ आणंदजी कल्याणजीके मेनेजर इस तर्फ कुछ लक्ष्य नहीं देते है उनको शिकायत की जाती है तो वे कुछ नही सुनते ट्रस्टीसाहवानकी सेवामे निवेदन किया जाता है तो वे भी वेदरकारीसे कुछ नही सुनते हैं हिसावमें वहुत गैर व्यवस्था होती है उसमे वहुतसा घोटाला देख नेमे आता है देवद्रव्यका कोई रक्षक नहीं है और यह ऐसा पैसा है कि जिसका उपयोग वाजवी होना चाहिये–

इस दरखास्तको प्रेसीडेन्ट साहवने सभाका मतलेनेको सभाके सामने रजु की जिसपर सवका मत एक रहनेसे यह रीजोल्युशन पास किया गया

॥ ठहराव दसवां ॥

"जैन कोममें प्रचलित हानिकारक सांसारिक रीतिरिवाजोको दूर करनेके लिये वाजवी प्रयत्न करना चाहिये"

इस दरखास्तको पेश करते हुए सिरोही निवासी मिष्टर अमर चद जी पी परमार ने एक पुरजोश व्याख्यान दिया और अपने स्वाभावि-क अच्छे और हास्यकारक दृष्टान्त देकर अपनी हमेशाकी वक्तृत्व श-क्तिसे श्रोताजनोको आनन्दित किये उनके भाषणका सारांश इस प्रमा-ण है–

प्रिय जैनवान्धवो देशान्तरके जैन वान्धवोको जैन कान्फरेन्स अर्था-त् जैन महासभा या जैन महामण्डलमे मिले हुए देखकर वड़ा हर्ष उत्पन्न होता है

वान्धवो! एकजमाना ऐसा था कि जिसमे खगोल, गणित, न्याय, व्या-करण, साहित्य, धर्मशास्त्रादिके अनेक ग्रंथ हमारे पूर्वाचार्य और विद्वा-न् श्रावकवना गये है एक समय ऐसाथा कि सर्वत्र "अहिंसा" "अहिंसा" शब्दकी ध्वनि फैल रहीथी और प्राणीमात्रको किसी किसमका भय नहींथा एक समय ऐसा था कि तमाम जैनी अपना कर्तव्य समझकर न्यायोपार्जित धन सपादन करके अरबोंकी दोलतके मालिक वनकर धर्मकार्य और परोपकारमें कटिवद्धथे परन्तु हाय अफसोस आज समय

और ही रंगका नजर आताहै कि जिसमें उन ही पुस्तकोंके नाम तक हमको मालुम और याद नहीं है तो फिर उनको पढकर समझना तो दूर रहा हमारे बुजुर्गोंने जो अटूट दौलत ज्ञानकी हमारे लिये छोडी है उसकी अगर कुल जैन समुदाय इकट्ठा होकर बैठे तो भी टीप तक संपूर्ण नहीं कर सकता है—हमारे बुजुर्गोंकी वाणी और ज्ञानकी यह शक्ति थी कि जिसके सुननेसे हमको अनुभव होताहै कि केवल इसही पवित्र जैन धर्ममें उत्तम ज्ञान मिल सकताथा—तफसीलन यहां पर उदाहरण दिया जाताहै कि "राजानो ददते सौख्यम्" इस एक वाक्यके नव लाख श्लोकमें नव लाख अर्थ करके श्याम सुंदर आचार्यने "नवलक्षी" ग्रंथ द्वारा अपनी विद्वत्ता प्रकट की है और तपगच्छाचार्य श्रीमदात्मारामजी महाराजने भी इसका हवाला अपने बनाए हुए "अज्ञानतिमिरनाशक" ग्रंथमें दिया है—अब वह समय नजर आता है कि जिसमें जगंह जगंह हिंसा नजर आरही है आज वह जमाना आगयाहै कि जिसमें येन केन प्रकारेण धन उपार्जन करनेमें अपना मुख्य कर्तव्य समझा जाता है हालांकि अपना स्वामी भाई तथा अपना सगा भाई भूखा क्यों न मरता हो—यह काररवाई कालके फेरफारसे है और ज्ञानी महाराज के सत्य बचनको ठीक तौरपर दिखला रही है—

पूर्व पुन्यके उदयसे हमने मनुष्य देह, आर्य क्षेत्र, उच्च कुल, जैनधर्म, सच्चे देव, गुरु, सम्य क्त्व, तथा शुद्ध अंगोपाङ्ग पाये हैं तो हमारा जरूरी फर्ज है कि इस उत्तमोत्तम सामग्री और जोगवाईका सदुपयोग करें—ऐसा न करनेसे और इस मोकेको हाथसे व्यर्थ खोदेनेमें उस मूर्खकसा हाल हमारा होगा कि जिसको शुभ कर्मानुसार चिंतामणि रत्न हाथ लगाथा परंतु उसने काकके उडानेमें उस रत्नको कंकरके मुवाफिक समझकर अपने हाथमेंसे फेंक दिया "फिर पछताये होय क्या जब चिडिया चुग गई खेत" जो बन्दोबस्त करना हो फौरन करना चाहिये पानी पहली पाल बांधना चाहिये—हमारे शासननायक परम पूज्य श्रीबीर परमात्मा जो उपदेश कर गये हैं उसके मुवाफिक वरताव रखना हमारा कर्तव्य है—उनकी आज्ञा भंग करनेसे सम्यक्त्व

रूप चिंतामणि रत्न हाथसे चला जाता है और आज्ञाबराधक दोषसे दूषित करार पाकर नरकगामी होना पडता है—

बान्धवो! आपने जरूर विचार किया होगा कि हमारी कुलपरंपरा क्या है? हमारा सांसारिक व्यवहार कैसा होना चाहिये और इन दिनोंमें हम लोग अन्यमतियोंके संसर्गसे विना सोचे समझे देखा देखी कैसे कैसे निदनीय और दुष्ट सांसारिक और अधार्मिक रिवाजोंको ले बैठे हैं अगर उनकी गिनती की जावे तो उनका हिसाब नहीं हो सकता इतने हानिकारक रीति रिवाज हमारी कोममें दाखिल हो गये हैं—बमुकाबले पुरुषके स्त्रीवर्गमें ज्ञान कम है—पुरुषसे स्त्री कमजोर होती है इस लिये उस वर्गमे मामूली तौरपर वहम वगैरह ज्यादा होता है अगर कोई बच्चा बीमार हुआ तो बजाय इसके कि वह उस बीमारीका इलाज करावे भुवाके पास दौड कर जावेगी और नजर बधावेगी, खेतला, हनुमान, माया, शीतला, महादेव, पीर, बीर, ताजिया, फकीर वगैरहकी मानता करेगी—एकके देखा देखी दूसरी भी वैसा ही वर्ताव करेगी—यहांतक कि यह एक पुश्तैनी रिवाज समझा जाकर औरतोंके दिलोंमे ऐसा मजबूत होकर जम जाता है कि फिर उनके सामने दलील और मतिकका कुछ गुजर नही होता है

उस ही फलौदीके जैनमंदिरमें सेंकडो लोग अपने बच्चोंका जडूला उतारनेको आये हैं इस स्त्रीवर्गकी समझ पर कहांतक कहा जावे और कहांतक अफसोस किया जावे वह इतनी भी तो कम अक्ल है कि अपने स्वामीको वश करनेके अनेक उपाय करनेमे गुप्तरीतिसे हजारों रुपया, जोगदूधुतारोंको खिला देती है पुत्र होनेकी अभिलाषामे बाज बाज ओरत अपना अमूल्य शील भी भङ्ग कर देती है—यह नहीं समझतीकि सिवाय कर्मके कुछ नहीं बन सकता और सिवाय अरिहंतके और कोई देव नहीं हो सकता है—

मिथ्यात्वी अन्य दर्शनियोकी शोबतसे कितनेही कार्य हमारे जैनी भाई अपने शास्त्रसे विरुद्ध करते हैं—होलीको भूखा मरना, या धूल उछालना या बुरे बुरे गीत गाना, या पानी उछालना, शीतलाष्टमीके दिन ठंडा खाना, शीतलादेवीको पूजना उससे अपने बच्चेका सुख

चैन मांगना, श्राद्ध करके पित्रोंको तृप्त करनेकी श्रद्धा रखना, ग्रहणको देव कार्य समझ कर सर्व विधि पालना, गंगाजी स्नानको जाना, बेदोक्त बिधिसे लग्न करके दुष्ट कर्म बांधना, क्षेत्रपाल, दई देवताको पूजने जाना, अपने सदाकालके सोलह संस्कारोंको छोड़ बैठना, चैत्रमासमें सुहागके कारण गणगोरको पूजना, उसके शृंगार करना, उसमें देवकी शक्ति मानना, वैष्णवोंकी देखा देखी वदि ४ चौथका व्रत रख कर रातको चांद उगने पर भोजन करना, कृष्णाष्टमीका व्रत करना, बछबारसके त्योंहारको मानना, गोगाकी पूजा करना, भादों सुदि ४ चौथके दिन अपनी धर्म क्रियाको छोड़ गणेशकी पूजा करना, अनंत चतुर्दशीका वैष्णवोंके मुवाफिक व्रत रखना, नवरात्रिमें दुर्गा माताकी सेवा करके मानता करना, दिवालीके दिन अपने शासन नायकके स्मरण और उनके कल्याणकको छोड़ कर और रत्नदीपक जो कि उनके मोक्षपधारने पर बुझेथे उनका अनुभव न करके लक्ष्मीकी पूजा करना, और धन वृद्धिके हेतु दीपक जोना, देव झठनी ग्यारसको मानना, पुष्कर स्नान करना, शिवरात्रिका व्रत करना, शिवजीकी सेवा करना, शनिवारादिकके व्रत करना, इत्यादि अनेक अकार्य हम लोग आजकल ऐसे कर रहे हैं कि जो हमारे शास्त्रके बिल्कुल खिलाफ हैं—हर सच्चे जैनीका फर्ज है कि इन कुरीतियोंको तथा दुष्ट रिवाजोंको छोड़ कर श्रीजिनाज्ञाके मुवाफिक आचरण करे—

बिबाहशादीमें हजारों रुपयोंका धूमाका करडालते हैं बेश्याका नाच कराकर ऐसे प्राणीको सहायता देते हैं कि जिसका आचरण निन्दनीय हैं आतशबाजी छोड़ कर सैंकडों हजारों रुपयोंका सत्यानाश कर देते हैं तथा चीकणे कर्मको बांधते हैं हजारों आदमियोंकी ज्योंनार करके भट्टी वगैरह खुदवाते हैं—असंख्य जीवोंको होम देते हैं इत्यादि कामोंके करनेसे कर्जदार हो जाते हैं नीतिभ्रष्ट और हिंसक बन जाते हैं अपनी बहन, बेटी, माता, स्त्री, वगैरहसे बुरे गीत गाली गवाकर आनंद मानते हैं अगर कोई समझदार औरत गाली नहीं गाती है तो बुरा मान कर कहते हैं कि हमारी ब्याहण तो हमको गाली भी नहीं गाती है—क्या यह बातहीं अफसोस और शरम भरी हुई न है

कि वाप, जाई, रिश्तेदारोंके रोवरू औरतें बुरी बुरी गालियां गावे और मर्द उनको सुन कर खुश होवे ? शरम? शरम? शरम? स्त्रियोका जंगलमे घास काटनेको जाना, या गोवर वीन कर लाना, या सिर पर पानीका मटका लाना जी खोटे रिवाजोंमे दाखिल है और वद होना चाहिये—

मरणेके वाद सोग पालनेमे जी हमारे जैनी जाई सूरवीर है वारह वारह महीनेतक काण (मोकाण) जाना, दो तीन वरसतक रोना, पीटना, सुवहके वक्त उठकर औरतोंका वासी पल्ला लेना ये सव धर्मविरुद्ध हैं और ऐसे रोने पीटनेके सुननेसे कच्ची छातीवाला आदमी जयजीत हो जाता है—गुजरात देशमे मरणोके पीछे औरतें इस कदर छाती कूटती है कि वाज वाज वक्त उनकी छातीसे रक्त वहने लगता है और उस स्त्रीके पतिको उसकी छाती सेकनी पड़ती है—कहो किस कदर मोहनीकर्मका वध किया जाता है १ क्या यह रिवाज सांसारिक और धार्मिक खयालातोंसे एकदम वद करदनेके लायक नहीं है ? एक गांवसे दूसरे गांव जव मौकाणको जाते है तो उसका मतलव तसल्ली देनेका है—परंतु वह हेतु तो अव नहीं रहा अव तो चाहे जैसा जवान आदमी क्यों नहीं मरे मोकाण आने जानेवाले आदमी तो कई दिनतक रहकर खिचड़ी घी खाते हैं—विशेष रोनेसे न मरनेवाला पीछा आसकता है—न उसकी खोटी गतिसे अच्छी गति हो सकती है वल्कि रोनेवालेका धर्मध्यान छूट कर आर्तध्यानमे पडना होता है—साधु मुनिराजोने वहुत जगह इस वुरे रिवाजको कम करायाहे परतु अव जी वहुत सी आवश्यकता है—जवतक औरतोंको तालीम देकर उनकी ज्ञान चक्षु न खोली जावे उनको एकदम इन खोटे रिवाजोंके छोड़नेमे दिक्कत होती है पतिके मरणेपर औरतें मदिर उपासरे जाना और धर्म श्रवण करनातक छोड़ देती हैं यह विल्कुल खराव वात है—जो शख्स इस ससारमे पैदा हुआ है जुरूर मरेगा फिर अफसोस करना कुदरतके खिलाफ है—देखो कैसा अज्ञानरूपी अधकार उनके ऊपर छा गया है—

मरणेके वाद जीमनमें हमारे जैनी जाई हजारों रुपये खर्च कर देते हैं—वहुत जगंह पर ऐसा दुष्ट रिवाज देखनेमें आता है कि चाहे जैसा

जवान शख्स मरजावो तो भी उसके पीछे जीमन जरूर करना ही पड़ता है—अकसर ऐसा देखनेमें आता है कि जब मरनेवालेके घरमें शादीका मौका आजाता है तो जबतक उस मरणेवालेके नुकतेकी ज़मानत दाखिल नहीं हो जाती है तबतक उसको शादीकी इजाजत नहीं दीजासकती है हमको श्रीमान् जोधपुर दरबारका पूरा उपकार मानना चाहिये कि उन्होंने सायरका पूरा नुकसान उठाकर भी अपनी प्रजामें मोसर वगैरहका जीमन बंद कर दिया है—हमको भी श्रीमान्के पंथमें चलकर कुल बिरादरीमें एक ठहराव करना चाहियेकि—यह रिवाज धार्मिक और सांसारिक व्यवहारके खिलाफ होनेसे बिल्कुल बंध होनेके काबिल है—अधरणीके निर्लज्ज जीमनका भी जैनियोंमें प्रचार देखा जाता है—जगंह जगंह ब्रह्म भोजन भी होता हुआ देखनेमें आताहै, यह तमाम खोटे रीति रिवाज बंध होनेके काबिल हैं—

इनके अलावा और और जो हानिकारक रीति रिवाज जैनियोंमें देखनेमें आते हैं वेभी बंद करनेके काबिल हैं क्योंकि उनके जारी रहनेसे बहुत शरम उठानी पड़ती है—

मसलन् अतिनिन्दनीय कन्याविक्रय, कमजोर करनेवाला और सत्यानाशमें मिलानेवाला बाललग्न, हास्यजनक और दुराचार फैलानेवाला वृद्धविवाह, और एक स्त्रीके मोजूद होते हुए दूसरी तीसरी स्त्री का घरमें लाना—

कन्याविक्रयका ज्यादातर रिवाज काठियावाड़, गुजरात, गोरूवाड़ वगैरहमें बहुत ही प्रचलित है इसका कारण बहुलता करके तो गरीबांईकी दशा और मूर्खता ही हो सकता है—धनके लोभसे—माता पिता अपने पेटकी प्रिय पुत्रीकी वृद्ध, अपंग, मूर्ख, परदेशी वगैरहके साथ शादी कर देते हैं बाज वक्त सोदा बहुत महंगा होजाता है और कन्याकी कीमत खरीददारकी जरूरत और अवस्था और द्रव्यस्थितिके मुवाफिक दश दश पंदरह पंदरह हजार रुपया तक कायम होजाती है कहावत मशहूर है कि "बेटी और गाय जहां देवे वहां जाय" गौ जैसी गरीब पुत्रीको इस तरंह बेच कर खड्डेमें डाल देने सिवाय और क्या पाप होगा—नामदार ब्रिटिशगवर्नमेन्टने बहुत प्रयास लेकर गुलामी धंधे

और सौदागरीको बद करदी. परंतु यह खेदकारक आवरूका लेनेवाला कसाईके धधेसे भी महाबुरा रोजगार अभीतक बद नहीं हुआ—जानत है ऐसे माता पिताओंको—हरेक आदमीको इसका अनुभव हो सकता है कि कन्याकी बिचौतीका पैसा स्थिर नही रहता है और कन्याके बेचनेवाले माता पिता भी हमेशा भिखारीपणेकी हालतमे ही देखे जाते है—यह धन न्यायोपार्जित नहीं होनेसे ठहर नहीं सकता है—धनके लोभसे कन्याकी वक्तपर शादी नहीं करते हैं और ज्यादा उमरकी कन्या हो जानेपर बाज कन्याओंके शील खण्ड होजानेका भी भय रहता है—एक शख्सने ५०० पांचसो रुपये देकर शादी कीथी—दूसरेने पूछा आज कल क्या व्यौपार चलता है उसने कहा "पांचसौका पंधरासौ भयो और माल अमानतको अमानत रह्यो' याने तीन लडकिये पैदाहुई जिनके खानेको पदरासौ रुपया लिया फिर औरतके सलामत रहनेसे माल अमानत रहा है—

कन्याविक्रय चार प्रकारसे बंद हो सकता है— राज्यके कानून कायदेसे, जातिके पंचायत कानूनसे, गरीबांईकी स्थिति दूरकरनेसे और अज्ञानता दूर करनेसे— इन चारों उपायोमें जातिका प्रबन्ध ज्यादा असर कर सकता है— और सबसे पहले अपने भाइयोंकी गरीबांईकी हालत दूर करना अपना कर्तव्य है— कई जगहं ऐसा भी रिवाज है कि— कन्याका पिता चाहे जितना दोलतमंद हो तोरणके वक्त पुत्रके बापसे लागके सैकडो रुपये खर्चा लेता है यह कार्य भी कन्याविक्रयमे ही शुमार किया जा सकता है

और कन्याविक्रयके बद होनेसे वृद्धविवाह भी स्वयमेव ही बद हो सकता है क्योंकि जब कन्याका दाम लेना बंद हो जावेगा तो फिर अपनी पुत्रीको कोन सख्स वृद्ध पुरुषको देनेको रजामंद होगा—

बाललग्न कई अनर्थोका मूल है इस ही बाललग्नसे विधवा ज्यादा होती हैं कमजोरी ज्यादा देखनेमे आती है अगर एक पहलवान अपने सौ आदमियोंके अदर आ जावे तो उससे डरकर सब भाग जावे—यह बाललग्न गोया गुढियोंका विवाह है—इस बाललग्नसे आयुष्य कम हो जाता है— हमेशा बीमारी बनी रहती है— और धर्म ध्यान नहीं बन सकता है—

वृद्धविवाहका रिवाज बहुत हानिकारक है और हास्यजनक बात है– इधरको बेचारी दस बारह वरसकी कन्या, उधरको साठ सत्तर वर्षका नाड़ हिलाता हुआ हाथ पैर धुजाता हुआ, सफेद बालोंका उस कन्याके दादा पड़दादाकी उम्रका वर तोरण पर आताहै होस हवास उसके दुरुस्त नहीं होते हैं अकसर देखा गया है कि फेरे फिरते फिरते गरमीके मारे दुल्हा बेहोश हो कर गिर पड़ा है–क्या ऐसे बूढे महात्माके साथ कन्याकी शादी कर देनेसे उस कन्याको सुख मिल सकता है? एक दफे एक बूढा वर एक बालकन्याको शादी करके ले जाता था रास्तेमें कटोरा लेकर सत्तू फांकने लगा इतनेहीमें चीलने झपट कर उस कटोरेको गिरा दिया जो आस पासके लडके लड़की ये कहने लगे "काकानो बाटको कागडो लइ गयो"– "काकानो बाटको कागड़ो लइ गयो" इस तरहं पर लड़के लड़कियोंको कहते सुन कर वह कन्या वधू भी कहने लगी "काकानो बाटको कागडो लइ गया" क्योंकि वह कन्या उस वृद्धको उस वक्ततक अपना काका ही जानती थी– वृद्ध पुरुषोंको विचारना चाहिये कि जब उनके संतान मोजूद है तो फिर दुबारा शादी करना भव बिगाड़ना है– आपसमें भाई भा और पहलेकी स्त्रीकी संतानके झगड़ा हुए विना नहीं रहता है– और अकसर कन्याके शीलमें फरक आनेका मौका रहता है– सुखसंपत्तिकी प्राप्ति सरखी जोडीसे ही हो सकती है– अगर चालीस वर्षकी उम्र बाला मनुष्य शादी करना चाहे तो उसें जातिकी आज्ञा लेनी चाहिये जोधपुर राज्यमें भी वगैर मंजूरी राज्यके ऐसी शादी नहीं हो सकती है–

एक औरतके जीतेहुये किसी कबी सबबके वगैर दूसरी शादी करना, और वगैर रजामंदी औरत मोजूदा के शादी करना भी टंटा फसादका पैदा करनेवाला है– घरमें हमेशा कुसंप चलता रहता है धर्म ध्यान बनता नहीं और वह प्राणी इस भव तथा परभवमें दुखी होता है.

इस कानूफरेंसकी ऐसी नीम डाली गई है कि जिससे बजरये उपदेशक वगैरह, ऐसे ऐसे हानिकारक रिवाज बिल्कुल बंद हो जावेंगे–साधु मुनिराजोंको भी इस कार्यका अपने विहारमें खयाल रखना चाहिये–क्योंकि उनके उपदेशसे ज्यादा उपकार हो सकता है–

आज कल हमलोगोंमें और खासकरके श्रीमन्तोंमें और मुत्सद्दी वर्गमे शरावपीनेका दुर्विसन पड़ गया है शराबको ज्ञानी महाराजने अभक्ष्य कही है– अनेक जीवोंकी हिंसासे यह पैदा होती है– ससारमें शरावखोर वे इज्जत होते है भाइयो क्या यह शराव खोरी अपने जैनियोंके उच्च कुलमे ठीक कही जा सकती है–

अज्ञानदशा दूर करनेकी कोशिश प्रथम करनी चाहिये ताकि खोटे रिवाज, वहम और मिथ्यात्व आप ही आप दूर हो जावे–और सम्यक्त्वका दरवाजा खुल जावे–

अपनलोगोंमें जैनशास्त्रानुसार जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त १६ संस्कार होते है– परन्तु उन सवको इस वक्त छोड रक्खे हैं– उनमें एक संस्कार विवाहविधिका है–जैन तीर्थंकरों और समक्त्वी देवताओंके नाम जैनके वेदमन्त्रोंमे विद्यमान हैं मंगल, चोंरी, मातृकागृह, सप्तकुलकर स्थापना आदि तमाम विधिपूर्वक हो सकता है–यह विधि विस्तारसे स्वर्गवासी सूरिमहाराज श्रीआत्मारामजी महाराजके वनाये हुये– "तत्वनिर्णयप्रासाद" ग्रंथमें जो कि मेरी तर्फसे थोडे ही समयमें प्रकट होगा लिखी हुई है

मेरा वोलना इस अर्जके साथ समाप्त करता हू कि जितना जिससे वन सके उतना गावमें जातिमें अपने मित्रवर्गमें और अपने कुटुम्बमें तो अवश्य करके बुरे रिवाजोंको वद करना चाहिये– थोड़ा थोड़ा करनेसे भी वहुत हो जाताहै–इसलिये समस्त स्वामी भाई हमारी शास्त्रीयरीतिपर कायम होकर निकट भव्य होकर मोक्षके भागी होवें यह ही हमारी परम इच्छा है–

मिष्टर परमारके इस दिलचस्प भाषणको हर्पनादकी तालियोंके साथ खत्म करने पर इस दरख्वास्तकी ताईदमें जोधपुरनिवासी शेठ मनोहर मलजी ढढ्ढाने विवेचन किया कि वाकइ जो कुरीतिया और दुष्टरिवाज मिष्टर परमारने वतलाये है ये ऐसे हैं कि इनको हरसचे जैनीको फौरन छोड़कर इनसे कनारा कश होना चाहिये–अन्य देवको पूजने या मिन्नत करनेसे कोई फायदा नहीं हो सकता है वल्कि सम्यक्त्वके वट्टा लगता है और इससे संसारमें ज्यादा भ्रमण करना पड़ता है– होली

वगैरहपर ज्ञांमोंकी जैसी कुचेष्टा करनेसे बुरे कर्मोंका बंध होता है-ब्याहशादीमें या मरने पीछे नुकता व जोनार करनेंमें हजारों रुपयोंको व्यर्थ खोकर कर्जदार होना पडता है-चोरी करनी पडती है इसलिये मेरे मिस्टर परमारने जो जो बातें कही हैं उनके साथ मैं अपनी सम्मति प्रगट करके सब स्वामीभाइयोंसे प्रार्थना करता हूं कि इस रिज्योल्यूशनको पासकरके इसके मुआफिक पाबंद रहेंगे-

सभाकी सम्मतिसे प्रेसीडेन्ट साहबने इस रिज्योल्यूशनको पास किया.

ठहराव ग्यारहवां.

इस कान्फरेन्सके मुताल्लिक तमाम काम काज करनेके लिये जनरल सेक्रेटेरी तथा प्राविंशियल (प्रांतिक) सेक्रेटेरी मुकर्रिर किये जावें-

इस रिजोल्यूशनको सभाके सन्मुख पेश करते हुए मुंबई निवासी शेठ दीपचंद माणकचंदने दरख्वास्त की कि इस कान्फरेन्सका काम साधारण नहीं है बल्कि बडा जिम्मेदारीका काम है और चूंकि यह कान्फरेन्सका जलूसा साल दरसाल अनुकूल स्थलपर अपने दूसरे ठहरावके मुवाफिक होता रहेगा इसलिये इसके काम काज चलानेके लिये सेक्रेटेरियोंका मुकर्रिर होना बहुत जरूरी है. इस कान्फरेन्सके अंदर कुल हिन्दुस्थान शामिल है और जैसे किसी बडे कारखानेका इंतिजाम मेनेजर, सबमेनेजर, हेडक्लार्क, वगैरहकी तकरूरीसे होता है, इसही तरंहपर इस महासभाके कामका इन्तिजाम जनरल और प्रान्तिक सेक्रेटेरियोंकी तकरूरीसे होना मुनासिब है ताकि वे लोग अपने अपने सरकिलमें कान्फरेन्सके बिचारे हुए कर्तव्योंको पार पटकनेका प्रयत्न करें इस कार्यके लिये दो जनरल सेक्रेटेरी मुकर्रिर किये जावें उनमेंसे एकको अपर इण्डिया अर्थात् उत्तरीय हिन्दुस्थानका चार्ज दिया जावे और दूसरेको लोअर इण्डिया अर्थात् दक्षिण हिन्दुस्थानका चार्ज दिया जावे और इन दोनोंके साथ काम करनेको तथा अपने अपने सरकिलमें कान्फरेन्सके कर्तव्य पार पटकनेको मुनासिब तौरपर प्रान्तिक सेक्रेटेरी मुकर्रिर किये जावें-और हर जनरल सेक्रेटेरीके मुताल्लिक प्रान्तका प्रान्तिक सेक्रेटेरी उस जनरल सेक्रेटेरीके साथ खत किताबत रक्खे और दोनो जनरल सेक्रेटेरी आपसमें खत कि-

तावत रक्खें इस कामके लिये मेरी रायमें नीचे लिखे मुजव साहव चुने जावें:—

"अपर इण्डियाके जनरल सेक्रेटरी जयपुरनिवासी मिस्टर गुलावचंद जी ढढ्ढा एम ए

लोअर इण्डियाके जनरल सेक्रेटरी अहमदावादनिवासी शेठ लालभाई दलपतिभाई

प्रान्तिक सेक्रेटरी नीचे मुजव

शेठ फकीरचंद प्रेमचंद रायचद जे पी जोहरी माणकलाल घेलाभाई	वम्बई प्रान्त
शा मोतीलाल कुशलचद	अहमदावाद (गुजरात)
शेठ कुवरजी आणंदजी	भावनगर (काठियावाड़)
शेठ नानचंद भगवान्	पूना (दक्षिण)
शेठ नथमलजी गोलेछा	ग्वालियर (सी आइ ए)
शेठ लक्ष्मीचंदजी सीयाणी	इन्दोर (मालवा)
मिष्टर जसवंतराय जैनी	लाहोर (पंजाव)
जोहरी मोतीचद लालचंद शेठ जेठाभाई जयचद	कलकत्ता (वङ्गाल प्रान्त)
शाह सुजाणमलजी ललवाणी	जयपुर (ढूढाड़–प्रान्त)
पारख दीपचदजी	जोधपुर (मारवाड–प्रान्त)
शेठ हीराचदजी सचेती–	अजमेर (राजपूताना)
पूजावत मगनलालजी	उदयपुर (मेवाड–प्रान्त)

इन नामोंको प्रकट करके शेठ दीपचद माणकचंदने यह भी कहा कि ये जनरल सेक्रेटरी अगर जरूरत समझे तो प्रान्तिक सेक्रेटरियोंमें फेरफार करसकते हैं तथा उनकी जगहपर या और नये प्रान्तिक सेक्रेटरी मुकर्रिर करनेका अख्तियार रखते हैं और प्रान्तिक सेक्रेटरी अपने अपने सरकिलमें योग्य गृहस्थोंकी कमीटी नीमनेका अख्तियार रखते हैं"

इस दरख्वास्तकी ताईद करते हुए शेठ गणेशमलजीने जाहिर किया

कि इस दरख्वास्त शेठ दीपचंदजी जनरल और प्राविन्शियल सेक्रेटरी मुकर्रिर किये जावें

लादराके वकील छोटालाल लल्लुभाईने इस दरख्वास्तकी अनुमोदना की जिस पर प्रेसीडेन्ट साहव इस दरख्वास्तको सभाके मत लेनेको सभाके सामने पेश करके सर्वानुमतिसे पास की.

ठहराव बारहवां.

"आवती दूसरी कान्फरेन्स श्रीपालीताणे- अनुकूल वक्त पर भरे"

इस ठहरावको सभाके सन्मुख पेश करते हुए शेठ कुंवरजी आणंदजी भावनगरवालोंने दरख्वास्त की कि यह प्रथम कान्फरेन्स इस फलोधी तीर्थ भूमिपर भराई गई और यह बात सच है कि- ओसवाल जातिकी उत्पत्ति इस मरुधरभूमिसे ही है इस ही तरह पर इस श्रेयकामकी बुनियाद भी इस मरुधर भूमिके जगत्विख्यात तीर्थपर ही डाली गई है इससे आशा होती है कि जिस तरह ओशवंशकी दिन व दिन तरक्की होती गई वैसे ही इस जैनमहासभाकी भी दिन व दिन तरक्की होगी और जिस तरहपर मरुधर भूमिसे ओशवंशका फैलावडा गुजरात काठियावाडकी तरफ हुआ वैसे ही महासभाको यहां शुरूकरके गुजरात काठियावाडकी तरफ ले जाना ठीक है- और जिस तरहसे यह फलोधीका स्थान एक तीर्थ स्थान है वैसे ही दूसरी कान्फरेन्स भी तीर्थभूमि पर हो तो ठीक है क्योंकि तीर्थभूमि पर होनेसे कई प्रकारकी सगवड़ रहती है और जो मनूशा हमारी यह है कि इस महासभाके फायदोंको देशदेशके मनुष्य अछी तरह जान कर अपने अपने मुल्कमें इसके साथ हमदर्दी पैदा करें वह हमारा इरादा और बिचार इस तरहपर तीर्थ भूमि पर महासभाका जल्सा करनेसे शीघ्र पार पड़ सकता है- श्रीपालीताणामें अपना परम पवित्र तीर्थ श्री सिद्ध क्षेत्र है वहां पर सैंकडों हजारों यात्री नानादेशके आते हैं और समझदार दौलतमंद, आगेवान गृहस्थ भी बहुतसे आते हैं पस वहांपर अपनी दूसरे कानफरेन्सके भरनेसे बहुत लाभ होगा इसलिये मेरी यह दरख्वास्त है कि दूसरी कान्फरेन्स पालीताणामें भराई जावे.

इस दरख्वास्तकी ताईद मिस्टर मोतीलाल कुशलचंद शा. अहमदावाद निवासीने की और इस्व दरख्वास्त शेठ कुंवरजी आणंदजीने इस वात पर जोर दिया कि कान्फरेन्सका काम शुरू होना ही मुश्किल था कि जिसको यहां श्रीफलोधी तीर्थपर शुरू कर दिया गया है अब इसका काम वहुत अछी तरंह चल सकता है और इस कान्फरेन्सके लिये हमदरदी पैदा करनेके लिये दूसरी कान्फरेन्स श्रीपालीताणामे नराना अछा साधन है

इस दरख्वास्तकी मिस्टर नगुनाई फतहचंद कारनारी अहमदावाद निवासीने अनुमोदना करते हुए जाहिर किया कि हम गुजरात काठियावाडके जैन आप लोगोकी सेवामें हरवक्त हाजिर रहेंगें कोई कोताई न करेंगे दूसरी कान्फरेन्स श्रीपालीताणामें नराई जावे—

सव सनाका मत लेकर प्रेसीडेन्टसाहवने इस ठहरावको पास किया—

ठहराव तेरहवां.

“इस जैनवर्गके सम्पूर्ण हितकारक कार्यके लिये पूरा प्रयास करनेवाली “श्रीफलोधी तीर्थोन्नति सना” का और उसमे नी मुख्यपनेसे गुलावचंदजी ढढाका यह सना उपकार मानती है”—

इस दरख्वास्तको पेश करते हुए महुआवाले प्रोफेसर नथुनाई मंछाचंदने जाहिर किया कि जो प्राणीमात्र इस संसारमे न्रमण करते है वे अपनी अपनी जीविका चलाते हैं सवको अपना अपना लोन लालच सूफ रहा है— फायदेकी सूरत देख कर सुख संतोपको छोडकर दुःख सहन करनेपर मनुष्य कटिवद्ध होता है अपने जाती फायदेके वास्ते मनुष्य अनाचार दुराचार कर वैठते हे— परन्तु फलप्राप्ति इतनी ही होती है कि जितनी कर्ममें लिखीहुई है उससे ज्यादा कमी नही हो सकती है तो नी मनुष्यकी हाय पिछला खत्म नहीं होती है— हमने अपनी आंखोंसे देखा है कि कई आदमी अछा और सुकृतका काम करनेमे पस्त हिम्मत हो जाते हैं और जरूर कुछ न कुछ वहाना निकाल लेते हैं और जव किसी काममें दो पैसेकी प्राप्ति देखते हैं तो सो सो जरूरी कामोंको छोडकर दुःख सहन करके नी सैकड़ों हजारों कोस पहुंच जाते हे— परन्तु हाय अफसोस धर्मके कामोंके लिये तो

शेठजी साहवको घोर निद्रा आ जाती है अगर अपने वुजुर्ग ऐसे ही होते तो लाखों किरोडों रुपयोंकी लागतके आलीशान मंदिर जो इसवक्त जैनधर्मकी जाहोजलालीको प्रकट कर रहे हैं हरगिज दे-खनेमें नही आते परन्तु हम अगचें पुत्र उनहीं के हैं– तोजी हमारे और उनके अंदर बहुत फर्क पड़ गया है वे धर्म कार्यमें चुस्त थे हम पाप कर्ममें चुस्त हैं– ऐसी चारों तरफकी सहोवतको गेड़कर इस "श्री फलोधीतीर्थोन्नतिसजा" ने जो कोशिश की है और हमारी कुल सम्प्र-दायके सुधारेका बीज वोया है, इस कोशिश और मिहनतका आजार यह सजा मानती है और इस "श्रीफलोधीतीर्थोन्नतिसजा" में जी मुख्य-त्व करके मिस्टर गुलावचंदजी ढढाको ज्यादा धन्यवाद देनेकी यों आ-वश्यकता है कि उन्होंने अपने वेशुमारीके जिम्मेवार राज्यकार्यसे जव जब जरूरत समजी तव तववक्त निकालकर अपने पैसेका व्यय करके अ पनी धार्मिक और सांसारिक उन्नतिके लिये देश विदेश फिरकर इस म-हासजाका सामान इकठा किया–इस समय धर्मकार्यमें इस तरंह कमर बांधनेवाले कम नजर आते हैं इसलिये इस फलोधी सजाका और मिष्टर गुलावचंदजी ढह्वाका जितना उपकार माना जावे उतना ही थोरा है (हर्षकी तालियां!) मैं उम्मेद करताहूं कि आप सव साहव मेरेसाथ एकमत होकर इनको वधालेवेंगे और प्रार्थना करेंगे कि जि-स तरंहसे धर्मकार्यमें इन्होंने अवतक प्रवीणता दिखलाई है वैसीही हमेशा नीरोगताके साथ दिखलाकर अपनी जाति और धर्मकी उन्नति क-रते रहेंगे–

इस दरख्वास्तकी ताईदमें अहमदावाद निवासी शा. मोतीलाल कु-शलचंदने जाहिर किया कि मेरी मुलाकात मिष्टर ढह्वासे पहले ही पहल अहमदावादमें हुई थी कि जव चैत्र मासमें इन्होंने नगरशे-ठके बंगलेमें जाषण दिया था इनके जाषणको सुनकर और इनके अ-जिप्रायोंको देखकर मुझे वडा जारी संतोष पैदा हुआ था कि जिन जिन खयालोंको मैं अपने दिलमें घरू रहा था और उनको प्रकट क-रना मुश्किल समझता था वे वे खयालात इन महाशयोंने प्रकट क-

रके एकदम इस महासभाको इकठी करी- इसलिये हम जितना उपकार इनका मानें वह ही कम है-

इस दरख्वास्तकी अनुमोदना करते हुए मिष्टर अमरचंद पीपरमारने जाहिर किया कि मुझे ज्यादातर खुशी इस वातकी है कि यह सर्वोपकारी कार्य मरुधरभूमिसे शुरू हुआ है-

और एक मारवाडीके प्रयाससे यह सब कार्रवाई हुई है इसलिये हम सब लोगोको इस "श्रीफलोधी तीर्थोन्नति सभाका ' और मिष्टर गुलाबचदजी ढढ्ढाका आभार मानना चाहिये-

सारी सभाका एकमत होनेसे प्रेसीडेन्ट साहबने इस रिज्योल्यूशनको पास कियाः-

ठहराव चोदहवां.

"अपने अपने अमूल्य समयको खोकर जो जो जैनवर्गके आगेवान सद्गृहस्थ यहां पधारे हैं उनका आभार माना जावे"

इस दरख्वास्तको पेश करते हुए जयपुरवाले गुलाबचंदजी ढढ्ढाने प्रकट किया कि मैं इस सभाका आभार मानता हूं कि इस रिजोल्यूशनके पेश करनेकी इज्जत मुझे वक्षी गईहै-मेरे चित्तकी आल्हादवृत्ति मै ही जानताहू उसको प्रकट करनेको असमर्थ हू "श्रीफलोधी तीर्थोन्नतिसभा" के जनरल सेक्रेटरीकी हैसियतमे मैने अपने गुजरात काठियावाड़ निवासी भाइयोंको रोवरू जगह वजगह मिलकर और पूर्व पजाव राजपूताना मालवाके भाइयोंसे पत्रव्यवहार करके इस जैनमहासभाकी प्रार्थना की और वह प्रार्थना आप साहवान हाजरीन जलसाने कृपाकरके सफल की और अपने धर्म और जात्युन्नतिके लिये अपने अमूल्य समयको इस तर्फ लगाया इसलिये आप सब साहबानका इस कार्यके लिये आभार माना जाता है

अजमेर निवासी कांसटिया धनराजजीने इस दरख्वास्तकी ताईद करते हुवे जाहिर किया कि हमलोगों पर जो आपसाहवानने कृपा की है उसका तो हम आभार मानते है और हमारी तर्फसे जो कुछ कमी वेशी देखनेमें आई हो उसकी माफी चाहते हैं.

सब सभाकी संमत्यनुसार प्रेसीडेन्ट साहबने इस रिजोल्यूशनको पास किया.-

ठहराव पन्द्रहवा.

"इस कान्फरेन्सके प्रमुख तरीके शेठजी वखतावरमलजी महताने वहुत संतोषकारक काम किया है इस लिये उन साहवोंका आजार माना जावे"

इस दरख्वास्तको पेश करते हुवे वम्वई निवासी शेठ दीपचंद माणकचंदने वहुत खुशी प्रकट करके जाहिर किया कि इस कान्फरेन्सकी कुल कार्रवाई निर्विघ्नतापूर्वक और आपसके इत्तिफाकसे समाप्त हुई और अपने विख्यात प्रमुख महता वखतावरमलजीने इसमें वहुत परिश्रम करके और कोशिशके साथ काम किया इसलिये कुल हाजरीन जल्सा इस संतोषकारक कार्रवाईके लिये महता वखतावरमलजीका आजार मानते हैं

इसकी ताईदमें जावनगरवाले शेठ कुंवरजी आणंदजीने प्रकट किया कि वाकई जो कार्रवाई महता वखतावरमलजीने की है संतोषकारक है और उनकी अथाग मिहनत और श्रमसे हमारी यह कान्फरेन्स निर्विघ्नतासे अपनी इछित कार्रवाईको कर सकी इसलिये उन साहवोंका आजार माना जावे—

वम्वई निवासी मिष्टर साकरचंद माणकचंद धमीयालीने इसकी अनुमोदना की इसके वाद सजाके एकमतसे यह दरख्वास्त पास हुई—

जव सव ठहराव पास हो चुके और जैन समुदायकी वहतरी तथा उन्नतिकी नीव पुख्ता जम गई तव प्रमुखसाहवने सजासदोंकी हर्षगर्जनाके साथ इस प्रथम कान्फरेंसको विसर्जन करके सव सजासदोंसे प्रार्थना की कि आप सव साहव आयंदा हमेशह यह कोशिश करते रहैं कि इस कान्फरेंसकी ज्योति प्रतिदिन सवाई वढ़ती रहैः—

ओसवालवंशोत्पत्तिपत्रम्.

सम्वत् १९४६ की सालमें कृष्णगढ नगरमें श्रीमान् महाराजाधिराज श्रीशार्दूलसिंहजी वालीय रियासत की राजसभामें ओसवालोंकी उत्पत्ति पर कई तरहके विचार चलनेपर श्रीमान्के हुक्मसे पुज्यश्री १०८ युत न्यायांभोनिधि तपगच्छाचार्य श्रीमद्विजयानंदजी (आत्मारामजी) महाराजसे कि जो उस वक्त जोधपुर चतुर्मास रहे हुएथे, विनयपूर्वक दरयाफ्त किया गया तो आषाढ सुदि ९ सम्वत् १९४६ के पत्रके साथ आचार्य महाराजने कृपाकरके ओस वालोंकी उत्पत्ति का हाल लिखा जिससे उस वक्त श्रीदरबार कृष्णगढमे मालुम करके जो जो शकूक ओसवालोंकी उत्पत्तिके पैदा होतेथे उनको निवारण किये उसीको इस रिपोर्टके साथ इस वास्ते लगाया जाताहै कि जिस वंशकी यह कान्फरेन्स है उसकी उत्पत्तिका वृत्तांत भी इसके साथ हमेशाके वास्ते लगा रहै तो पाठकगणोको उपयोगी हो–

गुरुमहाराजके पत्रमें इस मुवाफिक लेख है.–

" ओसवाल लोगोकी उत्पत्ति नीचे मुजब संक्षेपसे लिखते है सो समझलेना"–

१ श्रीभिन्नमाल नगरका राजा श्रीपुंज था उसके दो मंत्री हुए:– (१) सा उहड़ (२) सा उधरन इन दोनों मंत्रियोको श्रीविक्रमादित्यसे ४०० (चारसो) वर्ष पहले श्रीरत्नप्रभसूरीजीने प्रतिबोध कर के इनके वंशमें से अठारह (१८) गोत्र ओसवालोंके स्थापन किये उनका नाम नीचे मुजब है–

(१)	तातहड़ गोत्र	(२)	बापणा गोत्र.
(३)	कर्णाट गोत्र	(४)	बलहरा गोत्र
(५)	मोराक्ष गोत्र	(६)	कूलहट गोत्र
(७)	विरहट गोत्र	(८)	श्रीश्रीमाल गोत्र

(ए)	श्रेष्टि गोत्र	(१०)	सुचेंती गोत्र
(११)	आइचणांग गोत्र	(१२)	भूरि गोत्र (भटेवरा)
(१३)	भाद्र गोत्र	(१४)	चीवट गोत्र
(१५)	कुंभट गोत्र	(१६)	डिंडू गोत्र
(१७)	कनोज गोत्र	(१७)	लघुश्रेष्टि गोत्र

२. लखीजंगल नगरमें रत्नप्रभसूरीजीने दस हजार (१०,०००) घर रजपूतोंके प्रतिबोध करके जैनी किए और उनको उंसवाल पदपर स्थापन किए उनके सुघड़ादि अनेक गोत्र स्थापन किए–

३. श्रीविक्रमादित्य सम्वत् ५७० (पांचसो अठहतर) में श्रीरत्नपुर नगरका वासी जातिका चोहान रजपूत तिसकी २४ (चोवीस) खांपें नीचे मुजव हैं–

(१)	हाड़ा	(२)	देवडा	(३)	सोनगरा
(४)	मालडीचा	(५)	कूदणेचा	(६)	वेड़ा
(७)	वालोत	(७)	चीवा	(ए)	काच
(१०)	खीची	(११)	विहल	(१२)	सेंभटा
(१३)	मेलवाल	(१४)	वालीचा	(१५)	माल्हण
(१६)	पावेचा	(१७)	कांवलेचा	(१७)	रापडीया
(१ए)	कुदणेच	(२०)	नाहरा	(२१)	ईवरा
(२२)	राकसीया	(२३)	वाघेटा	(२४)	साचोरा

इन चोबीस खांपोंको प्रतिबोध करके उंसवाल स्थापन किये उनकी ए (नव) शाखा हुई वहनीचे मुजव हैं–

(१)	रत्नपुरा	(२)	बालाही	(३)	कटारिया
(४)	कोरेचा	(५)	सापड्हा	(६)	सामरिया
(७)	नराणगोत्रा	(७)	भलाणीया	(ए)	रामसेण्या

४. विक्रम सम्बत् ७०१ (सातसो एक) में श्रीरविप्रभसूरीजीने ख-खोटीया महेश्वरी लाखणसीको प्रतिबोध करके तिसके पुत्रके नामसे उंसवाल वंश और लोटा गोत्र स्थापन किया–

५. विक्रम सम्वत् ७३२ (सातसो वत्तीस) मे जैनाचार्यने अजमेरके राजा चावा नामक, चोहानगोत्रका को प्रतिवोध करके तिसके पुत्रके नामसे उंसवाल वंश और लोढ़ा गोत्र स्थापन किया—

६ विक्रम सम्वत् ७३२ (सातसोवत्तीस) में जैनाचार्यने जातिके चोहान रजपूतोंको प्रतिवोध करके उंसवाल वंश और वाफणा गोत्र स्थापन किया तिसकी तेवीस शाखा नीचे मुजव हैं—

(१)	जोटा	(२)	पोरवार	(३)	वाभू
(४)	सोनी	(५)	भरोटी	(६)	समूलीया
(७)	धांधल	(८)	दसोरा	(९)	वूआता
(१०)	नाहटा	(११)	कलसेहीया	(१२)	वसाह
(१३)	धतूरीया	(१४)	साहलीया	(१५)	मुंगरवाल
(१६)	मकलवाल	(१७)	संवूआता	(१८)	नाहउसरा
(१९)	कटेचा	(२०)	महाजनीया	(२१)	मुंगरेचा
(२२)	हूडीया—				

और तेवीसवीं एक शाखा पुस्तकमें नहीं होनेसे नहीं लिखी और इन तेवीस में से चार (४) शाखा फिर निकली तिनके नाम

(१) जांगडा (२) मगदीया (३) कुटेवा (४) कुचेलीया—

---

७ विक्रम सम्वत् १०२६ (एक हजार छवीस) में श्रीवर्द्धमान सूरीजीने सोनीगरा चोहानको प्रतिवोध करके तिसका सचेती गोत्र स्थापन किया—

---

८. विक्रम सम्वत् १०९१ (एक हजार इकाणवे) मे श्रीलोद्रवापुर पट्टण में यादवकुलके भाटी गोत्रका सागर नामा रावल राज करताथा उसके दो पुत्र—एक श्रीधर, और दूसरे राजधरथे इन दोनोको प्रतिवोध करके श्री जिनेश्वर सूरीजीने उंसवाल वंश और भणशाली गोत्र स्थापन किया—

---

९. विक्रम सम्वत् ११९२ (एक हजार एकसो बारा) में मंडोरके राजा धवलचन्दको श्रीजिनवल्लभसूरीजीने प्रतिबोध करके ओसवाल वंश और कुकुड़चोपडा गोत्र स्थापन किया.

---

१०. विक्रम सम्वत् ११९७ (एक हजार एकसो सतरा) में सोनीगरा नगरका राजा जातिका चोहान सगर नामा था तिसके बेटे बोहित्थकुमारको जिनदत्तसूरीजीने प्रतिबोध करके ओसवाल वंश और बोहित्थरा गोत्र स्थापन किया.

---

११. विक्रम सम्बत् ११९७ (एक हजार एकसो सतरह) में जातिके राठोड़ रजपूत तिनको श्रीजिनदत्तसूरीजीने प्रतिबोध करके ओसवाल वंश और अठारह गोत्र स्थापन किये तिनके नाम यह हैं.

१.	सांउसुखा.	२.	पेतिसा.	३.	पारख
४.	चोरवेड़ीया.	५.	बुच्चा.	६.	चम्म
७.	नाबरीया.	८.	गद्दहीया.	९.	फाकरीया
१०.	कुंभटीया.	११.	सीयाल	१२.	सचोबा
१३.	सांहिल.	१४	घंटेलीया.	१५.	काकडा
१६.	सींघड़ा	१७	संखवालेचा.	१८.	कुरकुचीया.

नोट. इन ऊपर के लिखे हुए गोत्रोंको गोलवछ गोत्रके भेद समझना—

---

१२. विक्रम सम्बत् ११९२ (एक हजार एकसो बाणवें) में मुलतान नगरके वासी धींगडमल्ल महेश्वरी बाणियाके पुत्र लूनाको श्रीजिनदत्तसूरीजीने प्रतिबोध करके ओसवाल वंश और लूनिया गोत्र स्थापन किया

---

१३ विक्रम सम्बत् १३१४ (एक हजार तीनसो चवदह) में श्रीसिंधकाराजा गोसलनामा जातिका भाटी तिसके परिवारके १५०० (पंदरहसो) घरोंको श्रीजिनचंद्रसूरीजीने प्रतिबोध करके ओसवाल वंश और आघरिया गोत्र स्थापन किया.

---

१४. जातिका देवडा चोहान जाल्वोरका राजा सामंतसिंहके १२ (बारह) बेटेंमेंसे छोटे पुत्र बच्छाके नामसे ओसवाल वंश और बछावत गोत्र स्थापन किया—

---

१५ सपादलक्षदेश और कुंनारीनगरीका यादववंशी उरधर नाम राजाको श्रीपद्मप्रनसूरीजीने प्रतिवोध करके उंसवालवंश और जम्भिया गोत्र स्थापन किया–

---

१६ पीपाट नगरका गहलोधवंशी कर्मसिंहराजाको श्रीजयशेखर सूरीजीने प्रतिवोध करके उंसवालवंश और पीपाम्भा गोत्र स्थापन किया–

इत्यादिक अनेक गोत्रके नेदसे उंसवालोंकी उत्पत्ति समझनी और विशेषलिखनेका यह है कि फकत रजपूत और महेश्वरी वाणिया और ब्राह्मणसे अर्थात् इन तीन ही जातिसे उंसवाल बने है और लोक नीच जातिसे उंसवाल बने ऐसा कहते हैं सो झूंठ है–

और इसमे वलाई गोत्र और चंडालिया गोत्र और वंनी गोत्र इत्यादिक गोत्रके नेद हैं सो कोई नीच जातिसे इनका नाम नहीं पडा है केवल इन लोकों का इन नीच जातियों के साथ वेपार (रोजगार) करने करके लोगोंने वैसा वैसा नाम देदिया है

और इन तीनों ही वर्णमेंसे एक श्रीजिनदत्तसूरीजीने ही सवालक्ष घर ओसवाल पदमें स्थापन किये हैं–

और आचार्य महाराजका सामान्य विचार ऊपर लिखकर जनाया है–

नकल चिठीकी–

श्रीकिशनगढ महाशुनस्थाने श्रावक पुन्यप्रनावक सागरचंद लखमी चंद तथा गुलावचद लानचद योग्य जोधपुरसे वड़े महाराज श्रीपुज्याचार्य श्रीमदानंद सूरीजी महाराज की तरफसे धर्मलान वांचसो और यहां सव मुनि महाराज सुख सातामे वर्ते हैं. आपका पत्र आया वांचके वहोत ही आनंद हुआ है विशेष लखवानुं आपने मंगाया प्रश्न शास्त्रको तपास कर तिसका थोड़ासा तरजुमा अर्थात् नकल दाखल नेजा है शुन मिती सम्वत् १९४५ आपाढ सुदि ए–लि. मुनि अमरविजयका धर्मलान वांचसो–

ढड्ढा वंशोत्पत्तिः—विक्रम सम्वत् ४७७ में गोड़वाड़देश नाणावेड़ा नगर भट्टारक श्रीधनेश्वरसूरीजीनें श्रीशत्रुंजय रास करते हुये पाटण के सोलंखी राजा गोविंदचंदको प्रतिबोध कर जाति ओसवाल श्रीपति गोत्र स्थापन किया गोविंदचंदजीसे इग्यारवें पाट फाफणसीजी हुए जिन्होंने संघ कढाकर श्रीशत्रुंजय यात्रा की फाफणसीजीसे वीसवीं पीढ़ीमें विमलसीजी हुए उन्होंने नाडोल, फरड़, फलोधी, नागोर, वाड़मेर, अजमेर जिनमंदिर करा कर प्रतिष्ठा कराई सम्वत् १००१ में शेठ भांडाजीने जैसलमेर, सिरूपुर पट्टन, जालोर, भिन्नमालमें शास्त्र संग्रह कराके पुस्तक भंडार करा

शेठ भांडाजीके पुत्र धर्म्मसीजीने "शाह" पद हांसिल किया. शत्रुंजय, गिरनार, आबु, बनारस आदि प्रसाद कराये संघमाल पहनकर सम्मेद शिखर की यात्रा की शत्रुंजय, गिरनार, तारंगा, वगैरहपर सोनाके कलश चढ़ाये, चोरासी यात्रा की, संघ हस्ते पेटीभर महोरों की बांटी, घरप्रति लेण बांटी मोतियों की माल, सोनहरी कल्पसूत्र दिए, पृथ्वी परिक्र्मादी, तीन करोड़ महोर खर्च कर भंडार स्थापित की और बहोतसे कमठाणे बणाये.

सम्बत् १२५६ में अम्बिका देवीने प्रसन्न होकर आम्बाके वृक्षके नीचे खजाना बतलाया धर्मसीजीसे नवमी पीढ़ीमें कुमारपालजी हुए उन्होंने सिरूपुर पट्टन छोड़कर सिंध देशमें वास किया श्री शांतिनाथ प्रसाद कराया—

कुमारपालजीसे तीसरी पीढ़ी बाढजी हुए वे झीलमें राते माते थे सो सम्बत् १६१५ की सालमें सिन्ध देशकी भाषामें ढड्ढा कहलाये उसवक्त से ढड्ढा नख प्रचलित हुआ.

बाढजीसे चोथी पीढी सच्यावदासजी हुए उनके पुत्र सारंगजीसे सारंगाणी ढड्ढा कहलाये और फलोधीमें बास किया—

सारंगदेजीके रुघनाथमलजी और नेतसीजी दो पुत्र हुए नेतसीजीके खेतसीजी आदि चार पुत्र हुए खेतसीजीके रतनसीजी, तिलोकसीजी, विमलसीजी, करमसीजी चार पुत्र हुए.

तिलोकसीजीने हुल्करको मदद दी और जो द्रव्य उसको लड़ाईमें फतहमंद होने पर मिला उसका चतुर्थांश तिलोकसीजीको दिया, पुन्योदयसे करोड़पति हुए तिलोकसीजीकी ओलाद नीचे मुजब है—

नोट —तिलोकसीजीकी ओलाद में चारो बेटोके और बहुतसी ओलाद हैं परन्तु यहा पर दर्ज नहीं की है—